अल जिहादुल अक्बर

शैख़ुल इस्लाम अद्दक्तुर मुहम्मद ताहिरुल क़ादिरी

हिन्दी ट्रान्सलिटरेटर

दीवान मॉहसिन शाह

مولاي صل وسلم دائما أبدا

على حبيبك خير الخلق كلهم

محمد سيد الكونين والثقلين

والفريقين من عرب ومن عجم

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى آله وصحبه وبارك وسلم

फ़ेहरिस

﴾जिहाद बिल इल्म﴿

पेश लफ़्ज़

दाख़िली और ख़ारिजी मुह़ाज़ पर दीने इस्लाम के ख़िलाफ़ होने वाली साज़िशों का इदराक फ़क़त़ वोही शख़्स कर सकता है जिस ने न सिर्फ़ मशरिक़ी और मग़रिबी ज़ेहनिय्यत का अ़मीक़ मुत़ालेआ़ किया हो बल्कि वोह मशरिक़ व मग़रिब के अफ़्कार के माबैन मज्मउ़ल बह़रैन भी हो। मुआ़सिर ला यन्ह़ल मसाइल की गुत्थी फ़क़त़ वोही मर्दे ह़क़ शिनास सुल्झा सकता है जिसे फ़ित़रत ने ह़िक्मत व दानिश की सूरत में ख़ैरे कषीर अ़त़ा की हो।

येह क़ानूने फ़ित़रत है कि जिस दौर में भी दीने की हैअते अस्लिय्या में तग़य्युर व तबद्दुल की कोशिश की गई या दीनी इस्त़ेलाह़ात व तसव्वुरात को मस्ख़ करने की साज़िश की गई तो अल्लाह سُبۡحَانَهٗ وَتَعَالٰی उस दौर में ऐसी नाबेग़ए रोज़गार और अ़ब्क़री हस्ती को पैदा फ़रमा देता है जो लौमते लाइम से मा वरा हो कर दीन की तज्दीद व तत़्हीर का फ़रीज़ा सर अन्जाम देती है। ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने ऐसे ही वारिषीने अम्बिया के बारे में इरशाद फ़रमाया:

إِنَّ اللّٰهَ يَبۡعَثُ لِهٰذِهِ الۡأُمَّةِ عَلٰى رَأۡسِ كُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَنۡ يُجَدِّدُ لَهَا دِينَهَا۔

(سنن ابی داود)

अल्लाह तआ़ला इस उम्मत के लिये हर सदी के आग़ाज़ में किसी ऐसे शख़्स (या अश्ख़ास) को मब्ऊ़ष फ़रमाएगा को इस (उम्मत) के लिये उस के दीन की तज्दीद करेगा।

दानिशे अ़स्र शैख़ुल इस्लाम डॉक्टर मुह़म्मद त़ाहिरुल क़ादिरी का शुमार उन्ही दानाा व बीना और मदब्बिर व ह़कीम हस्तियों में होता है जो रिवायती फ़िक्र की रौ में बॅहने की बजाए हमेशा तज्दीदे दीन का फ़रीज़ा सर अन्जाम देते हैं। ह़ज़रत शैख़ुल इस्लाम मद्द ज़िल्लुहुल आ़ली की ज़ेरे नज़र

तस्नीफ़ भी एक ऐसी ही इज्तेहादी काविश है जो तसव्वुरे जिहाद के ह़वाले से दीने इस्लाम के मुनव्वर व ताबाँ चेहरे पर पड़े हुवे तश्कीक व इब्हाम के दबीज़ पर्दों को मुन्कशिफ़ कर देगी। इस तस्नीफ़े लत़ीफ़ में उन्हों ने इस अम्र को अलम नशरह़ किया है कि जिहाद मॅह़ज़ जंग या दुश्मन के साथ मह़ाज़ आराई का नाम नहीं बल्कि इस्लाम ने तसव्वुरे जिहाद को बड़ी वुस्अ़त और जामिइय्यत अ़त़ा की है। इन्फ़ेरादी सत़्ह़ से ले कर इज्तेमाई और क़ौमी से ले कर बैनुल अक़्वामी सत़्ह़ तक अम्न व सलामती, तरवीज़ व इक़ामते ह़क़ और रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल के लिये मोमिन का अपनी तमाम तर जानी, माली, जिस्मानी, लिसानी और ज़ेहनी व तख़्लीक़ी सलाह़िय्यतें सर्फ़ कर देना जिहाद कॅहलाता है।

जिहाद की पाँच अक़्साम में से येह किताब सिर्फ़ 'जिहाद बिन्नफ़्स' या'नी 'जिहादे अक्बर' के मौज़ूअ़ पर है। 'जिहाद बिन्नफ़्स' की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत के पेशे नज़र क़ुरआन ह़कीम में इसे 'जिहादे अक्बर' (सूरतुल फ़ुरक़ान, 25: 52) और अह़ादीषे मुबारका में اَلْجِهَادُ الْاَكْبَرُ से मौसूम किया गया है। ('जिहादे अस्ग़र' या 'जिहाद बिस्सैफ़' या'नी 'जिहाद बिल क़िताल' की तफ़्सीलात इस मौज़ूअ़ पर ह़ज़रत शैख़ुल इस्लाम की अलग ज़ख़ीम किताब में दर्ज की गई हैं।)

ज़ेरे नज़र किताब के पॅहले बाब में जिहाद के लुग़वी व शरई़ मफ़ाहीम को बित्तफ़्सील बयान करने के बा'द दूसरे बाब में जिहादे अक्बर की मुख़्तलिफ़ आक़्साम अइम्मा व सलफ़े सालेह़ीन की कुतुब से बयान की गई हैं। तीसरे से नवें बाब तक जिहादे अक्बर की मुख़्तलिफ़ अक़्साम व जुज़्इय्यात को आयाते बय्यिनात, अह़ादीषे मुबारका और अइम्मा व मुह़द्दिषीन के अक़्वाल व आरा की रौशनी में बयान किया गया है। इस में हर बाब या उस के ज़ैल में आने वाली आयात की तरक़ीम (numbering) अलग अलग रखी गई है, लेकिन अह़ादीष व आषार और अक़्वाल की तरक़ीम दो

त़रह़ से दी गई है। पॅहली तरक़ीम मुसलसल है जो तीसरे से नवें बाब तक तवातुर से चलती है। इस तरक़ीम में अह़ादीषुल बाब के साथ उस के ज़ैल में आने वाली तमाम अह़ादीष को भी शामिल किया गया है और तसलसुल के लिये dash '-' की अ़लामत इस्ते'माल की गई है। किसी ह़दीषुल बाब की कोई भी ज़ैली ह़दीष न हो तो सिर्फ़ उसी ह़दीषुल बाब का नम्बर देने पर इक्तेफ़ा किया गया है। ह़दीषुल बाब की तरक़ीम में slash या'नी '/' के बा'द मुतअ़ल्लिक़ा बाब की ह़दीष का अलग नम्बर दिया गया है या'नी हर बाब की अह़ादीष की अलग अलग तरक़ीम भी दर्ज की गई है। इस से क़ारी को मा'लूम होगा कि एक बाब में कितनी अह़ादीषुल बाब हैं।

बारी तआ़ला हमें ह़िक्मत व मसालिह़ को समझने और दीन के अह़कामात पर ह़क़ीक़ी रूह़ के साथ अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ मरह़मत फ़रमाए। (आमीन बिजाहि सय्यिदिल मुरसलीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ)

(मुह़म्मद अफ़ज़ल क़ादिरी)
सीनिअर रिसर्च स्कॉलर
फ़रीदे मिल्लत رَحِمَهُ الله रिसर्च इन्स्टिट्यूट

और तू इस (क़ुरआन की दा'वत और दलाइल) के ज़रीए उन के साथ बड़ा जिहाद कर।

अल बाबुल अव्वल

اَلْجِهَادُ وَمَعْنَاهُ

﴾जिहाद का मा'ना व मफ़हूम﴿

इस्लाम की आफ़ाक़ी और हमा जिहत ता'लीमात का दाइरए कार इन्सानी ज़िन्दगी के इन्फ़िरादी और इज्तिमाई, हर शॉ'बए ह़यात को मुह़ीत़ है। इन ता'लीमात का मक़्सूद एक मुतह़र्रिक, मरबूत़, मॉ'तदिल और पुर अम्न इन्सानी मुआ़शरे का क़ियाम है। इस्लाम ने इज्तिमाई और रियासती सत़्ह़ पर क़ियामे अम्न (establishment of peace), निफ़ाज़े अ़द्ल (enforcement of justice), हुक़ूक़े इन्सानी की बह़ाली (restoration of human rights) और ज़ुल्मो उ़दवान के ख़ातिमे (elimination of violence and aggression) के लिये जिहाद का तसव्वुर अ़त़ा किया है। जिहाद का दर अस्ल इन्फ़ेरादी ज़िन्दगी से ले कर क़ौमी, मिल्ली और बैनुल अक़्वामी ज़िन्दगी की इस्लाह़ के लिये अ़मले पैहम और जॅहदे मुसलसल का नाम है।

बद क़िस्मती से दुन्या के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों में इस्लाम और जिहाद के नाम पर होने वाली इन्तेहा पसन्दाना और दॅहशत गर्दाना कार रवाइयों की वज्ह से आ़लमे इस्लाम और आ़लमे मग़रिब में आज कल तसव्वुरे जिहाद को ग़लत अन्दाज़ में समझा और पेश किया जा रहा है। जिहाद का तसव्वुर ज़ेहन में आते ही ख़ून रेज़ी और जंग व जिदाल का तअष्षुर उभर आता है। बद क़िस्मती से फ़ी ज़माना ज़िहाद के नज़रिय्ये को नज़रिय्यए अम्न और नज़रिय्यए अ़दमे तशद्दुद का मुतज़ाद समझा जाता है। मग़रिबी मीडिया में अब लफ़्ज़े जिहाद को क़त्लो ग़ारतगरी और दॅहशत गर्दी के मुतबादिल के तौर पर इस्ते'माल किया जाता है।

आज कल आ़लमे इस्लाम या ग़ैर इस्लामी दुन्या में से जो भी जिहाद का नाम सुनता है उस के सामने एक ऐसा तसव्वुर उभरता है जिस में निफ़ाज़े इस्लाम और क़ियामे ख़िलाफ़त के नाम पर मुसलमान ग़ैर मुसलमानों को क़त्ल करते हुवे, फ़ित्ना व फ़साद फ़ैलाते हुवे, ख़ून ख़राबा करते हुवे और इन्सानी मुआ़शरों को मुख़्तिलिफ़ त़बक़ात में तक़्सीम करते हुवे नज़र

आते हैं। ह़ालाँकि ह़क़ीक़त में जिहाद एक ऐसे पुर अम्न ता'मीरी, समाजी, अख़्लाक़ी और रूह़ानी जिद्दो ज़ॅहद (peaceful, constructive, social, moral and spiritual struggle) का नाम है जो ह़क़्क़ो सदाक़ात और इन्सानिय्यत की फ़लाह़ के लिये अन्जाम दी जाती है। बुन्यादी त़ौर पर इस जिद्दो जॅहद का जंगी मा'रका आराई और मुसल्लॅह़ टकराओ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है। येह जिद्दो जॅहद उसूली बुन्यादों पर सिर्फ़ ऐसे माह़ौल का तक़ाज़ा करती है जिस में हर शख़्स का ज़मीर, ज़बान और क़लम अपना पैग़ाम दिलों तक पहॉंचाने में आज़ाद हो। मुआ़शरे में अम्न अमान का दौर दौरा हो। इन्सानी हुक़ूक़ मुकम्मल त़ौर पर मॅह़फ़ूज़ हों। ज़ुल्मो इस्तेह़साल और जब्रो इस्तिबदाद की कोई गुन्जाइश न हो और दुन्या के तमाम ममालिक पुर अम्न बक़ाए बाहमी के रिश्ते में मुन्सलिक हों। लेकिन जब अम्न दुश्मन त़ाक़तें इ़ल्मो अ़क़्ल की रॅहनुमाई से मॅह़रूम हो कर मुक़ाबले पर आ जाएँ और इज्तिमाई अम्न व सुकून और नज़्मो नस्क़ के ख़िलाफ़ तबाह कुन साज़िशें और अ़लल ए'लान जंगी तदाबीर करने लगें तो ऐसे वक़्त में जिहाद के मा'ना येह होते हैं कि अम्न व सलामती और इन्सानिय्यत के दुश्मन के ख़िलाफ़ मुसल्लॅह़ जिद्दो जॅहद के जाए ताकि अम्न व आश्ती के माह़ौल को बह़ाल (restoration of peaceful environment) और ख़ैर व फ़लाह़ पर मब्नी मुआ़शरा क़ाइम किया जा सके।

1. जिहाद का लुग़वी मा'ना

लफ़्ज़े जिहाद, جهد से माख़ूज़ है। लफ़्ज़ جهد जीम पर ज़बर के साथ جَهْدٌ और पेश के साथ جُهْدٌ दोनों त़रह़ मुस्त'मल है। येह एक कषीरुल मा'नी लफ़्ज़ है जिस के लुग़वी मा'ना सख़्त मेह़नत व मशक़्क़त (diligent labour & hard work) त़ाक़त व इस्तेत़ाअ़त, कोशिश और जिद्दो ज़ॅहद के हैं। ज़ैल में हम चन्द मश्हूर अइम्मए लुग़त की कुतुब से जिहाद का मफ़्हूम बयान करते हैं:

1. इमाम इब्ने फ़ारिस (मुतवफ़्फ़ा 359 हिजरी) लफ़्ज़े जह्द का मा'ना बयान करते हुवे लिखते हैं:

جَهْدٌ الْجِيْمُ وَالْهَاءُ وَالدَّالُ أَصْلُهُ الْمَشَقَّةُ. ثُمَّ يُحْمَلُ عَلَيْهِ مَا يُقَارِبُهُ۔[1]

लफ़्ज़े जह्द (जीम, हा और दाल) के मा'ना अस्लन मेहनत व मशक़्क़त के हैं, फिर उस का इत्लाक़ इस के क़रीबुल मा'ना अल्फ़ाज़ पर भी किया जाता है।

2. इमाम अबू मन्सूर मुहम्मद बिन अहमद अल अज़्हरी (मुतवफ़्फ़ा 370 हिजरी) मा'रूफ़ लुग़वी इमाम अल्लैष के हवाले से लफ़्ज़े जह्द का मा'ना बयान करते हैं:

وَقَالَ اللَّيْثُ: اَلْجَهْدُ: مَا جَهَدَ الإِنْسَانَ مِنْ مَرَضٍ أَوْ أَمْرٍ شَاقٍّ فَهُوَ مَجْهُوْدٌ. قَالَ: وَالْجُهْدُ لُغَةٌ بِهٰذِهِ الْمَعْنٰى، قَالَ: وَالْجُهْدُ: شَيئٌ قَلِيْلٌ يَعِيْشُ بِهِ الْمُقِلُّ عَلٰى جَهْدِ الْعَيْشِ. قَالَ اللهُ جَلَّ وَعَزَّ: ﴿وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ﴾[2] عَلٰى هٰذَا الْمَعْنٰى.[3]

इमाम लैष कॅहते हैं: جَهْدٌ (जीम की फ़त्ह के साथ) से मुराद वोह शै है जो इन्सान को थका दे, ख़्वाह वोह कोई बीमारी हो कोई दूसरा मशक़्क़त आमेज़ काम। उन्हों ने कहा: लुग़वी तौर पर جُهْدٌ का भी येही मा'ना है। جُهْدٌ का एक मा'ना क़लील शै है जिस पर कोई मुफ़्लिस शख़्स बड़ी मुश्किल के साथ गुज़ारा करता है।

(1) ابن فارس، معجم مقاييس اللغة: ٢١٠
(2) التوبة، ٩: ٧٩
(3) أزهرى، تهذيب اللغة، ٦: ٣٧

इरशादे बारी तआला है: ﴿وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ﴾ 'जो अपनी मेह़नत व मशक़्क़त के सिवा (कुछ ज़ियादा मक़्दूर) नहीं पाते'।

3. इमाम राग़िब अस्फ़हानी (मुतवफ़्फ़ा 502 हिजरी) लफ़्ज़ جهد के मआनी बयान करते हुवे लिखते हैं:

جَهَدَ، الْجَهْدُ، والْجُهْدُ: الطَّاقَةُ وَالْمَشَقَّةُ. وَقِيْلَ: الْجَهْدُ بِالْفَتْحِ الْمَشَقَّةُ، وَالْجُهْدُ: الْوَاسِعُ وَقِيْلَ: الْجُهْدُ لِلْإِنْسَانِ: وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُم﴾.[1] وَقَالَ تَعَالٰى: ﴿وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ﴾[2] أَيْ حَلَفُوْا وَاجْتَهَدُوْا فِي الْحَلْفِ أَنْ يَأْتُوْا بِهِ عَلٰى أَبْلَغَ مَا فِي وُسْعِهِمْ. وَالْاِجْتِهَادُ: أَخْذُ النَّفْسِ بِبَذْلِ الطَّاقَةِ وَتَحَمُّلِ الْمَشَقَّةِ. يُقَالُ: جَهَدْتُ رَأْيِي. وَأَجْهَدْتُهُ: أَتْعَبْتُهُ بِالْفِكْرِ. وَالْجِهَادُ وَالْمُجَاهَدَةُ: اسْتِفْرَاغُ الْوُسْعِ فِي مُدَافَعَةِ الْعَدُوِّ. وَالْجِهَادُ ثَلَاثَةُ أَضْرُبٍ: مُجَاهَدَةُ الْعَدُوِّ الظَّاهِرِ؛ وَمُجَاهَدَةُ الشَّيْطَانِ؛ وَمُجَاهَدَةُ النَّفْسِ. وَتَدْخُلُ ثَلَاثَتُهَا فِي قَوْلِهِ تَعَالٰى: ﴿وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ﴾[3]، ﴿وَجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ﴾[4]، ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ﴾[5]. وَقَالَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ: 'جَاهِدُوْا

(1) التوبة،٩:٧٩
(2) الانعام،٦:١٠٩
(3) الحج،٢٢:٧٨
(4) التوبة:٩:٤١
(5) الأنفال،٨:٧٢

أَهْوَاءَكُمْ كَمَا تُجَاهِدُوْنَ أَعْدَاءَكُمْ'. وَالْمُجَاهَدَةُ تَكُوْنُ بِالْيَدِ وَاللِّسَانِ، قَالَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ: 'جَاهِدُوْا الْكُفَّارَ بِأَيْدِيْكُمْ وَأَلْسِنَتِكُمْ'.(1)

الجَهْدُ، جَهَدَ और اَلْجُهْدُ के मा'ना ताक़त व इस्तेताअत और मेहनत व मशक़्क़त के हैं और येह भी कहा गया है कि जीम पर ज़बर के साथ الجَهد मशक़्क़त के मा'ना में है और الجُهد का मा'ना किसी चीज़ का वसीअ होना है। येह भी कहा जाता है कि الجُهد का इस्ते'माल इन्सानों के लिये ख़ास है। इरशादे बारी तआला है: ﴿وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ﴾ 'जो अपनी मेहनत व मशक़्क़त के सिवा (कुछ ज़ियादा मक़्दूर) नहीं पाते, और फ़रमाया: ﴿وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ﴾ 'वोह बड़े ताकीदी हलफ़ के साथ अल्लाह की क़सम खाते हैं, या'नी वोह हत्तल वस्अ ताकीद के साथ क़सम खाते हैं कि वोह इस क़सम को पूरा करेंगे। इसी तरह इज्तेहाद का मा'ना है: नफ़्स को हिम्मत व ताक़त के सर्फ़ करने और मशक़्क़त को बर्दाश्त करने का पाबन्द बनाया। कहा जाता है: جَهَدْتُ رَأْيِي وَأَجْهَدْتُهُ या'नी 'मैं ने अपनी राए ख़ूब सोच बिचार और ग़ौरो फ़िक्र के बा'द क़ाइम की है'। जिहाद और मुजाहदा का मा'ना है: दुश्मन से मुदाफ़अत करते हुवे अपनी क़ुव्वत व ताक़त और सलाहिय्यत को इस्ते'माल करना। जिहाद की तीन अक़्साम हैं: ज़ाहिरी दुश्मन के ख़िलाफ़ जिहाद, शैतान के ख़िलाफ़ जिहाद और नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद। येह तीनों अक़्साम इस इरशादाते रब्बानी में शामिल हैं: ﴿وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ﴾ 'और अल्लाह (की महब्बत व ताअत) में जहाद करो

(1) راغب أصفهانى، المفردات في غريب القرآن: ١٠١

जैसा कि जिहाद का ह़क़ है', ﴿وَجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ﴾ 'और अपने माल व जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो', ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ﴾ बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने (अल्लाह के लिये) वत़न छोड़ दिये और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया'। हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया है: अपनी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद करो जिस त़रह़ तुम दुश्मन के ख़िलाफ़ जिहाद करते हो। येह जिहाद हाथ से भी होता है और ज़बान से भी, जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया है: कुफ़्फ़ार से हाथ और ज़बान दोनों से जिहाद करो।

4. अ़ल्लामा इब्ने मन्ज़ूर अफ़्रीक़ी (630-711 हिजरी) इमामे लुग़त के ह़वाले से लफ़्ज़े जुह्द का मा'ना बयान करते हैं:

قَالَ الْفَرَّاءُ: اَلْجُهْدُ فِي هَذِهِ الآيَةِ الطَّاقَةُ؛ تَقُوْلُ: هٰذَا جُهْدِي أَيْ طَاقَتِي؛ وَقُرِئَ ﴿وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ﴾[1] وَجَهْدَهُمْ، بِالضَّمِّ وَالْفَتْحِ؛ الْجُهْدُ، بِالضَّمِّ: الطَّاقَةُ وَالْجَهْدُ، بِالْفَتْحِ: مِنْ قَوْلِكَ: إِجْهَدْ جَهْدَكَ فِي هٰذَا الأَمْرِ أَيْ أَبْلُغْ غَايَتَكَ.[2]

फ़र्रा कॅहते हैं: इस आयत में जुह्द से मुराद त़ाक़त व इस्तेत़ाअ़त (strength & capacity) है। जैसा कि आप कॅहते हैं: هٰذَا جُهْدِي 'येह मेरी त़ाक़त व इस्तेत़ाअ़त है'। आयत ﴿وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ﴾ 'जो अपनी मेह़नत व मशक़्क़त के सिवा (कुछ ज़ियादा मक़्दूर)

(1) التوبة، ٩:٧٩

(2) ابن منظور، لسان العرب، ٣:١٣٤

नहीं पाते, लफ़्ज़े جهد जीम पर पेश और ज़बर दोनों ह़रकात के साथ पढ़ा गया है। पेश के साथ جُهد का मा'ना 'त़ाक़त व इस्तेत़ाअ़त' है और ज़बर के साथ इस का मा'ना 'ग़ायत दरजा कोशिश करना' है; जैसा कि आप कॅहते हैं: إِجْهَدْ جَهْدَكَ فِي هٰذَا الأَمْرِ या'नी 'इस मुआ़मले को अपनी इन्तेहाई कोशिश व मेह़नत से अन्जाम तक पहोंचाओ'।

2. जिहाद का शरई मफ़्हूम

शरई इस्त़लाह़ में जिहाद का मा'ना अपनी तमाम तर जिस्मानी, ज़ेहनी, माली और जानी सलाहि़य्यतों को अल्लाह की रिज़ा की ख़ात़िर और भलाई के काम में वक़्फ़ कर देना है। गोया बन्दे का अपनी तमाम तर ज़ाहिरी व बात़िनी सलाहि़य्यतों को आ'ला मक़ासिद के ह़ुसूल के लिये अल्लाह की राह में सर्फ़ करने को जिहाद कहा जाता है। अगर्चे जिहाद का मज़्कूरा मफ़्हूम उस की लुग़वी बॅह़ष में क़द्रे तफ़्सील से दर्ज किया जा चुका है मगर तसव्वुर की वज़ाह़त के लिये इस ह़वाले से चन्द अइम्मा की मज़ीद तसरीह़ात मुलाह़ज़ा हों।

1. इमाम जुरजानी (740-816 हिजरी) के नज़्दीक जिहाद की ता'रीफ़ दरजे ज़ैल है:

هُوَ الدُّعَاءُ إِلَى الدِّيْنِ الْحَقِّ.[1]

जिहाद दीने ह़क़ की त़रफ़ दा'वत देने से इ़बारत है।

(1) جرجانی، کتاب التعریفات:۱۱۲

2. सय्यिद मह़मूद आलूसी अल बग़दादी (मुतवफ़्फ़ा 1270 हिजरी) तफ़्सीर 'रूह़ुल मआ़नी' में लफ़्ज़े जिहाद के ह़वाले से बयान करते हैं:

إِنَّ الْجِهَادَ بَذْلُ الْجُهْدِ فِي دَفْعِ مَا لَا يُرْضٰى.[1]

किसी ना पसन्दीदा और ज़रर रसाँ शै को दूर करने के लिये कोशिश करने का नाम जिहाद है।[2]

3. शैख़ अ़ली अह़मद अल जरजावी अपनी किताब 'ह़िक्मतुत्तशरीइ़ वल फ़लसफ़तुहु (2: 330)' में जिहाद के मफ़्हूम और मक़्सूद को वाज़ेह़ करते हुवे रक़म त़राज़ हैं:

اَلْجِهَادُ فِي الْإِسْلَامِ هُوَ قِتَالُ مَنْ يَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا لِتَقْوِيْضِ دَعَائِمِ الأَمْنِ وَإِقْلَاقِ رَاحَةِ النَّاسِ وَهُمْ اٰمِنُوْنَ فِي دِيَارِهِمْ أَوِ الَّذِيْنَ يُثِيْرُوْنَ الْفِتَنَ مِنْ مَكَامِنِهَا إِمَّا بِإِلْحَادٍ فِي الدِّيْنِ وَخُرُوْجٍ عَنِ الْجَمَاعَةِ وَشَقِّ عَصَا الطَّاعَةِ أَوِ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ إِطْفَاءَ نُوْرِ اللهِ وَيَنَاوُوْنَ الْمُسْلِمِيْنَ الْعَدَاءَ وَيُخْرِجُوْنَهُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ وَيَنْقُضُوْنَ الْعُهُوْدَ وَيَخْفِرُوْنَ بِالذِّمَمِ. فَالْجِهَادُ إِذَنْ هُوَ لِدَفْعِ الْأَذٰى وَالْمَكْرُوْهِ وَرَفْعِ الْمَظَالِمِ وَالذَّوْدِ عَنِ الْمَحَارِمِ.

इस्लाम में जिहाद का मफ़्हूम उन लोगों की सरकोबी करना है जो बिनाए अम्न को तबाह व बरबाद करने, इन्सानों के आराम व

(1) آلوسی، روح المعانی فی تفسیر القرآن العظیم والسبع المثانی، ۱۰: ۱۳۷

(2) **शरई मफ़्हूम की मज़ीद तफ़्सील** अल बाबुष्षानी **में अइम्मा के अक़्वाल व आषार में मुलाह़ज़ा फ़रमाएँ।**

सुकून को ख़त्म करने और अल्लाह की ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी करने की कोशिश करते हैं। ख़ुसूसन उस वक़्त जब लोग अपने घरों में इन्तेहाई पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हों (या'नी Civilians और Non-Combatants)। या उन लोगों के ख़िलाफ़ जिद्दो ज़ॅहद करना जो पोशीदा जगहों और ख़ुफ़्या तरीक़ों से अम्ने आ़लम को तबाह करने के लिये) फ़ित्ना व फ़साद की आग भड़काते हैं, ख़्वाह (येह काविश) किसी को दीन से मुन्ह़रिफ़ करने की सूरत में हो या जमाअ़त से बाग़ी करने और इत़ाअ़त की ज़िन्दगी से रू गर्दानी करने के लिये हो या उन लोगों के ख़िलाफ़ हो जो अल्लाह के नूर को ज़ुल्मो जब्र से) बुझाना चाहते हों और मुसलमानों को जिन्हें वोह अपना दुश्मन क़रार देते हैं (अपने वत़न से निकाल कर) दूर भगाना चाहते हों और उन्हें अपने ही घरों से बे घर करते हों, अ़ॅहद शिकनी करते हों और बाहमी अम्न व सलामती के मुआ़हदात की पासदारी न करते हों। ग़रज़ेकि जिहाद इन्सानिय्यत के लिये अज़िय्यत व तक्लीफ़ देह माह़ौल और ना पसन्दीदा, ज़ालिमाना और जाबिराना निज़ाम को ख़त्म करने और मह़ारिम की ह़िफ़ाज़त करने का नाम है।

मज़्कूरा तफ़्सीलात की रौशनी में लफ़्ज़ जिहाद का मफ़्हूम येह होगा कि किसि भी नेकी और भलाई के काम के लिये जिद्दो ज़ॅहद में अगर इन्तेहाई त़ाक़त और मेह़नत सर्फ़ की जाए और ह़ुसूले मक़्सद के लिये हर क़िस्म की तक्लीफ़ और मशक़्क़त बर्दाश्त की जाए, तो उस कोशिश को जिहाद कहेंगे। जिहाद का मक़्सद न तो माले ग़नीमत समेटना है और न ही इस का मक़्सद मुल्क व सल्त़नत की तौसीअ़ है। तौसीअ़ पसन्दाना अ़ज़ाइम और हवसे मुल्कगीरी (hegemony and expansionism) का कोई तअ़ल्लुक़ इस्लाम के फ़ल्सफ़ए जिहाद से नहीं और न ही दॅहशत गर्दी का जिहाद से कोई दूर का वासित़ा है।

इस्लामी रियासत पुर अम्न शॅहरियों के जान, माल और इ़ज़्ज़त व आबरू की मुह़ाफ़िज़ है। फ़ित्ना व फ़साद, साज़िशों और रेशा दवानियों के ख़ातिमे, सरकशी व बग़ावत की सरकोबी, ज़ुल्मो बरबरिय्यत, दरन्दगी, ना इन्साफ़ी, ना ह़क़ इन्सानी ख़ून रेज़ी, क़त्लो ग़ारतगरी और दॅहशत गर्दी के ख़िलाफ़ रास्त इक़्दाम करना इन्सानी ह़ुक़ूक़ के चार्टर (Charter of Human Rights) के मुत़ाबिक़ न सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि ज़रूरी है ताकि अल्लाह की ज़मीन हर क़िस्म के फ़ित्ना व फ़साद से पाक हो, अम्न बह़ाल हो और क़ियामे अ़द्ल (establishment of justice) के लिये राह हमवार हो जाए। मुआ़शरे को अम्न व आश्ती का गॅहवारा बनाने के लिये जिहाद या'नी क़ियामे अम्न और इक़ामते ह़क़ के लिये जॅहदे मुसलसल और अ़मले पैहम बजा लाना हर मोमिन फ़र फ़र्ज़ है। जिहाद मॅह़ज़ जंग या दुश्मन के साथ मुह़ाज़ आराई का नाम नहीं बल्कि इस्लाम ने तसव्वुरे जिहाद को बड़ी वुस्अ़त और जामिइ़य्यत अ़ता की है। इन्फ़ेरादी सत़्ह़ से ले कर इज्तेमाई सत़्ह़ तक और क़ौमी सत़्ह़ से ले कर बैनुल अक़्वामी सत़्ह़ तक अम्न व सलामती, तरवीज़ व इक़ामते ह़क़ फिर रिज़ाए इलाही के ह़ुसूल के लिये मोमिन का अपनी तमाम तर जानी, माली, जिस्मानी, लिसानी और ज़ेहनी व तख़्लीक़ी सलाहिय्यतें सर्फ़ कर देना जिहाद कॅहलाता है।

अ़रबी लुग़त के मुत़ाबिक़ सर ज़मीने अ़रब में क़ब्ल अज़ इस्लाम दौरे जाहिलिय्यत में जंग के लिये जो तराकीब, मुह़ावरे, अ़लामतें, इस्तेआ़रे और इस्त़ेलाह़ात इस्ते'माल होती थीं, उन सब से बिला शुब्हा वॅह़शियाना त़र्ज़े अ़मल और दॅहशत गर्दी का तअष्षुर उभरता था। अ़स्करी लिटरेचर की इस्लाह़ के लिये इस्लाम ने उन तमाम अल्फ़ाज़ और मुह़ावरों को तर्क कर के इस्लाह़े अह़वाल की जिद्दो ज़ॅहद की त़रह़ दिफ़ाई़ जंग को भी 'जिहाद' का उ़न्वान दिया। या'नी इस्लामी नुक्तए नज़र से **लफ़्ज़े जिहाद का इत़्लाक़ आ'लाा व अरफ़ुअ मक़ासिद के ह़ुसूल, क़ियामे अम्न, फ़ित्ना व फ़साद के ख़ातिमे**

और ज़ुल्म व सितम, जब्रो तशद्दुद और वॅह्शत व बरबरिय्यत को मिटाने के लिये अपनी तमाम तर सलाहि्य्यतें ब रूए कार लाने पर होता है। हक़ीक़ी मुसलमान वोह है जो सारी ज़िन्दगी झूट, मुनाफ़िक़त, दज्ल व फ़रेब और जहालत के ख़ातिमे के लिये इब्लीसी क़ुव्वतों से मसरूफ़े जिहाद रॅहता है। लफ़्ज़े जिहाद के हक़ीक़ी मा'ना से लूट मार, ग़ैज़ो ग़ज़ब फिर क़त्लो ग़ारतगरी की बू तक नहीं आती बल्कि इस का मा'ना पाकीज़ा मक़ासिद के हुसूल की काविशों पर दलालत करता है। एक मुहज़्ज़ब, शाइस्ता, और बलन्द अ़ज़ाइम रखने वाली सुल्ह़ जू और अम्न पसन्द क़ौम की अ़ज़ीम जिद्दो ज़ॅहद के लिये लफ़्ज़े जिहाद से बेहतर कोई दूसरा लफ़्ज़ नहीं हो सकता। जिहाद अपने वसीअ़ तर मआ़नी में वक़्ती या हंगामी अ़मल नहीं बल्कि मॅहद से ले कर लह़द तक मर्दे मोमिन की पूरी ज़िन्दगी पर मुह़ीत़ तसव्वुरे ह़यात है। वोह लम्हा जो एह़तेरामे आदमिय्यत और ख़िदमते इन्सानिय्यत के जज़्बे से ख़ाली है, इस्लाम के लिये क़ाबिले क़ुबूल नहीं और न ही जिहाद के नाम से मौसूम हो सकता है।

3. लफ़्ज़े जिहाद का तर्जमा 'जंग' या 'holy war' करना दुरुस्त नहीं

क़ुरआन व हदीष की रौशनी में लफ़्ज़े जिहाद के मा'ना व मफ़्हूम और उस के इत़्लाक़ात (applications) का जाइज़ा लेने से येह बात वाज़ेह़ हो जाती है कि लफ़्ज़े जिहाद का तर्जमा मॅह़ज़ जंग व जदल और war या holy war करना दुरुस्त नहीं है। लफ़्ज़े जिहाद का इत़्लाक़ मसीह़ी और बा'ज़ मुसलमान मुह़क़्क़िक़ीन ने कुफ़्फ़ार के साथ ख़ुसूमत, लड़ाई या जंग व जदल पर किया है। ह़ालाँकि लड़ाई, क़िताल, ख़ुसूमत़ या जंग के ये मा'ना न तो क़दीम अ़रबी ज़बान में पाए जाते हैं और न उ़लमाए लुग़त के नज़्दीक दुरुस्त हैं और न क़ुरआन में कभी इस मफ़्हूम पर इस का इत़्लाक़ हुवा है। क्यूँकि

अ़रबी लुग़ात में जंग व जदल के लिये ह़र्ब[1] और क़िताल[2] के अल्फ़ाज़ इस्ते'माल किये जाते हैं।

4. लफ़्ज़े जिहाद का ग़लत़ इन्तेबाक़ और अंग्रेज़ी लुग़ात

जिहाद के इस ग़लत़ मफ़्हूम को आ़म करने में अंग्रेज़ी लुग़ात का बॉहत दख़ल है। लफ़्ज़े जिहाद के लुग़वी मा'ना में, उस के इस्तेलाह़ी मफ़्हूम में और क़ुरआन व ह़दीष में कहीं भी इस लफ़्ज़ के अन्दर war या holy war का मा'ना नहीं पाया जाता। तारीख़ी ह़क़ाइक़ अलबत्ता इस अम्र पर शाहिद हैं कि ख़ुद यूरोप के बादशाहों ने अ़वाम के मज़्हबी जज़्बात को इश्तेआ़ल देने और चर्च को जंग में शरीक करने के लिये holy war की इस्तेलाह़ इस्ते'माल करना शुरूअ़ की और बा'द के लिटरेचर में येही मा'ना बग़ैर किसी तॅह़क़ीक़ व तफ़्तीश के जिहाद के तर्जमे के त़ौर पर मुरव्वज हो गया। इस इस्तेलाह़ को इख़्तेराअ़ करने का मक़्सद मसीह़ी मज़्हबी त़बक़ात के जज़्बात को उभार कर उन्हें अल क़ुद्स (येरूशलम) की जंग में शरीक करना था। इस त़रह़ जिहाद एक त़रफ़ ग़ैर मुस्लिम मुफ़क्किरीन और ज़राएए इब्लाग़ ने जिहाद का तर्जमा holy war कर के इस्लामी तसव्वुरे जिहाद को बुरी त़रह़ मजरूह़ किया, वहाँ दूसरी त़रफ़ बा'ज़ दॅहशत गर्द और इन्तेहा पसन्द गुरोहों ने भी लफ़्ज़े जिहाद को अपनी दॅहशत गर्दी और क़त्लो ग़ारतगरी का उ़न्वान बना कर इस्लाम

---

(1) البقرة، ۲:۲۷۹
المائدة، ٥:٦٤
الأنفال، ٨:٥٧
محمد، ٤٧:٤
(2) البقرة، ۲:۲۱۷
النساء، ٤:٧٧
التوبة، ٩:٥

को दुन्या भर में बदनाम करने और इस्लामी ता'लीमात के पुर अम्न चेहरे को मस्ख़ करने में कोई कसर उठा नहीं रखी।

मसीही़ मज़्हब की रू से ज़ुल्म व जोर के ख़िलाफ़ क़ुव्वत व ता़क़त का इस्ते'माल ना जाइज़ था। येही वज्ह है कि कई सदियों तक अक्सर मसीही़ उ़लमा दिफ़ाए शख़्सी के ह़क़ (right of self defence) का भी इन्कार करते रहे। इस सिलसिले में बिल उ़मूम ह़ज़रत ई़सा عليه السلام के मश्हूर वा'ज़ के इस इक़्तेबास का ह़वाला दिया जाता है:

> But I say unto you, That ye resist not evil: but whosoever shall smite thee on thy right cheek, turn to him the other also.[1]
>
> मैं तुम से येह कॅहता हूँ कि शरीर मुक़ाबला न करना बल्कि जो कोई तेरे दाहिने गाल पर त़माँचा मारे दूसरा भी उस की त़रफ़ फेर दे।

चौथी सदी ई़सवी में जब रूमी बादशाह क़ुस्त़न्त़ीन (Constantine) ने ई़साइय्यत क़ुबूल की और मसीहि़य्यत को रूमी सल्त़नत के सरकारी मज़्हब की है़षिय्यत ह़ासिल हो गई तो फ़िर जंग के जवाज़ के लिये एक नए नज़रिय्ये की ज़रूरत मॅहसूस की जाने लगी। जंग के जवाज़ की ज़रूरत इस लिये पेश आई कि येह मुम्किन ही नहीं था कि इतनी बड़ी सल्त़नत के नज़्मो नसक़ और अम्न अमान को ता़क़त के इस्ते'माल के बग़ैर क़ाइम रखा जा सके। इस नज़रिय्ये के तॅह़त क़रार दिया गया कि जो जंग मज़्हबी बुन्यादों पर बुत परस्तों और नए फ़िर्क़ों के ख़िलाफ़ लड़ी जाए वोह

(1) Matthew5:39

मुन्सिफ़ाना जंग होगी। जंग की इस नौइय्यत को क़ुरूने वस्ता में 'मुक़द्दस जंग holy war' का नाम दिया गया।

अक्षर मग़रिबी मुसन्निफ़ीन और हिन्दू नाक़िदीन ने जिहाद को भी मुक़द्दस जंग (holy war)' क़रार दिया है। इस ह़वाले से दरजे ज़ैल कुतुब मुलाह़ज़ा की जा सकती हैं:

1. John Laffin, Holy War: Islam Fights (London, Graffton Books, 1988).
2. Suhas Majumdar, JIHAD: The Islamic Doctrine of Permanent War (New Delhi: The Voice of India, 1994).
3. Karen Armstrong, Holy War: The Crusades and Their Impact on Today's World (New York: Anchor Books, 2001).
4. Reuven Firestone, Jihad: The Origin of Holy War in Islam (New York: Oxford University Press, 1999).

इल्मी दियानत, इन्साफ़ और तॅह़क़ीक़ का तक़ाज़ा है कि येह ग़लत़ मआनी लुग़त की किताबों से निकाल दिये जाएँ। येह इस्लाम की एक अहम इस्त़ेलाह़ और दीनी तसव्वुर के ख़िलाफ़ घिनौनी साज़िश है जिस से ग़लत़ फ़ॅहमी पैदा होती है। क़ुरआन में कहीं भी جُهد جَهد या جهاد में Holy war का कोई तसव्वुर या ख़याल मौजूद नहीं। जिहाद एक सई़ है, एक कोशिश, मेह़नत और मशक़्क़त है जो किसी भी नेक मक़्सद के लिये की जाती है। मक़्सद रूह़ानी भी हो सकता है, मुआ़शरती भी, षक़ाफ़ती या सियासी भी। येह ख़ैरात भी हो सकती है, फ़ुरोग़े ता'लीम की जिद्दो जॅहद भी और येह कोई भी नेक मक़्सद हो सकता है जिस के लिये मेह़नत और मशक़्क़त को जिहाद कहा जाएगा। इस्लाम में लड़ने या जंग करने के लिये क़िताल की इस्त़ेलाह़

इस्ते'माल होती है जिस का मा'ना है 'लड़ना' जबकि जिहाद के मा'ना में लड़ना शामिल ही नहीं है।

5. दॅहशत गर्दों की त़रफ़ से लफ़्ज़े जिहाद का ग़लत़ इत़्लाक़

इन्तेहा पसन्दों और दॅहशत गर्दों ने क़ुरआन व ह़दीष के बा'ज़ अल्फ़ाज़ और इस्त़ेलाह़ात को ग़लत़ त़ौर पर अपना रखा है। वोह क़ुरआन करीम की चन्द आयात और बा'ज़ अह़ादीषे मुबारका को उन के शाने नुज़ूल और वाक़ेआ़ती और तारीख़ी सियाक़ो सिबाक़ से काट कर इन्तेहा पसन्दाना और दॅहशत गर्दाना तशरीह़ व ता'बीर का जामा पॅहना देते हैं। येह लोग जहालत और ख़ुद ग़रज़ी के पेशे नज़र जिहाद, शहादत, ख़िलाफ़त, दारुल ह़र्ब और दारुस्सलाम जैसी इस्त़ेलाह़ात को बे मह़ल इस्ते'माल कर के आ़म मुसलमानों और ख़ुसूसन नौ जवानों (Muslim youth) को गुमराह करते हैं और कॅहते हैं कि येह सब कुछ क़ुरआन व ह़दीष में है। ह़ालाँकि इन्तेहा पसन्दों और दॅहशत गर्दों की त़रफ़ से येह इस्लाम पर बॉहत बड़ा इल्ज़ाम है। उन के इस ख़त़रनाक नज़रिय्ये का क़ुरआन, ह़दीष और इस्लाम की बुन्यादी ता'लीमात के साथ कोई तअ़ल्लुक़ ही नहीं है। हमारे हाँ कई मज़्हबी जमाअ़तों का येह मिज़ाज बन चुका है कि वोह अपने ख़ास सियासी मक़ासिद के ह़ुसूल के लिये इस्लाम, दीन, जिहाद, शहादत, या इस्लामी निज़ाम, निज़ामे मुस्त़फ़ा ﷺ और निज़ामे शरीअ़त जैसी इस्त़ेलाह़ात बे दरेग़ इस्ते'माल करते हैं और सादा लौह मुसलमानों के मज़्हबी जज़्बात से खेलते हैं। इन मज़्हबी सियासी जमाअ़तों के पास अ़वाम को मुतअष्षिर करने के लिये कोई बा क़ाइदा प्रोग्राम नहीं होता। लेहाज़ा वोह क़ुरआन, ह़दीष, इस्लाम और शरीअ़त जैसी इस्त़ेलाह़ात इस्ते'माल कर के अ़वाम के जज़्बात को मुश्तइल करते हैं और अपने ख़ुद साख़्ता मक़ासिद ह़ासिल करने की कोशिश करते हैं। ज़ैल में हम इसी इल्तेबास व इब्हाम को दूर करने के लिये मक्कए मुकर्रमा में

नाज़िल होने वाली आयाते जिहाद के तॅह़त जिहाद के सह़ीह़ मा'ना व मफ़्हूम को वाज़ेह़ करने की कोशिश करेंगे।

6. मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल होने वाली आयाते जिहाद का दुरुस्त मफ़्हूम

जिहाद के इस जामेअ़ और वसीअ़ मफ़्हूम की सब से बड़ी दलील येह है कि क़ुरआने ह़कीम में जिहाद का ह़ुक्म सब से पॅहले शॅहरे मक्का में उस वक़्त नाज़िल हुवा जबकि अभी जिहाद बिस्सैफ़ की इजाज़त भी नहीं मिली थी। सह़ाबए किराम पर जब्र व तशद्दुद के पहाड़ ढाए जाते मगर उन्हें अपने ज़ाती दिफ़ाअ़ के लिये भी हथियार उठाने की इजात नहीं थी। उन्हें उस वक़्त तक सब्र करने की तल्क़ीन की गई जब तक अल्लाह तआ़ला ने उन के लिये हिजरत की सूरत में नजात की सबील पैदा न फ़रमा दी। दिफ़ाई़ जंग की मुमानअ़त के लिये भी मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में सत्तर (70) आयात नाज़िल हुईं। इस के बा वुजूद जिहाद के मुतअ़ल्लिक़ पाँच आयात मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुईं।

इमाम राज़ी (मुतवफ़्फ़ा 406 हिजरी) सूरतुल ह़ज की आयत नम्बर 39 - ﴿أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا﴾ - की तफ़्सीर में बयान करते हैं:

وَهِيَ أَوَّلُ آيَةٍ أُذِنَ فِيهَا بِالْقِتَالِ بَعْدَ مَا نُهِيَ عَنْهُ فِي نَيِّفٍ وَسَبْعِينَ آيَةً.[1]

अम्रे क़िताल के इम्तेनाअ़ में सत्तर (70) से ज़ाइद आयात के नुज़ूल के बा'द येह पॅहली आयत थी जिस में क़िताल की इजाज़त दी गई।

(1) رازی، التفسیر الکبیر، ۳۵:۲۳

वोह लोग जिन्हें इस बारे में फ़िक्री वाज़ेह़िय्यत नहीं और वोह ज़ेहनी उल्झन का शिकार हैं - मुसलमान हों या ग़ैर मुस्लिम, मग़रिबी दुन्या के रॅहने वाले हों या मशरिक़ी ममालिक के - उन सब को समझ लेना चाहिये कि अगर जिहाद का मा'ना क़िताल और मुसल्लॅह़ तसादुम (armed conflict) ही होता तो मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल होने वाली दरजे ज़ैल आयात की क्या तौजीह होगी जिन में सराह़तन 'जिहाद' का हुक्म दिया गया है? येह आयात हिजरत से पॅहले मक्की दौर में नाज़िल हुईं जब अपने दिफ़ाअ़ में भी हथियार उठाने की सख़्ती से मुमानअ़त थी और किसी लड़ाई या मुज़ाह़मत की इजाज़त भी न थी और न उस दौर में मुसलमानों ने अ़मलन कोई जंग लड़ी। अगर जिहाद का मा'ना लड़ना ही होता तो सह़ाबए किराम رضي الله عنهم यक़ीनन हथियार उठाते और अपनी ह़िफ़ाज़त और दिफ़ाअ़ में कुफ़्फ़ार व मुशरिकीने मक्का के ख़िलाफ़ जंग करते। लेकिन उन में से किसी को इस की इजाज़त न थी जब कि जिहाद के लिये पाँच आयात भी नाज़िल हो चुकी थीं।

इस का दुरुस्त जवाब येह है कि क़ुरआन की रू से जिहाद के लिये मुसल्लॅह़ तसादुम और कश्मकश का होना ज़रूरी नहीं है। अगर हर हुक्मे जिहाद के लिये मुसल्लॅह़ तसादुम नागुज़ीर होता तो मक्का में लफ़्ज़े जिहाद पर मुश्तमिल पाँच आयात के नुज़ूल के बा'द ज़ाती दिफ़ाअ़ के लिये मुसल्लॅह़ जंग की इजाज़त मिल चुकी होती ह़ालाँकि ऐसा नहीं हुवा था। इस से येह मा'लूम होता है कि लफ़्ज़ जिहाद के मुसल्लॅह़ लड़ाई के इ़लावा कई और मआ़नी व मफ़ाहीम भी हैं जो कि मक्का में नाज़िल होने वाली दरजे ज़ैल आयात से मुस्तम्बत़ होते हैं:

1. فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝ [1]

---

(1) الفرقان، ٢٥:٥٢

पस ऐ मर्दे मोमिन! तू काफ़िरों का कॅहना न मान और तू इस क़ुरआन की दा'वत और दलाइल के ज़रीए उन के साथ बड़ा जिहाद कर या'नी इ़ल्मी त़ौर पर उन्हें तौह़ीद पर क़ाइल कर)।

इस आयत में बड़े जिहाद से मुराद इ़ल्में फ़िक्र और फ़ुरोग़े शुऊ़र की जिद्दो ज़ॅहद (Jihad for promotion of knowledge and awareness) है।

2. وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ (1)

जो शख़्स राहे ह़क़ में जिद्दो ज़ॅहद करता है वोह अपने ही (नफ़्अ़ के) लिये तगो दौ करता है, बेशक अल्लाह तमाम जहानों की त़ाअ़तों, कोशिशों और मुजाहदों से बे नियाज़ है।

यहाँ पर जिहाद से मुराद अख़्लाक़ी और रूह़ानी तरक़्क़ी (Moral and spiritul uplift) के लिये जिद्दो ज़ॅहद है।

3. وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا. (2)

और अगर वोह तुझ पर (येह) कोशिश करें कि तू मेरे साथ उस चीज़ को शरीक ठॅहराए जिस का तुझे कुछ भी इ़ल्म नहीं तो उन की इत़ाअ़त मत कर।

सूरतुल अ़न्कबूत की इस आयत में जिहाद से मुराद किसी भी क़िस्म की इ़ल्मी, फ़िक्री, नज़रिय्याती या ए'तिक़ादी कोशिश (intellectual or idealogical effort) है।

(1) العنكبوت، ٢٩:٦
(2) العنكبوت، ٢٩:٨

4. وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ط وَاِنَّ اللهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ [1]

और जो लोग हमारे ह़क़ में जिहाद (या'नी मुजाहदा) करते हैं तो हम यक़ीनन उन्हें अपनी त़रफ़ सैर और वुसूल की) राहें दिखा देते हैं, और बेशक अल्लाह साह़िबाने एह़सान को अपनी मइय्यत से नवाज़ता है।

मक्का में नाज़िल होने वाली इस आयते मुबारका में अपनी ज़िन्दगी में अख़्लाक़ी, रूह़ानी और इन्सानी अक़्दार को ज़िन्दा करने और उन्हें मज़ीद तरक़्क़ी व इस्तेह़काम देने की जिद्दो ज़ॅहद को जिहाद का नाम दिया गया है।

5. وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا. [2]

और अगर वोह दोनों तुझ पर इस बात की कोशिश करें (या'नी तेरा ज़ेहन बदलने की काविश करें) कि तू मेरे साथ उस चीज़ को शरीक ठॅहराए जिस (की ह़क़ीक़त) का तुझे कुछ इ़ल्म नहीं है तो उन की इत़ाअ़त न करना।

इस आयत मुक़द्दसा में भी इ़ल्मी, ज़ेहनी, फ़िक्री और ए'तेक़ादी सत़ह़ पर की जाने वाली कोशिश को 'जिहाद' के नाम से बयान किया गया है।

मज़्कूरा बाला पाँचों आयात - जिन में वाज़ेह़ त़ौर पर जिहाद का ज़िक्र या ह़ुक्म आया है - हिजरत से क़ब्ल मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में नाज़िल हुईं, जबकि दिफ़ाई़ क़िताल का ह़ुक्म हिजरते मदीना के बा'द नाज़िल हुवा था। मक्की दौर में इस की इजाज़त ही नहीं थी। मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ह़ुक्मे जिहाद

(1) العنكبوت، ٢٩: ٦٩

(2) لقمان، ٣١: ١٥

के बा वुजूद सहाबा رضی اللہ عنہم को अपने दिफ़ाअ़ में भी अस्लेहा उठाने की इजाज़त नहीं थी। अगर जिहाद का मा'ना मुसल्लॅह जंग या आहनी अस्लेहा के साथ क़िताल ही होता तो मज़्कूरा आयात के नुज़ूल के बा'द हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ وعلی آلہٖ وسلم जिहाद बिस्सैफ़ का हुक्म फ़रमा देते और सहाबए किराम رضی اللہ عنہم मक्का में ही जिहाद बिस्सैफ़ शुरूअ़ कर देते। ह़ालाँकि इस अम्र पर सब का इत्तेफ़ाक़ है कि जिहाद बिल क़िताल की इजाज़त हिजरत के बा'द मदीना में मिली। क्यूँ? इस का सादा सा मत़्लब येह है कि जिहाद का मा'ना क़िताल, जंग या लड़ाई है ही नहीं। हम पॅहले ज़िक्र कर चुके हैं कि इन्तेहा पसन्दों और दॅहशत गर्दों ने अपने मज़्मूम मक़ासिद के हुसूल के लिये क़ुरआन व ह़दीष के बा'ज़ अल्फ़ाज़ और इस्त़ेलाहात को ग़लत़ मा'ना दे रखा है। वोह क़त्लो ग़ारतगरी, दॅहशत गर्दी और अ़स्करिय्यत पसन्दी को ना जाइज़ त़ौर पर जिहाद का नाम देते हैं।

7. जिहाद बिल क़िताल की इजाज़त किस सने हिजरी में मिली?

जिहाद बिल क़िताल की इजाज़त किस सने हिजरी में मिली, इस में मुफ़स्सिरीन का इख़्तेलाफ़ है। मुफ़स्सिरीन का एक त़बक़ा कॅहता है कि दिफ़ाई जिहाद की इजाज़त क़ुरआनी हुक्म ﴿أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَٰتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا﴾[1] के तॅहत हिजरत के फ़ौरी बा'द मिल गई[2] जब कि दूसरे त़बक़े के नज़्दीक दिफ़ाई जिहाद की इजाज़त हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ وعلی آلہٖ وسلم के विसाल से सिर्फ़

(1) الحج، ۲۲: ۳۹

(2) طبری، جامع البیان فی تفسیر القرآن، ۱۷: ۱۷۳
بغوی، معالم التنزیل، ۳: ۲۸۹
زمخشری، الکشاف عن حقائق غوامض التنزیل، ۳: ۱۶۱

तीन साल क़ब्ल सुल्हे हुदैबिया से वापसी पर उस वक़्त मिली जब मुशरिकीने मक्का ने मुआहदए हुदैबिय्या को तोड़ा।(1)

येह इस लिये था कि मुसलमान अददी अक़ल्लिय्यत और कमज़ोरी के बाइष मक्का में लड़ाई के ज़रीए अपना दिफ़ाअ करने की पोज़ीशन में नहीं थे, इस लिये मक्की दौर की हिक्मते अमली मदनी दौर की निस्बत मुख़्तलिफ़ थी। जब रियासते मक्का ने मदीना पर जारेहिय्यत का मुज़ाहरा करते हुवे बद्र, उहुद और ख़न्दक़ की सूरत में तीन जंगें मुसलमानों पर मुसल्लत कीं तो रियासते मदीना को मज्बूरन अपने दिफ़ाअ में लड़ना पड़ा। जब कि मुसलमानों को दिफ़ाई जंग की इजाज़त भी छे (6) हिजरी में उस वक़्त मिली जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ सुल्हे हुदैबिय्या करने के बा'द वापस लौट रहे थे। इस सुल्ह से षाबित होता है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने दूसरी अक़्वाम के साथ बहालिये अम्न के लिये हमेशा सियासी व सिफ़ारती ज़राएअ (political & diplomatic means) और मुआहदाते अम्न (peace treaties) को तरजीह दी। जबकि दिफ़ाई जंग को हमेशा आख़िरी इक़्दाम के तौर पर मुअख़्ख़र रखा।

मक्की दौर में जिन पाँच आयात में जिहाद की तल्क़ीन की गई है, अगर आप उन के शाने नुज़ूल, तारीख़ी पस मन्ज़र और सियाक़ो सिबाक़ (text, context & historical background) पर ग़ौर करें तो आप को मा'लूम होगा कि जिहाद का मा'ना मॅहज़ येह नहीं है कि तल्वार या बन्दूक़ ले कर जंग शुरूअ कर दी जाए बल्कि जिहाद के कई दीगर तक़ाज़े भी हैं। इन तमाम आयात में जिहाद का मा'ना इल्म व शुऊर की तरवीज, रूहानी व अख़्लाक़ी

(1) واحدی، الوجیز فی تفسیر الکتاب العزیز، ١:١٥٤
ابن الجوزی، زاد المسیر فی علم التفسیر، ١:١٩٧
رازی التفسیر الکبیر، ٥:١٠٩

इर्तेक़ा, फ़िक्री व फ़लाही जिद्दो ज़ॅहद और समाजी सत्ह़ पर इन्फ़ाक़ व ख़ैरात है। हाँ अलबत्ता जब जारेह़िय्यत की जंग आप पर मुसल्लत़ कर दी जाए तब आप को इजाज़त है कि आप अपनी ह़िफ़ाज़त और दिफ़ाअ़ की जंग लड़ें। दिफ़ई़ जंग वोह लड़ाई है जिस की UN और बैनुल अक़्वामी क़ानून भी इजाज़त देता है और इस की इजाज़त दुन्या की हर क़ौम और हर मुल्क को ह़ासिल है।

8. अ़स्रे हाज़िर में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلَّم की मक्की हिक्मते अ़मली से रॅहनुमाई

जिस त़रह़ पॅहले ज़िक्र किया गया है कि मक्का में सह़ाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُم को तमाम तर जब्र व तशद्दुद, वॅह़शत व बरबरिय्यत और ज़ुल्म व ज़ियादती के बा वुजूद अपने दिफ़ाअ़ में हथियार उठाने की इजाज़त नहीं थी। उसकी वज्ह येह बयान की जाती है कि मुसलमानाने मक्का इस पोज़ीशन में नहीं थे कि मुसल्लॅह़ तसादुम (Armed 1239 Conflict) के ज़रीए अपना दिफ़ाअ़ कर सकते। अगर वोह अपने दिफ़ाअ़ में मुसल्लॅह़ तसादुम का रास्ता इख़्तियार करते तो चन्द लोगों को कुफ़्फ़ारे मक्का के लिये शहादत से हम कनार करना क्या मुश्किल था। इस सूरत में इस्लाम की वोह आ़लमगीर दा'वत जिसे ले कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلَّم मब्ऊ़ष हुवे थे और जिसे पूरी दुन्या में फैलना था उस के इम्कानात ख़ासी ह़द तक मा'दूम हो जाते। इस लिये कमज़ोर मुसलमानों को ताकीद के साथ त़ाक़तवर दुश्मन के ख़िलाफ़ हथियार उठाने से रोक दिया गया।

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلَّم की मक्की दौर की ह़िक्मते अ़मली से येह षाबित होता है कि अगर कोई इस्लामी रियासत अपने किसी दुश्मन का भरपूर अ़स्करी मुक़ाबला करने की पोज़ीशन में न हो तो उसे चाहिये कि वोह लड़ाई छेड़ कर अपना नुक़्सान न करे। वोह मक्की दौर की ह़िक्मत और मसालिह़ से फ़ाइदा उठाते हुवे दुश्मन के मुक़ाबले में अपने आप

को सियासी, समाजी, इक़्तेसादी और दिफ़ाई ए'तेबार से मज़्बूत करे। मक्का में अगर्चे पाँच आयाते जिहाद नाज़िल हो चुकी थीं मगर आप ﷺ ने उन आयात का इत्लाक़ ह़र्ब व क़िताल और जिहाद बिस्सैफ़ पर नहीं किया बल्कि मुसलमानों की अफ़रादी क़ुव्वत और इज्तेमाई सलाह़िय्यत को मुस्लेह़ तसादुम में झौंकने की बजाए उन्हें और मज़्बूत किया और एक अ़ज़ीम मक़्सद के लिये मॅह़फ़ूज़ किया। इस नबवी ह़िक्मते अ़मली का फ़ाएदा येह हुवा कि रियासते मदीना के क़ियाम के बा'द अहले मदीना के क़ियाम के बा'द अहले मक्का की जारेह़िय्यत से बचने के लिये जब मुसलमानों का रियासते मक्का के साथ मा'रकए बद्र में पॅहला टकराओ हुवा तो मक्का में मॅह़फ़ूज़ की गई अफ़रादी सलाह़िय्यतों का मुसलमानों ने भरपूर इस्ते'माल किया और शानदार फ़त्ह़ ह़ासिल की।

9. क़ुरआन में लफ़्ज़े जिहाद का इस्ते'माल और उस के मा'ना का तअ़य्युन

अगर हम جهد और جهاد के तनाज़ुर में क़ुरआनी आयात पर फ़िक्रो तदब्बुर करें तो पता चलेगा कि पन्द्रह (15) मुश्तक़ात (मषलन: جَاهَدَ، جَاهَدَا، جَاهَدُوْا، جَاهِدْ، جَاهِدُوْا، يُجَاهِدُوْنَ और الْمُجَاهِدُوْن वग़ैरा) की सूरत में येह लफ़्ज़ अठ्ठारह (18) सूरतों और छत्तीस (36) आयात में कुल इक्तालिस (41) मरतबा ज़िक्र हुवा है। इन 36 आयात में से 31 आयात के मतन में या सियाक़ो सिबाक़ में कहीं भी बिल वासित़ा या बिला वासित़ा लड़ने या जंग करने, ह़त्ता कि दिफ़ाई या जाइज़ जंग (defensive warfare or lawful war) और क़िताल का मा'ना भी नहीं पाया जाता। एक दो आयात की बात नहीं हो राही बल्कि 31 आयात में जिहाद का ह़ुक्म पाए जाने के बा वुजूद उस के मतन या सियाक़ो सिबाक़ में कहीं भी जंग या क़िताल का न ज़िक्र है न मा'ना। इस से साफ़ मा'लूम होता है कि हर ह़ुक्मे जिहाद जंग या क़िताल से इ़बारत नहीं बल्कि

इन छत्तीस (36) आयात में से सिर्फ़ चार (4) आयात के सियाक़ो सिबाक़ में जंग का मा'ना पाया जाता है। वाज़ेह़ रहे कि वोह भी आयाते जिहाद के मतन में नहीं बल्कि उन के सियाक़ो सिबाक़ में जंग का ज़िक्र है।

10. जिहाद और क़िताल को इकट्ठा ज़िक्र करने में क़ुरआनी ह़िक्मत

क़ुरआन में जिहाद से मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल होने वाली छत्तीस (36) आयात में से कोई एक आयत भी ऐसी नहीं जिस के मतन में जिहाद और क़िताल का ज़िक्र इकट्ठा आया हो। या'नी एक ही आयत में जिहाद और क़िताल का बयान साथ साथ मौजूद हो। ऐसा किसी एक आयत में भी नहीं हुवा। ये अम्र इत्तेफ़ाक़ी नहीं है, येह कलामे इलाही है और येही उलूही स्कीम है। आप उलूही स्कीम और उलूही ह़िक्मत व मस्लॅह़त पर ग़ौर करें कि पूरे क़ुरआन ह़कीम में एक आयत भी जिहाद का हुक्म और क़िताल का हुक्म इकट्ठा नहीं किया गया। इसी त़रह़ क़ुरआन मजीद की साठ (60) आयात में भी क़िताल के साथ जिहाद का ज़िक्र किसी इस्म, फ़े'ल या अम्र की सूरत में नहीं किया गया। क़ुरआन ने हमेशा इन दोनों इस्त़ेलाह़ात का ज़िक्र अलग अलग किया है। इस लिये कि क़िताल जिहाद की पाँच अक़्साम में से एक क़िस्म है और वोह भी कई शराइत़ के साथ मल्ज़ूम है।

जिहाद और क़िताल का मा'ना एक दूसरे के साथ लाज़िम व मल्ज़ूम नहीं है। दोनों तसव्वुरात को अलग अलग ज़िक्र किया गया है। जब क़िताल का लफ़्ज़ किसी भी ऐसी क़ुरआनी आयत के मतन में एक बार भी इस्ते'माल नहीं हुवा जिस में जिहाद का लफ़्ज़ आया है इस का मत़्लब ये हुवा कि जिहाद का मा'ना सिर्फ़ 'ह़क़्क़ो इन्साफ़ पर मब्नी जंग' (just & lawful war) भी नहीं हो सकता, क्यूँकि क़ुरआनी आयात के मा'ना के ह़वाले से येह बात सामने आती है कि जिहाद के लफ़्ज़ी मा'ना का जंग (war) से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है।

दूसरी अहम बात येह है कि आप क़ुरआन ह़कीम को اَلْحَمْد से وَالنَّاس तक पढ़ लें, आप को एक आयत भी ऐसी नहीं मिलेगी जिस में जिहाद या क़िताल को जारेह़िय्यत (aggression) के मा'ना में लिया गया हो। येह हमेशा अपने दिफ़ाअ़, मुआ़हदए अम्न की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने वालों की तादीब, लोगों को ज़ुल्मो जब्र से बचाने और बा'ज़ ख़ास ना गुज़ीर ह़ालात के लिये इस्ते'माल होता है।

अब उन लोगों के पास इस का क्या जवाब है जो जिहाद के नाम निहाद अ़लम बरदार कॅहलाते हैं और उन्हों ने इन्सानिय्यत के ख़िलाफ़ एक ख़त़रनाक जंग शुरूअ़ कर रखी है। जो येह समझते हैं कि रियासत का बारे गराँ और पूरी उम्मते मुस्लिमा की ज़िम्मेदारी उन के कन्धों पर आन पड़ी है और उन्हों ने ख़ुद ही बग़ैर रियासत की इजाज़त के जिहाद का ए'लान कर दिया है। दर ह़क़ीक़त क़त्लो ग़ारतगरी और ख़ून ख़राबे पर मब्नी इन के ऐसे सब आ'माल और ह़रकात इस्लाम में कुल्लियतन ह़राम हैं, जिन में बे गुनाह इन्सानों का ख़ून बहाया जाता है; जो न तो आप के ख़िलाफ़ किसी जंग में मसरूफ़ हैं, न आप पर किसी ज़ुल्म व तअ़द्दी के मुरतकिब हैं और न किसी मुल्क और हुकूमत के ज़ालिमाना या जारेह़ाना रविय्ये के ज़िम्मेदार हैं। न उन्हों ने आप के ख़िलाफ़ हथियार उठा रखे हैं और न उन्हों ने आप को किसी मुक़ाबले के लिये लल्कारा है। वोह मुकम्मल त़ौर पर ग़ैर जारेह़ और पुर अम्न हैं। वोह अपनी निजी, समाजी, मुआ़शी या ता'लिमी सर गर्मियों में मसरूफ़ थे और आप ने उन्हें भून डाला।

तीसरी अहम बात येह है कि अगर आप उन चार (4) आयात के सियाक़ो सिबाक़ को देखें जो क़िताल के मफ़्हूम पर मुश्तमिल हैं तो येह ह़क़ीक़त आप पर रोज़े रौशन की त़रह़ अ़याँ हो जाएगी कि येह आयात भी या तो दुश्मन की जारेह़िय्यत के ख़िलाफ़ दिफ़ाअ़ (self defense) से मुतअ़ल्लिक़ हैं या किसी मुआ़हदए अम्न के तोड़े जाने से मुतअ़ल्लिक़। इन में

कहीं भी किसी पर बिला वज्ह जारेहिय्यत और इक़्दाम की इजाज़त नहीं दी गई। बल्कि इन चारों आयात में दिफ़ाई जंग या हुक़ूक़े इन्सानी क़ियामे अम्न के लिये जाइज़ जंग (Lawful war for establishment of peace & human rights) का मा'ना पाया जाता है।

इस तज्ज़िये से येह बात बड़ी आसानी से समझी जा सकती है कि जब छत्तीस (36) आयाते जिहाद में से सिर्फ़ चार आयात का अपने सियाक़ो सिबाक़ के तनाज़ुर में क़िताल से तअ़ल्लुक़ (contextual link) है और बाक़ी बत्तीस (32) आयात का सियाक़ो सिबाक़ में भी क़िताल से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं, तो फिर लफ़्ज़े जिहाद को हमेशा और हर जगह क़िताल के मा'ना में क्यूँ लिया जाता है? येह जिहाद का बिल्कुल ग़लत़ तसव्वुर है जो क़ुरआन और इस्लाम की वाज़ेह़ मन्शा के सरासर ख़िलाफ़ है।

चौथी अहम बात इस ह़वाले से येह ज़ेहन में रखनी चाहिये कि सूरतुत्तौबह मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल होने वाली उन आख़िरी सूरतों में से है जो अहले मक्का की त़रफ़ से मुआ़हदए अम्न (Treaty of peace) तोड़ने के बा'द नाज़िल हुई। इस मुआ़हदा शिकनी के बा'द بَرَآءَةٌ مِّنَ اللهِ وَرَسُوْلِهٖ[1] फ़रमा कर बा क़ाइ़दा तन्सीख़े मुआ़हदा (Cancellation of treaty) का ए'लान कर दिया गया था। इस त़रह़ रियासते मक्का और मदीना दोनों फिर से ह़ालते जंग (state of war) की त़रफ़ लौट आएँ। लेहाज़ा सूरतुत्तौबह की येह आयत - जिन में **आयतुस्सैफ़** भी शामिल है - ह़क़ीक़त में मुशरिकीने मक्का की त़रफ़ से अ़ह्द शिकनी के बा'द इख़्तेतामे मुआ़हदा का ए'लान व इज़्हार था।

हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने ए'लाने नुबुव्वत के बा'द तेरह (13) साल मक्का में गुज़ारे। मुसलमान मक्का में बॉहत कमज़ोर

(1) التوبة،٩:١

अक़ल्लिय्यत थे। मक्का के इस पूरे दौर में मुसलमानों को ज़ुल्मो सितम, जब्र व तशद्दुद, वॅह्शत व बरबरिय्यत और दॅह्शत गर्दी का निशाना बनाया गया। इस तमाम तर ना इन्साफ़ी और जारेह़िय्यत के बा वुजूद मुसलमानों को अपनी ह़िफ़ाज़त और दिफ़ाअ़ के लिये भी हथियार उठाने की इजाज़त नहीं थी। पैग़म्बरे इस्लाम और आप ﷺ के पैरोकारों को मुज़ाह़मत की बजाए सब्रो तह़म्मुल का ह़ुक्म था। हिजरत के बा'द बद्र, उह़ुद और ख़न्दक़ जैसे ग़ज़वात भी मॅह़ज़ दिफ़ाई थे। क्यूँ येह तमाम जंगें शॅहरे मदीना की ह़ुदूद में या उस के जुवार में लड़ी गईं। ह़ुज़ूर ﷺ और आप के सह़ाबा के मॅह़ज़ दिफ़ाई पोज़िशन पर होने की सब से बड़ी दलील येह है कि इन तमाम जंगों में जब दुश्मन मुसलमानों पर ह़म्ला आवर होता तो मुसलमान मदीना के बॉर्डर या शॅहरे मदीना के अन्दर मॅह़सूर हो कर दिफ़ाअ़ करते। या शॅहरे मदीना से बाहर निकल कर अपनी त़रफ़ होने वाली जारेह़ाना पेश क़दमी को रोकने के लिये लड़े। इन में से एक जंग भी शॅहरे मक्का के बॉर्डर पर नहीं लड़ी गई।

अ़ॅहदे नबवी के क़बाइली और जंगी कल्चर में जब हर क़बीला हमा वक़्त जंग करने के लिये तय्यार रॅहता था, हिजरते मदीना के बा'द ता दमे विसाल ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ और आप के सह़ाबा को मज्मूई त़ौर पर तक़रीबन साठ (60) या अस्सी (80) छोटी बड़ी जंगों का सामना करना पड़ा, मगर दिलचस्प बात येह है कि इन तमाम जंगों में से एक जंग भी जारेह़िय्यत की सूरत में नहीं हुई। येह तमाम की तमाम जंगें मुदाफ़िआ़ना थीं। आप ﷺ ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी सालों में एक दो जगहें मुम्किना जारेह़िय्यत को रोकने के लिये (preemptive defensive wars) लड़ें; एक उस वक़्त जब आप ﷺ बा वुषूक़ ज़राएअ़ से पुख़्ता यक़ीन हो गया कि ख़ैबर के लोग आप ﷺ पर ह़म्ला आवर होने वाले हैं और दूसरी आप ﷺ की ज़िन्दगी के आख़िरी साल जब आप को इत्त़ेलाअ़ दी गई कि शामी अफ़्वाज मुसलमानों

पर ह़म्ला करने के लिये जम्अ़ हो रही हैं। इन दोनों मवाक़ेअ़ पर आप ﷺ ने पेश बन्दी के त़ौर पर मुदाफ़िआ़ना ह़िक्मते अ़मली इख़्तियार की। इस त़रह़ आप ﷺ ने अपनी पूरी ह़याते त़य्यिबा में हमेशा दिफ़ाई ह़िक्मते अ़मली अपनाई और कभी किसी पर ह़म्ले में पॅह़ल नहीं की।

यहाँ पर निहायत ग़ौर त़लब और दिलचस्प बात येह है कि मक्का के उस दौर में, जब मुसलमानों को भी अपने दिफ़ाअ़ और ह़िफ़ाज़त के लिये मुसल्लॅह़ जिद्दो जॅहद की इजाज़त नहीं थी, जिस ज़माने में हर रोज़ किसी न किसी सह़ाबी को मक्का के गली कूचों और चौक चौराहों में या तो कोइलों पे लिटाया जा रहा था या फिर कोड़ों से पीटा जा रहा था, इन कर्बनाक ह़ालात में ह़ुक्मे जिहाद पर मुश्तमिल पाँच आयाते जिहाद[1] नाज़िल हुई मगर उन में से किसी एक में भी मुदाफ़िआ़ना जंग तक की इजाज़त न थी।

11. जिहाद और क़िताल में फ़र्क़

लफ़्ज़े जिहाद और क़िताल एक दूसरे की जगह इस्ते'माल करने वालों और इन दोनों अल्फ़ाज़ को एक दूसरे का मुतबादिल समझने वालों को मा'लूम होना चाहिये कि क़ुरआन ह़कीम में सूरतुल फ़ातिह़ा से सूरतुन्नास तक किसी एक आयत में भी जिहाद और क़िताल के दोनों अल्फ़ाज़ या दोनों ह़ुक्म एक जगह इकट्ठे बयान न करने की ह़िक्मत ही दोनों के दरमियान फ़र्क़ को

---

(1) الفرقان، ۲۵:۵۲
العنکبوت، ۲۹:۶
العنکبوت، ۲۹:۸
العنکبوت، ۲۹:۶۹
لقمان، ۳۱:۱۵

येह तमाम आयात इसी बाब में चन्द सफ़ह़ात पीछे ज़िक्र की जा चुकी हैं।

क़ाइम रखना है ताकि लोग दोनों इस्तेलाहात या तसव्वुरात में ख़ल्त मल्त न कर बैठें। और दोनों (जिहाद और क़िताल) को एक दूसरे का हम मा'ना या मुतबादिल न समझ बैठें। लफ़्ज़ क़िताल जंग के मा'ना में इस्ते'माल होता है जबकि लफ़्ज़ जिहाद का मफ़्हूम बॉहत वसीअ़ है। क़ुरआन ह़कीम में जंग, ख़्वाह दिफ़ाअ़ के लिये क्यूँ न हो लफ़्ज़ जिहाद का ना गुज़ीर और लाज़िमी मा'ना नहीं है। बद क़िस्मती से येह इस्तेलाह़ इन्तेहा पसन्दों और दॅहशत गर्दों ने hijack कर रखी है। वोह अपनी मुजरिमाना और दॅहशत गर्दाना कार रवाइयों के लिये और बनी नौए इन्सान को हलाक करने के लिये इस इस्तेलाह़ का ग़लत इस्ते'माल व इत़्लाक़ (wrong application) करते हैं। मज़ीद बर आँ इस्लामी ता'लीमात के मुताबिक़ क़िताल का मत़्लब भी ज़ालिमाना और जारेह़ाना लड़ाई नहीं बल्कि ह़क़ और इन्साफ़ पर मब्नी जाइज़ (lawful) जंग है जो UN की दी हुई Definition के ऐन मुताबिक़ है और जसे आ़लमी क़ानून (International law) भी जाइज़ क़रार देता है। बल्कि येह जंग ज़ुल्मो सितम और जब्रो इस्तिबदाद के ख़ातिमे और अम्न अमान की बह़ाली के लिये लड़ी जाती है।

12. जिहाद और ह़र्ब में फ़र्क़

अ़रबी ज़बान में लफ़्ज़ 'ह़र्ब' के बीसियों मुतरादिफ़ात हैं लेकिन येह लफ़्ज़ मक़ासिदे जंग को ज़ियादा बेहतर त़रीक़े से वाज़ेह़ करता है। अ़रबों की लड़ाइयाँ आ़म त़ौर पर दो मक़ासिद के लिये होती थीं: एक लूट मार के लिये और दूसरे नस्ली तफ़ाख़ुर, ग़ैरत व ह़मिय्यत और इन्तेक़ामी कार रवाइयों के लिये। लफ़्ज़ ह़र्ब इन दोनों मक़ासिद के लिये बपा की जाने वाली लड़ाइयों के मुह़र्रिकात और मक़ासिद का एक बलीग़ इस्तेआ़रा है और अपना मफ़्हूम पूरी त़रह़ वाज़ेह़ और रौशन करता है।

ख़ुद अ़रबी ज़बान में जंग के लिये 'ह़र्ब' का लफ़्ज़ इस्ते'माल किया गया है। तसव्वुरे ह़र्ब, भी तसव्वुरे जिहाद से अपने मफ़्हूम के ए'तेबार से बॉहत मुख़्तलिफ़ है, इसी लिये जिहाद पर ह़र्ब का इत़्लाक़ नहीं किया गया। जंग या'नी ह़र्ब फ़ित्नों की परवरिश करती है जबकि जिहाद फ़ित्ना व फ़साद को ख़त्म करने के लिये किया जाता है। जिहाद के मक़ासिद दुन्या की जारेह़ाना या तौसीअ़ पसन्दाना जंगों से क़त़्ई मुख़्तलिफ़ हैं। क़ुरआन मजीद में लफ़्ज़ 'حرب' छे मक़ामात पर इस्ते'माल किया गया है। एक के सिवा कहीं भी इस से जिहाद का मफ़्हूम मुतरश्शिह़ नहीं होता। ज़ैल में हम लफ़्ज़ ह़र्ब के मफ़्हूम को समझने के लिये क़ुरआन की मुख़्तलिफ़ आयात का मुत़ालआ़ करते हैं:

1. फ़रमाने बारी तआ़ला है:

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ۝ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ.[1]

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो कुछ भी सूद में से बाक़ी रॅह गया है छोड़ दो अगर तुम (सिद्क़ दिल से) ईमान रखते हो। फिर अगर तुम ने ऐसा न किया तो अल्लाह और उस के रसूल (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) की त़रफ़ से ए'लाने जंग पर ख़बरदार हो जाओ।

येह अम्र क़ाबिले ज़िक्र है कि आयते मज़्कूरा में मुसलमानों से ख़ित़ाब किया गया है और जिहाद मुसलमानों के ख़िलाफ़ नहीं किया जाता। यहाँ पर अस्ल में सूद की संगीनी को ज़ाहिर करने के लिये लफ़्ज़े ह़र्ब इस्ते'माल किया गया है। अक्सर मुफ़स्सिरीन ने बयान किया है कि अ़मली

(1) البقرة، ۲: ۲۷۸-۲۷۹

त़ौर पर भी कभी इस बिना पर जिहाद नहीं किया गया। लेहाज़ा यहाँ लुग़वी मा'ना मुराद हैं इस्त़ेलाह़ी नहीं।

2. एक और मक़ाम पर अ़ॅहद फ़रामोश कुफ़्फ़ार के ह़वाले से लफ़्ज़ ह़र्ब इस्ते'माल करते हुवे इरशाद होता है:

فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِی الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ یَذَّكَّرُوْنَ۝ (1)

सो अगर आप उन्हें (मैदाने) जंग में पा लें तो उन के इ़ब्रतनाक क़त्ल के ज़रीए़ उन के पिछलों को (भी) भगा दें ताकि उन्हें नसीह़त ह़ासिल हो।

क़बाइले यहूद बार बार अ़ॅहद शिकनी के मुरतकिब होते थे। येह आयत उन्ही के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल हुई। यहूदियों ने ज़ाती बुग़्ज़ व इ़नाद के बाइ़ष लड़ाइयों का जो सिलसिला शुरूअ़ किया हुवा था और क़बाइले अ़रब को मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काने में मसरूफ़ थे। क़ुरआन मजीद में इस मन्फ़ी कार रवाई का ज़िक्र ह़र्ब से किया गया है।

3. इरशादे ख़ुदावन्दी है:

كُلَّمَاۤ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ وَیَسْعَوْنَ فِی الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا یُحِبُّ الْمُفْسِدِیْنَ۝ (2)

(1) الانفال، ٨:٥٧

(2) المائدة، ٥:٦٤

जब भी येह लोग जंग की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है और येह (रूए) ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी करते रॅहते हैं, और अल्लाह फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता।

इस आयते करीमा का रूए सुख़न यहूद व नसारा की त़रफ़ है। यहाँ भी ह़र्ब से मुराद हरगिज़ जिहाद नहीं बल्कि मन्फ़ी मक़ासिद पर मब्नी जंग व क़िताल है। मफ़्हूमे आयत रोज़े रौशन की त़रह़ वाज़ेह़ है।

4. सूरतुत्तौबह में इरशादे बारी है:

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًاۢ بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ.[1]

और (मुनाफ़िक़ीन में से वोह भी हैं) जिन्हों ने एक मस्जिद तय्यार की है (मुसलमानों को नुक़्सान पहोंचाने और कुफ़्र (को तक़्वियत देने) और अहले ईमान के दरमियान तफ़रिक़ा पैदा करने और उस शख़्स की घात की जगह बनाने की ग़रज़ से जो अल्लाह और उस के रसूल (صلى الله عليه وعلى آله وسلم) से पॅहले ही से जंग कर रहा है।

यहाँ भी लफ़्ज़ 'حرب' कुल्लियतन मन्फ़ी जंगी कार रवाई के मा'ना में इस्ते'माल हुवा है।

अ़रबी लुग़त के मुत़ाबिक़ अ़रब में जंग के लिये जो तराकीब, मुह़ावरे, अ़लामतें और इस्तेआ़रे इस्ते'माल हुवे हैं, उन तमाम से वॅह़शियाना पन और दॅहशत गर्दी का तअ़षुर उभरता है। इस लिये अ़स्करी लिट्रेचर की इस्लाह़ के लिये इस्लाम ने उन तमाम जारेह़ाना अल्फ़ाज़ और मुह़ावरों को तर्क कर के इस्लाह़े अह़वाल की मुष्बत जिद्दो ज़ॅहद को 'जिहाद' का नाम

(1) التوبة، ٩: ١٠٧

दिया। इस का इत्लाक़ आ'ला और अर्फ़अ़ मक़ासिद, क़ियामे अम्न, फ़ित्ना व फ़साद के ख़ातिमे और ज़ुल्म व जब्र को मिटाने के लिये जामेअ़ जिद्दो ज़ॅहद पर होता है। लफ़्ज़े जिहाद से लूट मार, ग़ैज़ व ग़ज़ब और क़त्लो ग़ारतगरी की बू तक नहीं आती बल्कि इस का मा'ना पाकीज़ा, आ'ला और पुर अम्न इन्सानी मक़ासिद पर दलालत करता है। एक मुहज़्ज़ब, शाइस्ता और बलन्द अ़ज़ाइम रखने वाली अम्न पसन्द क़ौम की इन्क़ेलाबी जिद्दो ज़ॅहद और मुसलसल काविशों के मफ़्हूम की तौज़ीह़ व तफ़्हीम के लिये लफ़्ज़ जिहाद से बेहतर कोई दूसरा लफ़्ज़ नहीं है। जिहाद अपने वसीअ़ तर मा'नों में वक़्ती या हंगामी सई व काविश नहीं बल्कि मॅहद से ले कर लह़द तक मर्दे मोमिन की पूरी ज़िन्दगी पर मुह़ीत़ है।

13. जिहाद और बग़ावत में फ़र्क़

अपनी तमाम ज़ाहिरी व बात़िनी सलाह़िय्यतों और इस्ते'दाद को आ'ला और पुर अम्न मक़ासिद के पेशे नज़र अल्लाह की राह में सर्फ़ करने के लिये जो कोशिश की जाए, उसे जिहाद कॅहते हैं। अगर जिहाद की शरई शराइत़ पूरी न हों तो वोह अ़मल जिहाद नहीं बल्कि ग़द्र, बग़ावत दॅहशत गर्दी और फ़साद है जिस की इस्लामी ता'लीमात में क़त्अ़न इजाज़त नहीं है। जिन लोगों को मुसल्लॅह़ दॅहशत गर्दों की मुल्क दुश्मन कार रवाइयों के पसे पर्दा 'जिहाद' का शाएबा होता है, उन्हें इत्मिनाने क़ल्ब हो जाना चाहिये कि कलिमा गो और मा'सूम शॅहरियों की जानें लेना कोई जिहाद नहीं है बल्कि जैसे आ'ला दीनी तसव्वुर को बदनाम करने की बद तरीन और घिनौनी कोशिश है। तारीख़े इस्लाम में जिस त़रह़ बग़ावत को एक जुर्म क़रार दिया गया है उसी त़रह़ आज के मुसल्लॅह़ बाग़ियों को मुल्क व क़ौम का दुश्मन समझना ही दीनदारी है।

आयात व अहादीष और तसरीह़ाते अइम्मए दीन की रौशनी में बग़ावत की ह़ुरमत व मुमानअ़त वाज़ेह़ है। इस सिलसिले में अह़ादीष के

इलावा सहाबए किराम, ताबेईन, अत्बाउत्ताबिईन बिल ख़ुसूस इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा, इमाम मालिक, इमाम शाफ़िई, इमाम अह़मद बिन ह़न्बल और दीगर जलीलुल क़द्र अइम्मए दीन رضوان اللہ علیہم اجمعین के फ़तावा की रौशनी में येह अम्र वाज़ेह़ है कि मुस्लिम रियासत के ख़िलाफ़ बग़ावत की क़त्ई मुमानअ़त पर इज्माए उम्मत है और किसी मज़्हब व मस्लक में भी इस पर इख़्तेलाफ़ नहीं है। ऐसे मुसल्लॅह़ ख़ुरूज और बग़ावत को जो नज़्मे रियासत के ख़िलाफ़ हो और हैअते इज्तेमाई के बा क़ाइदा इज़्न व इजाज़त के बग़ैर हो वोह ख़ाना जंगी, दॅहशत गर्दी और फ़ित्ना व फ़साद होता है; इसे किसी लेह़ाज़ से भी जिहाद का नाम नहीं दिया जा सकता।

अहले लुग़त ने बग़ावत की कई ता'रीफ़ात बयान की हैं, वोह सब एक ही मा'नवी अस्ल की त़रफ़ लौटती हैं। येह ता'रीफ़ात मुलाह़ज़ा करने के बा'द आप के सामने जिहाद और बग़ावत का फ़र्क़ ख़ुद ब ख़ुद वाज़ेह़ हो जाएगा।

1. फ़ुक़हाए अह़नाफ़ नें इमाम इब्ने हुमाम (मुतवफ़्फ़ा 861 हिजरी) ने 'फ़त्हुल क़दीर' में बग़ावत की सब से जामेअ़ ता'रीफ़ की है और बाग़ियों की मुख़्तलिफ़ अक़्साम बयान की हैं। वोह लिखते हैं:

وَالْبَاغِي فِي عُرْفِ الْفُقَهَاءِ الْخَارِجُ عَنْ طَاعَةِ إِمَامِ الْحَقِّ. وَالْخَارِجُوْنَ عَنْ طَاعَتِهِ أَرْبَعَةُ أَصْنَافٍ: **أَحَدُهَا**: الْخَارِجُوْنَ بِلاَ تَأْوِيْلٍ بِمَنَعَةٍ وَبِلَا مَنَعَةٍ، يَأْخُذُوْنَ أَمْوَالَ النَّاسِ وَيَقْتُلُوْنَهُمْ وَيُخِيْفُوْنَ الطَّرِيْقَ، وَهُمْ قُطَّاعُ الطَّرِيْقِ. **وَالثَّانِي**: قَوْمٌ كَذَلِكَ إِلاَّ أَنَّهُمْ لاَ مَنَعَةَ لَهُمْ لَكِنْ لَهُمْ تَأْوِيْلٌ. فَحُكْمُهُمْ حُكْمُ قُطَّاعِ الطَّرِيْقِ. إِنْ قَتَلُوْا قُتِلُوْا وَصُلِّبُوْا. وَإِنْ أَخَذُوْا مَالَ الْمُسْلِمِيْنَ قُطِعَتْ أَيْدِيْهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ عَلَى مَا عُرِفَ. **وَالثَّالِثُ**: قَوْمٌ لَهُمْ

مَنَعَةٌ وَحَمِيَّةٌ خَرَجُوْا عَلَيْهِ بِتَأْوِيْلٍ يَرَوْنَ أَنَّهُ عَلٰى بَاطِلٍ كُفْرٍ أَوْ مَعْصِيَةٍ. يُوْجِبُ قِتَالَهُ بِتَأْوِيْلِهِمْ. وَهٰؤُلَاءِ يُسَمَّوْنَ بِالْخَوَارِجِ يَسْتَحِلُّوْنَ دِمَاءَ الْمُسْلِمِيْنَ وَأَمْوَالَهُمْ وَيَسْبُوْنَ نِسَاءَ هُمْ وَيُكَفِّرُوْنَ أَصْحَابَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ. وَحُكْمُهُمْ عِنْدَ جُمْهُوْرِ الْفُقَهَاءِ وَجُمْهُوْرِ أَهْلِ الْحَدِيْثِ حُكْمُ الْبُغَاةِ.... **وَالرَّابِعُ:** قَوْمٌ مُسْلِمُوْنَ خَرَجُوْا عَلٰى إِمَامٍ وَلَمْ يَسْتَبِيْحُوْا مَا اسْتَبَاحَهُ الْخَوَارِجُ، مِنْ دِمَاءِ الْمُسْلِمِيْنَ وَسَبْيِ ذَرَارِيْهِمْ وَهُمُ الْبُغَاةُ.(1)

फ़ुक़हा के हाँ उ़र्फ़े आ़म में आईन व क़ानून के मुत़ाबिक़ क़ाइम होने वाली हुकूमत के नज़्म और ऑथॉरिटी के ख़िलाफ़ मुसल्लॅह़ जिद्दो ज़ॅहद करने वाले को बाग़ी (दॅह़शत गर्द) कहा जाता है। हुकूमते वक़्त के नज़्म के ख़िलाफ़ बग़ावत करने वालों की चार क़िसमें हैं:

<u>पॅहली क़िस्म</u> ऐसे लोगों पर मुश्तमिल है जो त़ाक़त के बल बूते या त़ाक़त के बग़ैर बिला तावील हुकूमत की ऑथॉरिटी और नज़्म से ख़ुरूज करने वाले हैं और लोगों का माल लूटते हैं, उन्हें क़त्ल करते हैं और मुसाफ़िरों को डराते धमकाते हैं, येह लोग राहज़न हैं।

<u>दूसरी क़िस्म</u> ऐसे लोगों की है जिन के पास ग़लबा पाने वाली त़ाक़त व क़ुव्वत न हो लेकिन मुसल्लॅह़ बग़ावत की ग़लत़ तावील हो, पस उन का हुक्म भी राहज़नों की त़रह़ है। अगर येह क़त्ल करें तो बदले में उन्हें क़त्ल किया जाए और फाँसी चढ़ाया जाए

(1) ابن همام، فتح القدير، ٥: ٣٣٤

और अगर मुसलमानों का माल लूटें तो उन पर शरई ह़द जारी की जाए।

तीसरी क़िस्म के बाग़ी वोह लोग हैं जिन के पास त़ाक़त व क़ुव्वत और जम्इय्यत भी हो और वोह किसी मन मानी तावील की बिना पर ह़ुकूमत की ओथोरिटी और नज़्म को तस्लीम करने से इन्कार कर दें और उन का येह ख़याल हो कि ह़ुकूमत बात़िल है और कुफ़्र व मा'सियत की मुरतकिब हो रही है। उन की इस तावील के बा वुजूद ह़ुकूमत का उन के साथ जंग करना वाजिब होता है। ऐसे लोगों पर ख़वारिज का इत़्लाक़ होता है जो मुसलमानों के क़त्ल को जाइज़ और उन के अम्वाल को ह़लाल क़रार देते थे और मुसलमानों की औ़रतों को क़ैदी बनाते और अस्ह़ाबे रसूल ﷺ की तक्फ़ीर करते थे। उन का ह़ुक्म भी जम्हूर फ़ुक़हा और अइम्मए ह़दीस के हाँ ख़वारिज और बाग़ियों की त़रह़ ही है।

चौथी क़िस्म उन लोगों की है जिन्हों ने ह़ुकूमते वक़्त के ख़िलाफ़ मुसल्लॅह़ बग़ावत तो की लेकिन उन चीज़ों को मुबाह़ न जाना जिन्हें ख़वारिज ने मुबाह़ क़रार दिया था जैसे मुसलमान को क़त्ल करना और उन की औलादों को क़ैदी बनाना वग़ैरा। दर ह़क़ीक़त येही लोग बाग़ी हैं।

2. अ़ल्लामा ज़ैनुद्दीन बिन नुजैम ह़नफ़ी (मुतवफ़्फ़ा 970 हिजरी 'अल बह़रुर्राइक़' में दॅह्शत गर्दों की ता'रीफ़ यूँ करते हैं:

وَأَمَّا الْبُغَاةُ فَقَوْمٌ مُسْلِمُوْنَ خَرَجُوْا عَلَى الإِْمَامِ الْعَدْلِ، وَلَمْ يَسْتَبِيْحُوْا مَا اسْتَبَاحَهُ الْخَوَارِجُ مِنْ دِمَاءِ الْمُسْلِمِيْنَ وَسَبْيِ ذَرَارِيْهِمْ.[1]

(1) ابن نجيم، البحر الرائق، ٥:١٥١

जहाँ तक बाग़ियों का तअ़ल्लुक़ है तो येह मुसलमानों में से वोह लोग हैं जो क़ानूनी त़रीक़े से क़ाइम होने वाली हुकूमत के ख़िलाफ़ मुसल्लॅह़ हो कर मुक़ाबले में निकल आते हैं। बेशक जिस चीज़ को ख़वारिज ने ह़लाल क़रार दिया है येह उस को ह़लाल क़रार न देते हों मषलन मुसलमानों का ख़ून बहाना और उन की औलादों को क़ैद कर के लौंडी या ग़ुलाम बनाना। सो येही लोग बाग़ी (दॅहशत गर्द) कॅहलाते हैं।

3. अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी (मुतवफ़्फ़ा 1252 हिजरी) ने 'रद्दुल मुह़तार' में बग़ावत की ता'रीफ़ इस त़रह़ की है:

أَهْلُ الْبَغْيِ: كُلُّ فِئَةٍ لَهُمْ مَنَعَةٌ. يَتَغَلَّبُوْنَ وَيَجْتَمِعُوْنَ وَيُقَاتِلُوْنَ أَهْلَ الْعَدْلِ بِتَأْوِيْلٍ. يَقُوْلُوْنَ: 'الْحَقُّ مَعَنَا.' وَيَدَّعُوْنَ الْوِلَايَةَ.(1)

बाग़ियों से मुराद हर वोह गुरोह है जिस के पास मज़्बूत ठिकाने और त़ाक़त हो और वोह ग़लबा ह़ासिल करने की कोशिश करते हैं। लोगों को मुनज़्ज़म कर के मुसल्लम रियासतों के ख़िलाफ़ (ख़ुद साख़्ता) तावील की बिना पर क़िताल करते हैं और कॅहते हैं कि **हम ही ह़क़ पर हैं।** और फिर विलायत या'नी हुकूमत साज़ी का दा'वा करते हैं।

इस्लाम किसी भी पुर अम्न इज्तेमाइय्यत के ख़िलाफ़ मुसल्लॅह़ बग़ावत और तफ़रेक़ा व इन्तेशार की इजाज़त नहीं देता बल्कि अम्न व सलामती और सुल्ह़ व आश्ती की तल्क़ीन करता है। इस्लामी ता'लीमात के

(1) ابن عابدين شامی، رد المحتار، ٤:٢٦٢
دسوقي، الحاشية، ٤:٢٦١
عينى، البناية شرح الهداية، ٥:٨٨٨

मुताबिक़ मुसलमान वोही शख़्स है जिस के हाथों मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम सब बे गुनाह इन्सानों के जान व माल मॅह़फ़ूज़ रहें। इन्सानी जान का तक़द्दुस और तह़फ़्फ़ुज़ शरीअ़ते इस्लामी में बुन्यादी ह़ैषिय्यत का ह़ामिल है। किसी भी इन्सान की ना ह़क़ जान लेना और उसे क़त्ल करना फ़े'ले ह़राम है बल्कि बा'ज़ सूरतों में येह अ़मल मूजिबे कुफ़्र बन जाता है। आज कल दॅहशत गर्द रियासती नज़्म के ख़िलाफ़ बग़ावत करते हुवे जिस बे दर्दी से ख़ुदकुश ह़म्लों और बम धमाकों से घरों, बाज़ारों, अ़वामी और ह़ुकूमती दफ़ातिर और मसाजिद में बे गुनाह मुसलमानों और पुर अम्न मुस्लिमों की जान ले रहे हैं वोह जिहाद नहीं बल्कि सरीह़न कुफ़्र व फ़साद है। बग़ावत व दॅहशत गर्दी फ़ी नफ़्सिही काफ़िराना फ़े'ल है और जब इस में ख़ुदकुशी का ह़राम उ़न्सुर शामिल हो जाए तो उस की संगीनी में और इज़ाफ़ा हो जाता है।

ख़ुलासए कलाम

इस बाब में हम ने जिहाद के मा'ना व मफ़्हूम और उस के जामेअ़ तसव्वुर के साथ साथ उस के ग़लत़ इत़्लाक़ात (application) का रद किया है। आइन्दा अब्वाब में जिहाद की दो बुन्यादी अक़्साम - जिहादे अक्बर और जिहादे अस़्ग़र - में से पॅहली क़िस्म या'नी जिहादे अक्बर पर तफ़्सील से बॅह़ष की जाएगी जबकि जिहादे अस़्ग़र या जिहाद बिस्सैफ़ (defensive war against aggression) पर शरह़ो बस्त़ के साथ इस मौज़ूअ़ पर हमारी अलग ज़ख़ीम किताब में मुकम्मल तफ़्सीलात दर्ज हैं।

अल बाबुष्षानी

اَلْجِهَادُ وَأَقْسَامُهُ

﴿जिहाद और उस की अक़्साम﴾

1. قَالَ الإِمَامُ ابْنُ حَزْمٍ (م456هـ) فِي الْفَصْلِ فِي الْمِلَلِ وَالنِّحَلِ، بِأَنَّ لِلْجِهَادِ ثَلَاثَةَ أَقْسَامٍ:

قَالَ أَبُو مُحَمَّدٍ: ... إِنَّ الْجِهَادَ يَنْقَسِمُ أَقْسَامًا ثَلَاثَةً: أَحَدُهَا: الدُّعَا إِلَى اللهِ عزوجل بِاللِّسَانِ؛ وَالثَّانِي: الْجِهَادُ عِنْدَ الْحَرْبِ بِالرَّأْيِ وَالتَّدْبِيْرِ؛ وَالثَّالِثُ: الْجِهَادُ بِالْيَدِ فِي الطَّعْنِ وَالضَّرْبِ.[1]

इमाम इब्ने ह़ज़्म (मुतवफ़्फ़ा 456 हिजरी) अल फ़स्लि फ़ी अल मिलिलि वन्निह़ल में जिहाद की तीन अक़्साम का तज़्किरा करते हुवे लिखते हैं:

अबू मुह़म्मद ने फ़रमाया है: बेशक जिहाद तीन अक़्साम में मुन्क़िसम है: पॅहली क़िस्म येह है कि ज़बान से दा'वते इलल्लाह दी जाए; दूसरी क़िस्म येह है कि जंग मुसल्लत़ होने की सूरत में ह़िक्मत और तदबीर के साथ लड़ना (ताकि कम से कम जानी नुक़्सान हो); और तीसरी क़िस्म येह है कि (ह़म्ला आवर के जवाब में अपना दिफ़ाअ़ करते हुवे) हाथ से चोब या चोट लगा कर जिहाद करना।

2. قَالَ الإِمَامُ السَّمْعَانِيُّ (م489هـ) فِي تَفْسِيْرِ الآيَةِ رقم 78 مِنْ سُوْرَةِ الْحَجِّ ﴿وَجَاهِدُوْا فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهٖ﴾ بِأَنَّ لِلْجِهَادِ ثَلَاثَةَ أَقْسَامٍ:

(1) ابن حزم في الفصل في الملل والنحل، ٤/١٠٧، وابن تيمية في منهاج السنة النبوية، ٨/٨٧.

إِعْلَمْ أَنَّ الْجِهَادَ يَكُوْنُ بِالنَّفْسِ وَبِالْقَلْبِ وَبِالْمَالِ. فَأَمَّا الْجِهَادُ بِالنَّفْسِ فَهُوَ فِعْلُ الطَّاعَاتِ وَاخْتِيَارُ الأَشَقِّ مِنَ الأُمُوْرِ. وَأَمَّا الْجِهَادُ بِالْقَلْبِ فَهُوَ دَفْعُ الْخَوَاطِرِ الرَّدِيَةِ. وَأَمَّا الْجِهَادُ بِالْمَالِ فَهُوَ الْبَذْلُ وَالْإِيْثَارُ.[1]

इमाम सम्ज़ानी (मुतवफ़्फ़ा 489 हिजरी) सूरतुल ह़ज की आयत नम्बर 78 - ﴿وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ﴾ 'और (ख़ातिमए ज़ुल्म, क़ियामे अम्न और तकरीमे इन्सानिय्यत के लिये) अल्लाह की राह में जिहाद करो जैसा कि उस के जिहाद का ह़क़ है' - के ज़ैल में जिहाद की तीन अक़्साम यूँ बयान करते हैं:

जिहाद, जान व दिल और माल के साथ होता है। रहा जिहाद बिन्नफ़्स तो इस से मुराद है: ताआत को बजा लाना और उमूर में से मुश्किल तरीन को चुनना। रहा जिहाद बिल क़ल्ब तो इस से मुराद है: (लोगों को नुक़्सान पहोंचाने पर उक्साने वाले) फ़ासिद व मुज़िर ख़यालात को क़ल्ब व ज़ेहन से निकाल फ़ेंका जाए; और रॅह गया जिहाद बिल माल तो इस से मुराद है: दूसरे लोगों (की तालीफ़े क़ल्ब के लिये उन) पर ख़र्च किया जाए और ईषार व क़ुरबानी का मुज़ाहरा किया जाए।

3. قَالَ الْعَلَّامَةُ ابْنُ الْجَوْزِيِّ (م579هـ) فِي تَفْسِيْرِ الآيَةِ رقم 41 مِنْ سُوْرَةِ التَّوْبَةِ ﴿وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ﴾:

قَالَ الْقَاضِي أَبُو يَعْلَى: أَوْجَبَ الْجِهَادَ بِالْمَالِ وَالنَّفْسِ جَمِيْعًا، فَمَنْ كَانَ لَهُ مَالٌ وَهُوَ مَرِيْضٌ أَوْ مُقْعَدٌ أَوْ ضَعِيْفٌ لَا يَصْلُحُ لِلْقِتَالِ، فَعَلَيْهِ

(1) السمعاني في تفسير القرآن، ٣/٤٥٧.

الْجِهَادُ بِمَالِهِ بِأَنْ يُعْطِيَهُ غَيْرَهُ، فَيَغْزُوْ بِهِ كَمَا يَلْزَمُهُ الْجِهَادُ بِنَفْسِهِ، إِذَا كَانَ قَوِيًّا. وَإِنْ كَانَ لَهُ مَالٌ وَقُوَّةٌ فَعَلَيْهِ الْجِهَادُ بِالنَّفْسِ وَالْمَالِ. وَمَنْ كَانَ مُعْدَمًا عَاجِزًا فَعَلَيْهِ الْجِهَادُ بِالنُّصْحِ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ لِقَوْلِهِ: ﴿وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهِ﴾، [التوبة، 9/91.][1]

अ़ल्लामा इब्नुल जौज़ी (मुतवफ़्फ़ा 579 हिजरी) सूरतुत्तौबह की आयत नम्बर 41 - ﴿وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ﴾ 'और अपने माल व जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो' - के ज़ैल में लिखते हैं:

क़ाज़ी अबू या'ला फ़रमाते हैं: अल्लाह तआ़ला ने जिहाद बिल माल और जिहाद बिन्नफ़्स को तमाम मुसलमानों पर लाज़िमी क़रार दिया है। लेहाज़ा जिस के पास माल हो और वोह बीमार, लाचार या कमज़ोर हो और (ह़म्ला होने की सूरत में दिफ़ाई) क़िताल की सलाहि़य्यत से आ़री हो तो उसे चाहिये कि वोह अपने माल से जिहाद करे बईं त़ौर कि वोह किसी और को (जो मुल्क व मिल्लत के दिफ़ाअ़ की ख़ाति़र लड़ने की सलाहि़य्यत रखता है) अपना माल दे और वोह उस के ज़रीए क़िताल करे। जैसा कि उस पर जिहाद बिन्नफ़्स भी लाज़िम है जब वोह त़ाक़तवर हो। अगर उस के पास माल और त़ाक़त दोनों हों तो उस पर जिहाद बिन्नफ़्स और जिहाद बिल माल दोनों ही लाज़िम हैं। लेकिन जो शख़्स मुफ़्लिस और आ़जिज़ हो तो उस पर अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के लिये (लोगों की फ़लाह़ व बेहबूद और) ख़ैर ख़्वाही का जिहाद लाज़िम है; जैसा कि अल्लाह

(1) ابن الجوزي في زاد المسير، ٣/٤٤٣.

तआला का येह फ़रमान है: ﴿وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ﴾ ‘और न (ही) ऐसे लोगों पर है जो इस क़द्र (वुस्अ़त भी) नहीं पाते जिसे ख़र्च करें जबकि वोह अल्लाह और उस के रसूल (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلَّمَ) के लिये ख़ालिस व मुख़्लिस हो चुके हों’।

4. قَالَ الْإِمَامُ فَخْرُ الدِّيْنِ الرَّازِيُّ (م606هـ) فِي تَفْسِيْرِ الْآيَةِ رقم 95 مِنْ سُوْرَةِ النِّسَاءِ ﴿وَفَضَّلَ اللهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا﴾ بِأَنَّ لِلْجِهَادِ أَقْسَامًا مُخْتَلِفَةً:

وَلَا يُمْكِنُ أَنْ يَكُوْنَ الْمُرَادُ مِنْ هٰذَا الْمُجَاهِدِ هُوَ: الْمُجَاهِدُ بِالْمَالِ وَالنَّفْسِ فَقَطْ. وَإِلَّا حَصَلَ التَّكْرَارُ. فَوَجَبَ أَنْ يَكُوْنَ الْمُرَادُ مِنْهُ مَنْ كَانَ مُجَاهِدًا عَلَى الْإِطْلَاقِ فِي كُلِّ الْأُمُوْرِ أَعْنِي فِي عَمَلِ الظَّاهِرِ، وَهُوَ الْجِهَادُ بِالنَّفْسِ وَالْمَالِ وَالْقَلْبِ؛ وَهُوَ أَشْرَفُ أَنْوَاعِ الْمُجَاهَدَةِ[1].

इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी (मुतवफ़्फ़ा 606 हिजरी) सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 95 - ﴿وَفَضَّلَ اللهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا﴾ ‘और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को (बहर तौर) बैठ रॅहने वालों पर ज़बरदस्त अज्र (व षवाब) की फ़ज़ीलत दी है।’ के ज़ैल में जिहाद की मुख़्तलिफ़ अक़्साम बयान करते हुवे लिखते हैं:

और मुम्किन नहीं कि इस मुजाहिद से मुराद सिर्फ़ मुजाहिद बिन्नफ़्स और मुजाहिद बिल माल ही हो, वगरना तकरार होगा; बल्कि ज़रूरी है कि इस से मुराद तमाम उमूर में मुत्लक़न जिहाद

(1) الرازي في التفسير الكبير، ٩/١١.

करने वाला मुराद हो, या'नी ज़ाहिरी अ़मल में भी जिहाद हो जो कि जिहाद बिन्नफ़्स, जिहाद बिल माल और जिहाद बिल क़ल्ब हैं। (और दूसरों की ख़ैर ख़्वाही के लिये अपने दिलों से जिहाद करना) जिहाद की तमाम अन्वाअ़ से ज़ियादा क़ाबिले क़द्र है।

5. قَالَ الْعَلاَّمَةُ ابْنُ تَيْمِيَةَ (م728هـ) مُبَيِّنًا الأَقْسَامَ السِّتَّةَ لِلْجِهَادِ:

اَلْجِهَادُ إِمَّا أَنْ يَكُونَ بِالْقَلْبِ كَالْعَزْمِ عَلَيْهِ، أَوْ بِالدَّعْوَةِ إِلَى الإِسْلاَمِ وَشَرَائِعِهِ، أَوْ بِإِقَامَةِ الْحُجَّةِ عَلَى الْمُبْطِلِ، أَوْ بِبَيَانِ الْحَقِّ وَإِزَالَةِ الشُّبْهَةِ، أَوْ بِالرَّأْيِ وَالتَّدْبِيرِ فِيمَا فِيهِ نَفْعُ الْمُسْلِمِينَ، أَوْ بِالْقِتَالِ بِنَفْسِهِ. فَيَجِبُ الْجِهَادُ بِغَايَةِ مَا يُمْكِنُهُ.[1]

अ़ल्लामा इब्ने तैमिय्या (मुतवफ़्फ़ा 728 हिजरी) जिहाद की छे सूरतें बयान करते हुवे लिखते हैं:

(जिहाद करने की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं:) जिहाद या तो दिल के ज़रीए किया जाता है जैसे जिहाद का अ़ज़्म; या इस्लाम और उस के अह़कामात की त़रफ़ दा'वत के ज़रीए या ग़लत़कारों पर

(1) أحمد بن غنيم النفراوي (م١١٢٦ه) في الفواكه الدواني، ٢/ ٨٧٩.

इस ता'रीफ़ की अ़ल्लामा इब्ने तैमिय्या की निस्बत से मश्हूर ह़म्बली फ़क़ीह मन्सूर बिन यूनुस बिन सलाहु़द्दीन अल बुहूती ने कश्शाफ़ुल क़िनाइ़ अ़न मत्निल इक़्नाइ़ (3/36; त़बअ़ क़ाहिरा, 1968 ई़सवी)' में नक़्ल किया है। इस से मिलती जुलती ता'रीफ़ 'मज्मूआ़ फ़तावा इब्ने तैमिय्या (5/38; बैरूत, दारुल फ़िक्र, 1980 ई़सवी)' में भी मौजूद है।

हुज्जत क़ाइम करे के; या ह़क़ की वज़ाह़त और शुब्हात के इज़ाले के ज़रीए; या मुसलमानों के लिये नफ़्अ़ के काम की फ़िक्र और तदबीर के ज़रीए; या नफ़्से क़िताल ही के ज़रीए। पस जो ज़रीआ़ भी मुम्किन हो उस के ज़रीए जिहाद वाजिब है।

6. قَالَ الإِمَامُ ابْنُ الْحَاجِّ الْمَالِكِيُّ (م737هـ) بِأَنَّ لِلْجِهَادِ قِسْمَيْنِ أَسَاسِيَيْنِ: اَلْجِهَادُ الأَكْبَرُ وَالْجِهَادُ الأَصْغَرُ:

إِنَّ الْجِهَادَ يَنْقَسِمُ إِلَى قِسْمَيْنِ: جِهَادٌ أَصْغَرُ وَجِهَادٌ أَكْبَرُ. فَالْجِهَادُ الْأَكْبَرُ هُوَ جِهَادُ النُّفُوْسِ لِقَوْلِهِ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ: هَبَطْتُمْ مِنَ الْجِهَادِ الْأَصْغَرِ إِلَى الْجِهَادِ الْأَكْبَرِ.... وَالْجِهَادُ الْأَصْغَرُ، وَهُوَ جِهَادُ أَهْلِ الْكُفْرِ وَالْعِنَادِ.[1]

इमाम इब्नुल ह़ाज्ज अल मालिकी (मुतवफ़्फ़ा 737 हिजरी) जिहाद की दो बुन्यादी क़िस्में - जिहादे अक्बर और जिहादे अस्ग़र - बयान करते हुवे लिखते हैं:

जिहाद की दो क़िस्में हैं: जिहादे अस्ग़र और जिहादे अक्बर। जिहादे अक्बर से मुराद जिहाद बिन्नुफ़ूस (या'नी क़ल्ब व रूह़ और अख़्लाक़ व किरदार की तत़्हीर व बालीदगी) है। इस की बुन्याद हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ का येह फ़रमान है: 'तुम जिहादे अस्ग़र से जिहादे अक्बर की त़रफ़ आए हो।' ...... और जिहादे अस्ग़र से मुराद अहले कुफ़्र व इ़नाद के साथ (अपने दिफ़ाअ़ की ख़ात़िर किया जाने वाला) जिहाद है।

(1) ابن الحاج في المدخل، ٣/٢.

7. قَالَ الإِمَامُ ابْنُ الْحَاجِّ الْمَالِكِيُّ (م737ھ) **فِي مَقَامٍ آخَرَ بِأَنَّ هُنَاکَ الأَقْسَامَ الأَرْبَعَةَ الأُخْرٰی لِلْجِهَادِ:**

اَلْجِهَادُ يَنْقَسِمُ عَلٰی أَرْبَعَةِ أَقْسَامٍ: جِهَادٌ بِالْقَلْبِ، وَجِهَادٌ بِاللِّسَانِ، وَجِهَادٌ بِالْيَدِ، وَجِهَادٌ بِالسَّيْفِ.

فَالْجِهَادُ بِالْقَلْبِ: جِهَادُ الشَّيْطَانِ، وَجِهَادُ النَّفْسِ عَنِ الشَّهَوَاتِ وَالْمُحَرَّمَاتِ. قَالَ اللهُ تَعَالٰی: ﴿وَنَهَی النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰی ۝ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰی ۝﴾.[1] وَجِهَادُ اللِّسَانِ: الأَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ، وَمِنْ ذٰلِکَ مَا أَمَرَ اللهُ عزوجل النَّبِيَّ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ بِهِ مِنْ جِهَادِ الْمُنَافِقِيْنَ لِأَنَّهُ عزوجل قَالَ: ﴿يٰـأَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْکُفَّارَ وَالْمُنٰـفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ط وَمَأْوٰهُمْ جَهَنَّمُ ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ﴾[2]. فَجَاهَدَ الْکُفَّارَ بِالسَّيْفِ وَجَاهَدَ الْمُنَافِقِيْنَ بِاللِّسَانِ، لِأَنَّ اللهَ عزوجل نَهَاهُ أَنْ يَعْمَلَ بِعِلْمِهِ فِيْهِمْ فَيُقِيْمُ الْحُدُوْدَ عَلَيْهِمْ.

وَجِهَادُ الْيَدِ: زَجْرُ ذَوِي الأَمْرِ أَهْلَ الْمَنَاكِرِ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْبَاطِلِ وَالْمَعَاصِي وَالْمُحَرَّمَاتِ وَعَنْ تَعْطِيْلِ الْفَرَائِضِ وَالْوَاجِبَاتِ بِالأَدَبِ وَالضَّرْبِ عَلٰی مَا يُؤَدِّي إِلَيْهِ الاِجْتِهَادُ فِي ذٰلِکَ. وَمِنْ ذٰلِکَ إِقَامَتُهُمُ الْحُدُوْدَ عَلَی الْقَذَفَةِ الزُّنَاةِ وَشَرَبَةِ الْخَمْرِ.

(1) النازعات، ٧٩/٤٠-٤١.
(2) التوبة، ٩/٧٣.

ثُمَّ أَوَّلُ مَا يَحْتَاجُ إِلَيْهِ فِي مُجَاهَدَتِهِ الزُّهْدُ فِي الدُّنْيَا لِأَنَّ مَحَبَّتَهَا وَالْعَمَلَ عَلٰى تَحْصِيْلِهَا مَعَ وُجُوْدِ شَغَفِ الْقَلْبِ بِهَا، يُعْمِي عَنْ أُمُوْرِ الآخِرَةِ، وَيَطْمِسُ الْقَلْبَ، وَيُكْثِرُ فِيْهِ الْوَسَاوِسَ وَالنَّزَغَاتِ.[1]

इमाम इब्नुल ह़ाज्ज अल मालिकी (मुतवफ़्फ़ा 737 हिजरी) एक दूसरे मक़ाम पर जिहाद की चार अक़्साम बयान करते हुवे लिखते हैं:

जिहाद चार क़िस्मों में मुन्क़सिम है: जिहाद बिल क़ल्ब (त़हारते क़ल्ब और तज़्कियए नफ़्स), जिहाद बिल्लिसान (दा'वत व तब्लीग़), जिहाद बिल यद (ख़िदमते ख़ल्क़) और जिहाद बिस्सैफ़ (या'नी जिहाद बिल क़िताल)।

जिहाद बिल क़ल्ब से मुराद शैत़ान और नफ़्स दोनों के साथ जिहाद है, बईं सूरत कि नफ़्स को बुरी ख़्वाहिशात और मुह़र्रमात से रोका जाए। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: ﴿وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ۝﴾ 'और उस ने (अपने) नफ़्स को (बुरी) ख़्वाहिशात व शॅहवात से बाज़ रखा। तो बेशक जन्नत ही (उस का) ठिकाना होगा।'।

जिहाद बिल्लिसान से मुराद: नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना। इसी क़िस्म से वोह जिहाद भी है जो अल्लाह तआला ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ को मुनाफ़िक़ीन के साथ करने का हुक्म दिया है, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ﴿يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ

(1) ابن الحاج في المدخل، ٢٧-٣٦/٣.

﴿ 'ऐ नबिय्ये (मुअ़ज़्ज़म!) आप (इस्लाम दुश्मनी पर कार फ़रमा) काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करें और अम्न दुश्मनी, फ़साद अंगेज़ी और जारेह़िय्यत के इर्तेकाब की वज्ह से) उन पर सख़्ती करें, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वोह बुरा ठिकाना है'।

सो हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने कुफ़्फ़ार के साथ (उन की मुआनिदाना कार रवाइयों के नतीजे में क़ियामे अम्न की ख़ात़िर) तल्वार के साथ और मुनाफ़िक़ों (की साज़िशों और दीन दुश्मन कार रवाइयों के ख़िलाफ़ उन) के साथ ज़बान से जिहाद किया, क्यूँकि अल्लाह तआ़ला ने आप को मन्अ़ फ़रमाया था कि आप उन के बारे में अपने इ़ल्म पर अ़मल न करें और उन पर ह़ुदूद न लगाएँ।

और जिहाद बिल यद (या'नी हाथ के साथ जिहाद) से मुराद है: ह़ुक्मरानों का बुरे लोगों को उन की बुराइयों, बात़िल उमूर, मा'सियात और मुह़र्रमात पर तरहीब और सरज़निश करना और उन्हें उन के फ़राइज़ व वाजिबात से तादीबन या इ़क़ाबन सुबुक दोश करना; जैसा कि इज्तेहाद इस बारे में राहनुमाई करता है। उन ह़ुक्मरानों का तॉहमत लगाने वालों, बदकारों और शराबियों) जैसे मुजरिमों और ह़ुदूदुल्लाह की पामाली करने वालों) पर ह़ुदूद लगाना भी इसी क़बील से है।

फिर सब से पॅहली चीज़ जिस की मुजाहिद को अपने जिहाद में एह़तियाज होती है वोह उस का (इस फ़ानी) दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करना है; क्यूँकि दुन्या की मह़ब्बत और उसे ह़ासिल करने की कोशिश और उस के साथ दिल में उस की चाहत इन्सान को उस के उख़्रवी उमूर से नाबीना कर देती है, नूरे क़ल्ब को गुल

कर देती है और उस में वसाविस और शर अंगेज़ियों का इज़ाफ़ा करती है।

8. قَالَ الإِمَامُ الذَّهَبِيُّ (م748هـ) **بِأَنَّ ابْنَ حَزْمٍ قَسَّمَ الْجِهَادَ إِلٰى ثَلَاثَةِ أَقْسَامٍ:**

وَقَالَ ابْنُ حَزْمٍ: وَالْجِهَادُ ثَلَاثَةُ أَقْسَامٍ: أَعْلَاهَا: الدُّعَا إِلَى اللهِ بِاللِّسَانِ، وَثَانِيهَا: الْجِهَادُ عِنْدَ الْبَأْسِ بِالرَّأْيِ وَالتَّدْبِيرِ، وَالثَّالِثُ: الْجِهَادُ بِالْيَدِ.[1]

इमाम ज़हबी (मुतवफ़्फ़ा 748 हिजरी) इब्ने ह़ज़्म के ह़वाले से जिहाद की तीन अक़्साम बयान करते हुवे लिखते हैं:

इब्ने ह़ज़्म ने कहा: जिहाद की तीन अक़्साम हैं: इन सब से आ'ला क़िस्म ज़बान के साथ दा'वते इलल ह़क़ देना है; दूसरी क़िस्म है: (बाग़ी और मुसल्लॅह़ गुरोहों के ख़िलाफ़) लड़ाई के वक़्त राए और तदबीर इख़्तियार करना (ताकि कम से कम नुक़्सान हो); तीसरी क़िस्म है: (मुआनिदाना कार रवाइयों में मुलव्विष मुसल्लॅह़ गुरोहों और बर सरे पैकार लोगों के ख़िलाफ़) हाथ के साथ जिहाद करना।

9. قَالَ الْعَلَّامَةُ ابْنُ الْقَيِّمِ (م751هـ) **فِي زَادِ الْمَعَادِ فِي صَدَدِ أَقْسَامِ الْجِهَادِ:**

(1) الذهبي في المنتقى من منهاج الاعتدال، ١/٥١٢.

وَكَانُوْا مَعَهُ بِأَرْوَاحِهِمْ وَبِدَارِ الْهِجْرَةِ بِأَشْبَاحِهِمْ. وَهٰذَا مِنَ الْجِهَادِ بِالْقَلْبِ، وَهُوَ أَحَدُ مَرَاتِبِهِ الأَرْبَعِ: وَهِيَ الْقَلْبُ وَاللِّسَانُ وَالْمَالُ وَالْبَدَنُ. وَفِي الْحَدِيْثِ: جَاهِدُوا الْمُشْرِكِيْنَ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَقُلُوْبِكُمْ وَأَمْوَالِكُمْ.[1]

अ़ल्लामा इब्नुल क़य्यिम (मुतवफ़्फ़ा 715 हिजरी) 'ज़ादुल मआ़द' में जिहाद की तक़्सीम के ह़वाले से लिखते हैं:

और वोह अपनी अरवाह़ के साथ (या'नी दिल व जान से) आप के हमराह थे और दारे हिजरत में अपने सायों के साथ (या'नी पुर अ़ज़्म थे)। येह जिहाद बिल क़ल्ब में से है जो कि जिहाद के चार मरातिब में से एक है। वोह चार मरातिब येह हैं: क़ल्ब (से जिहाद); ज़बान (से जिहाद); माल (से जिहाद) और बदन (के साथ जिहाद)। ह़दीषे मुबारका में भी है: मुशरिकों से (दा'वते इलल ह़क़ देने के लिये) अपनी ज़बानों, (उन की ख़ैर ख़्वाही के लिये) अपने दिलों और उन की तालीफ़े क़ल्ब के लिये) अपने अम्वाल के साथ जिहाद करो।

10. قَالَ ابْنُ حَجَرٍ الْعَسْقَلَانِيُّ (م 852هـ) فِي صَدَدِ لَفْظِ الْجِهَادِ:

وَالْجِهَادُ بِكَسْرِ الْجِيْمِ، أَصْلُهُ لُغَةً الْمَشَقَّةُ. يُقَالُ: جَهَدْتُ جِهَادًا بَلَغْتُ الْمَشَقَّةَ. وَيُطْلَقُ أَيْضًا عَلٰى مُجَاهَدَةِ النَّفْسِ وَالشَّيْطَانِ وَالْفُسَّاقِ. فَأَمَّا مُجَاهَدَةُ النَّفْسِ فَعَلٰى تَعَلُّمِ أُمُورِ الدِّينِ، ثُمَّ عَلَى الْعَمَلِ بِهَا، ثُمَّ عَلٰى تَعْلِيْمِهَا. وَأَمَّا مُجَاهَدَةُ الشَّيْطَانِ فَعَلٰى دَفْعِ مَا يَأْتِي بِهِ مِنَ الشُّبُهَاتِ، وَمَا

(1) ابن القيم في زاد المعاد، ٣/٥٧١.

يُزَيِّنُهُ مِنَ الشَّهَوَاتِ. وَأَمَّا مُجَاهَدَةُ الْكُفَّارِ فَتَقَعُ بِالْيَدِ وَالْمَالِ وَاللِّسَانِ وَالْقَلْبِ. وَأَمَّا مُجَاهَدَةُ الْفُسَّاقِ فَبِالْيَدِ ثُمَّ اللِّسَانِ ثُمَّ الْقَلْبِ.[1]

हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी (मुतवफ़्फ़ा 852 हिजरी) लफ़्ज़ 'जिहाद' के हवाले से लिखते हैं:

लफ़्ज़ 'जिहाद' जीम की कसरा के साथ है और लुग़वी ए'तेबार से इस का ह़क़ीक़ी मा'ना 'मशक़्क़त' है। कहा जाता है: جَهَدْتُ جِهَادًا (मैं ने बड़ी मशक़्क़त उठाई)। इस का इत़्लाक़ नफ़्स, शैत़ान और ना फ़रमानों से जिहाद करने पर भी होता है। नफ़्स से जिहाद उमूरे दीनिय्या का सीखना और फिर उन पर अमल पैरा होना है। और फिर उन उमूर की (दूसरों को भी) ता'लीम देना है और शैत़ान से जिहाद उस की त़रफ़ से पैदा होने वाले शुब्हात और उस की सजाई हुई शॅहवात से दूरी इख़्तियार करना है। कुफ़्फ़ार से जिहाद हाथ, माल, ज़बान और दिल से होता है। जबकि ना फ़रमानों से जिहाद हाथ, फिर ज़बान से और फिर दिल से होता है।

(1) العسقلاني في فتح الباري، ٦/٣.

अल बाबुष्षालिष

اَلْجِهَادُ بِالنَّفْسِ

﴾जिहाद बिन्नफ़्स﴿

अल क़ुरआन

(1) وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝

(العنکبوت، ۲۹/٦)

जो शख़्स (राहे ह़क़ में) जिद्दो ज़ॅहद करता है वोह अपने ही (नफ़्अ़ के) लिये तगो दौ करता है, बेशक अल्लाह तमाम जहानों (की त़ाअ़तों, कोशिशों और मुजाहदों) से बे नियाज़ है।

(2) وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

(العنکبوت، ۲۹/٦۹)

और जो लोग हमारे ह़क़ में जिहाद (या'नी मुजाहदा) करते हैं तो हम यक़ीनन उन्हें अपनी (त़रफ़ से सैर और वुसूल की) राहें दिखा देते हैं, और बेशक अल्लाह साह़िबाने एह़सान को अपनी मइय्यत से नवाज़ता है।

अल ह़दीष

(1) مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ الأَمَّارَةَ فَهُوَ الْمُجَاهِدُ الْحَقِيْقِيُّ

﴿नफ़्से अम्मारा के ख़िलाफ़ जिहाद करने वाला ह़क़ीक़ी मुजाहिद है﴾

1/5-1. عَنْ فُضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: اَلْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَابْنُ حِبَّانَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هٰذَا حَدِيْثٌ حَسَنٌ صَحِيْحٌ.

हज़रत फ़ुज़ाला बिन उ़बैद رضي الله عنه बयान करते हैं: मैं ने रसूलुल्लाह صلى الله عليه وعلى آله وسلم को येह फ़रमाते हुवे सुना: (बड़ा) मुजाहिद वोह है जो अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद करता है।

इस ह़दीष को इमाम अह़मद ने, तिरमिज़ ने मज़्कूरा अल्फ़ाज़ के साथ और इब्ने ह़िब्बान ने रिवायत किया है। इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: येह ह़दीष ह़सन सह़ीह़ है।

(2) عَنْ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: أَوَّلُ مَا تُنْكِرُوْنَ مِنْ جِهَادِكُمْ أَنْفُسَكُمْ.

ذَكَرَهُ ابْنُ رَجَبٍ الْحَنْبَلِيُّ فِي جَامِعِ الْعُلُوْمِ وَالْحِكَمِ.

1: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٦/ ٢٠، الرقم/ ٢٣٩٩٦، والترمذي في السنن، كتاب فضائل الجهاد، ب ما جاء في فضل من مات مرابطًا، ٤/ ١٦٥، الرقم/ ١٦٢١، والبزار في المسند، ٢/ ١٥٦، الرقم/ ٣٧٥٣، والحاكم في المستدرك، ٢/ ١٥٦، الرقم/ ٢٦٣٧، وابن حبان في الصحيح، ١٠/ ٤٨٤، الرقم/ ٤٦٢٤، والطبراني في المعجم الكبير، ١٨/ ٢٥٦، الرقم/ ٦٤١، وأبو عوانة في المسند، ٤/ ٤٩٦، الرقم/ ٧٤٦٣، والبيهقي في الزهد الكبير/ ١٦٣، الرقم/ ٣٦٩.

2: ابن رجب الحنبلي في جامع العلوم والحكم/ ١٩٦.

सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رضي الله عنه फ़रमाते हैं: (अगले ज़मानों में) सब से पॅहले तुम जिस चीज़ का इन्कार करोगे वोह जिहाद बिन्नफ़्स होगा।

इसे इब्ने रजब अल ह़न्बली ने 'जामिइ़ल उ़लूमि वल ह़िकम' में बयान किया है।

(3) قَالَ الإِمَامُ ابْنُ بَطَّالٍ فِي شَرْحِ صَحِيْحِ الْبُخَارِيِّ: قَالَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَوَّلُ مَا تَفْقِدُوْنَ مِنْ دِيْنِكُمْ جِهَادُ أَنْفُسِكُمْ.

इमाम इब्ने बत़्ताल 'शरहु़ सही़हु़ल बुख़ारी' में लिखते हैं: सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رضي الله عنه ने फ़रमाया: सब से पॅहले तुम्हारे दीन (पर अ़मल करने) में जो चीज़ मफ़्क़ूद (या'नी तर्क) हो जाएगी वोह तुम्हारा अपने नुफ़ूस के ख़िलाफ़ जिहाद है।

(4) عَنْ حَنَّانَ بْنِ خَارِجَةَ، قَالَ: قُلْتُ: يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ، مَا تَقُوْلُ فِي الْهِجْرَةِ وَالْجِهَادِ؟ قَالَ: ابْدَأْ بِنَفْسِكَ، فَاغْزُهَا؛ وَابْدَأْ بِنَفْسِكَ، فَجَاهِدْهَا.

رَوَاهُ الطَّيَالِسِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ وذَكَرَهُ ابْنُ رَجَبٍ الْحَنْبَلِيُّ فِي جَامِعِ الْعُلُوْمِ وَالْحِكَمِ وَالْمِزِّيُّ فِي التَّهْذِيْبِ وَالْعَسْقَلَانِيُّ فِي الْمَطَالِبِ.

3: ابن بطال في شرح صحيح البخاري، كتاب الرقاق، ب من جاهد نفسه في طاعة ا ، ١٠ /٢١٠-٢١١.

4: أخرجه الطيالسي في المسند /٣٠٠، الرقم /٢٢٧٧، والبيهقي في الزهد الكبير، ١٦٢-١٦٣، الرقم /٣٦٨، وذكره ابن رجب الحنبلي في جامع العلوم والحكم /١٩٦، وأيضا في شرح حديث لبيک /١٢٨، والمزي في تهذيب الكمال، ٧ /٤٢٦، وابن حجر العسقلاني في المطالب العالية، ٩ /٢٣٨، الرقم /١٩٢٨.

ह़न्नान बिन ख़ारिजा बयान करते हैं: मैं ने अ़र्ज़ किया: ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर! आप का हिजरत और जिहाद के बारे में क्या मौक़िफ़ है? उन्हों ने जवाब दिया: उसे अपने नफ़्स से शुरूअ़ कर और उस से जंग कर; फिर अपने नफ़्स से शुरूअ़ कर और उस से जिहाद कर।

इसे इमाम त़यालिसी और बैहक़ी ने रिवायत किया है और इब्ने रजब अल ह़म्बली ने 'जामिइ़ल उ़लूमि वल ह़िकम' में, मिज़्ज़ी ने 'तहज़ीबुल कमाल' में जबकि अ़स्क़लानी ने 'अल मत़ालिबुल आ़लिया' में बयान किया है।

(5) قَالَ الإِمَامُ سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ: إِنَّمَا عَدُوُّكَ نَفْسُكَ الَّتِي بَيْنَ جَنْبَيْكَ. فَقَاتِلْ هَوَاكَ أَشَدَّ مِمَّا تُقَاتِلُ عَدُوَّكَ.

ذَكَرَهُ الإِمَامُ ابْنُ بَطَّالٍ فِي شَرْحِ صَحِيْحِ الْبُخَارِيِّ.

इमाम शुफ़्यान षौरी कॅहते हैं: बेशक तुम्हारा दुश्मन वोही नफ़्स है जो तुम्हारे पॅहलूओं के दरमियान है। तुम अपने दुश्मन के साथ जंग से भी बढ़ कर अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के साथ जंग करो।

इसे इमाम इब्ने बत़्ताल ने 'शरह़ु सह़ीह़ुल बुख़ारी' में बयान किया है।

5: ابن بطال في شرح صحيح البخاري، كتاب الرقاق، ب من جاهد نفسه في طاعة ا ، ١٠ /٢١٠.

اَلْجِهَادُ بِالنَّفْسِ هُوَ الْجِهَادُ الْأَكْبَرُ (2)

﴾जिहाद बिन्नफ़्स, जिहादे अक्बर है﴿

2/6. عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَدِمَ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ قَوْمٌ غُزَاةٌ، فَقَالَ: قَدِمْتُمْ خَيْرَ مَقْدَمٍ مِنَ الْجِهَادِ الْأَصْغَرِ إِلَى الْجِهَادِ الْأَكْبَرِ. قِيْلَ: وَمَا الْجِهَادُ الْأَكْبَرُ؟ قَالَ: مُجَاهَدَةُ الْعَبْدِ هَوَاهُ.

رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي الزُّهْدِ وَالْخَطِيْبُ الْبَغْدَادِيُّ وَابْنُ عَسَاكِرَ.

हज़रत जाबिर رضي الله عنه रिवायत करते हैं: रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم के पास ग़ाज़ियों की एक जमाअत हाज़िर हुई। आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: तुम्हें जिहादे अस्ग़र (जिहाद बिस्सैफ़) से जिहादे अक्बर (जिहाद बिन्नफ़्स) की तरफ़ लौट कर आना मुबारक हो। अर्ज़ किया गया: जिहादे अक्बर क्या है? आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: इन्सान का अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद करना जिहादे अक्बर है।

इसे इमाम बैहक़ी ने 'अज़्ज़ुहदुल कबीर' में और ख़तीब बग़दादी व इब्ने अ़साकिर ने रिवायत किया है।

6: أخرجه البيهقي في الزهد الكبير /١٦٥، الرقم /٣٧٣، والخطيب البغدادي في ريخ بغداد، ١٣ /٥٢٣، وابن عساكر في ريخ مدينة دمشق، ٦ /٤٣٨، وذكره ابن رجب الحنبلي في جامع العلوم والحكم /١٩٦، والمزي في تهذيب الكمال، ٢ /١٤٤، والسيوطي في شرح سنن ابن ماجة، ١ /٢٨٢، الرقم /٣٩٣٤.

3/10-7. **وَفِي رِوَايَةٍ لِلْغَزَالِيِّ فِي الإِحْيَاءِ**: قَالَ نَبِيُّنَا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ لِقَوْمٍ قَدِمُوْا مِنَ الْجِهَادِ: مَرْحَبًا بِكُمْ! قَدِمْتُمْ مِنَ الْجِهَادِ الأَصْغَرِ إِلَى الْجِهَادِ الأَكْبَرِ. قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَمَا الْجِهَادُ الأَكْبَرُ؟ قَالَ: جِهَادُ النَّفْسِ.

इमाम ग़ज़ाली की 'अल इह्या' में बयान कर्दा रिवायत के अल्फ़ाज़ कुछ यूँ हैं: हमारे नबिय्ये मुकर्रम ﷺ ने जंग से वापस आने वाली क़ौम से फ़रमाया: तुम्हें ख़ुश आमदीद कि तुम जिहादे अस्ग़र से जिहादे अक्बर की त़रफ़ लौटे हो। अ़र्ज़ किया गया: या रसूलल्लाह! जिहादे अक्बर क्या है? फ़रमाया नफ़्सनी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद।

(8) قَالَ إِبْرَاهِيْمُ بْنُ أَبِي عَلْقَمَةَ لِقَوْمٍ جَاءُوْا مِنَ الْغَزْوِ: قَدْ جِئْتُمْ مِنَ الْجِهَادِ الأَصْغَرِ، فَمَا فَعَلْتُمْ فِي الْجِهَادِ الأَكْبَرِ؟ قَالُوْا: وَمَا الْجِهَادُ الأَكْبَرُ؟ قَالَ: جِهَادُ الْقَلْبِ.

ذَكَرَهُ ابْنُ رَجَبٍ الْحَنْبَلِيُّ فِي جَامِعِ الْعُلُوْمِ وَالْحِكَمِ.

इब्राहीम बिन अबी अ़ल्क़मा ने जंग से वापस आने वाले ग़ाज़ियों से कहा: तुम लोग जिहादे अस्ग़र से वापस लौटे हो, अब (देखना येह है कि तुम ने) जिहादे अक्बर में क्या किया?। उन्हों ने काहा: येह जिहादे अक्बर क्या है? इब्राहीम बिन अबी अ़ल्क़मा ने जवाब दिया: क़ल्बी जिहाद (जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ किया जाता है)।

7: الغزالي في إحياء علوم الدين، ٣ /٦٦.

8: ابن رجب الحنبلي في جامع العلوم والحكم /١٩٦.

इसे इब्ने रजब ह़न्बली ने 'जामिइ़ल उ़लूमि वल ह़िकम' में बयान किया है।

(9) قَالَ الإِمَامُ ابْنُ الْمُقَفَّعِ: أَعْظَمُ الْجِهَادُ جِهَادُ الْمَرْئِ نَفْسَهُ.

ذَكَرَهُ الإِمَامُ الرَّاغِبُ الأَصْفَهَانِيُّ فِي الْمُحَاضَرَاتِ.

इमाम इब्ने मुक़फ़्फ़अ़ कॅहते हैं: सब से बड़ा जिहाद इन्सान का अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद है।

इसे इमाम राग़िब अल अस्फ़हानी ने 'मुहाज़रातुल उदबा' में बयान किया है।

(10) قَالَ الإِمَامُ ابْنُ بَطَّالٍ فِي شَرْحِ صَحِيْحِ الْبُخَارِيِّ: جِهَادُ الْمَرْءِ نَفْسَهُ هُوَ الْجِهَادُ الأَكْمَلُ.

ذَكَرَهُ الْعَيْنِيُّ فِي الْعُمْدَةِ وَابْنُ حَجَرٍ الْعَسْقَلَانِيُّ فِي الْفَتْحِ.

इमाम इब्ने बत्ताल 'शरह़ु सह़ीह़ुल बुख़ारी' में कॅहते हैं: इन्सान का अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद ही कामिल तरीन जिहाद है।

9: أبو القاسم الاصفهاني في محاضرات الاد ء ومحاورات الشعراء والبلغاء، ١ /٦١٣.

10: ابن بطال في شرح صحيح البخارى، كتاب الرقاق، ب من جاهد نفسه في طاعة ا ، ١٠ /٢١٠، والعيني في عمدة القاري شرح صحيح البخاري، كتاب الرقاق، ب من جاهد نفسه في طاعة ا ، ٢٣ /٨٧، وابن حجر العسقلاني في فتح الباري شرح صحيح البخاري، كتاب الرقاق، ب من جاهد نفسه في طاعة ا ، ١١ /٣٣٨.

इसे इमाम बदरुद्दीन अल अ़ैनी ने 'उ़म्दतुल क़ारी' में और हाफ़िज़ इब्ने ह़जर अल अ़स्क़लानी ने 'फ़त्ह़ुल बारी ' में बयान किया है।

4/11. **عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ:** قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: مَا تَعُدُّونَ الصُّرَعَةَ فِيكُمْ؟ قَالَ: قُلْنَا: الَّذِي لَا يَصْرَعُهُ الرِّجَالُ. قَالَ: لَيْسَ بِذٰلِكَ، وَلٰكِنَّهُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَاللَّفْظُ لِمُسْلِمٍ.

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِيَ اللهُ عَنْهُ **रिवायत करते हैं** कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया: तुम पहलवान किसे समझते हो? रावी बयान करते हैं: हम ने अ़र्ज़ किया: जिसे लोग पछाड़ न सकें। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ ने (येह सुन कर) फ़रमाया: पहलवान वोह शख़्स नहीं है बल्कि पहलवान वोह है जो ग़ुस्से के वक़्त अपने नफ़्स पर क़ाबू रख सके (या'नी अपने ग़ैज़ो ग़ज़ब को ज़ब्त कर के नफ़्स को पछाड़ दे)।

येह ह़दीष मुत्तफ़क़ अ़लैह है जबकि अल्फ़ाज़ मुस्लिम के हैं।

11: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب الأدب، ب الحذر من الغضب، ٥/ ٢٢٦٧، الرقم /٥٧٦٣، ومسلم في الصحيح، كتاب البر والصلة والآداب، ب فضل من يملك نفسه عند الغضب، ٤ /٢٠١٤، الرقم /٢٦٠٩، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ /٣٨٢، الرقم /٣٦٢٦، وأبو داود في السنن، كتاب الأدب، ب من كظم غيضا، ٤ /٢٤٨، الرقم /٤٧٧٩، وابن حبان في الصحيح، ٧ /٢١٤، الرقم /٢٩٥٠، وابن أبي شيبة في المصنف، ٥ /٢١٦، الرقم /٢٥٣٧٨، وأبو يعلى في المسند، ٩ /٩٦، الرقم /٥١٦٢، والبيهقي في السنن الكبرى، ٤ /٦٨، الرقم /٦٩٣٧، وأيضا ١٠ /٢٣٥، الرقم /٢٠٨٧٤.

5/12. وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ : لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصُّرَعَةِ، إِنَّمَا الشَّدِيدُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الْغَضَبِ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ فِي السُّنَنِ الْكُبْرٰى وَمَالِكٌ.

और इमाम बुख़ारी की बयान कर्दा रिवायत के अल्फ़ाज़ कुछ यूँ हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: पहलवान वोह शख़्स नहीं जो लोगों को पछाड़ दे, पहलवान वोह है जो ग़ुस्से के वक़्त ख़ुद को क़ाबू में रख सके।

इसे इमाम बुख़ारी, अह़मद, नसाई ने 'अस्सुननुल कुबरा' में और मालिक ने रिवायत किया है।

6/13. عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: سَأَلْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ : أَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: أَنْ تُجَاهِدَ نَفْسَكَ وَهَوَاكَ فِي ذَاتِ اللهِ عَزَّوَجَلَّ.

12: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب الأدب، ب الحذر من الغضب، ٥/ ٢٢٦٧، الرقم /٥٧٦٣، وأحمد بن حنبل في المسند، ٢ /٢٣٦، ٢٦٨، ٥١٧، الرقم /٧٢١٨، ٧٦٢٨، ١٠٧١٣، والنسائي في السنن الكبرى، ٦ /١٠٥، الرقم /١٠٢٢٦، ١٠٢٢٨، ومالک في الموطأ، كتاب حسن الخلق، ب ما جاء في الغضب، ٢ /٩٠٦، الرقم /١٦١٣، وعبد الرزاق في المصنف، ١١ /١٨٨، الرقم / ٢٠٢٨٧، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠ /٢٤١، الرقم /٢٠٩١٥، والطبراني في مسند الشاميين، ٣ /٢٥، الرقم /١٧٣٠، وأيضا ٤ /١٨٤، الرقم /٣٠٦٦.

13: أخرجه أبونعيم الأصبهاني في حلية الأولياء وطبقات الاصفياء، ٢/ ٢٤٩، والقزويني في التدوين في أخبار قزوين، ٣ /١٣٣، وابن عساكر في ريخ مدينة دمشق، ٤٨/ ٤٢٩، والسيوطي في جمع الجوامع المعروف ب:

رَوَاهُ أَبُوْ نُعَيْمٍ وَالْقَزْوِيْنِيُّ وَابْنُ عَسَاكِرَ.

हज़रत अबू ज़र्र ग़िफ़ारी ﵁ बयान करते हैं: मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ ने अ़र्ज़ किया: कौन सा जिहाद सब से बेहतर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: येह कि तू नफ़्स और ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद करे।

इसे इमाम अबू नुऐ़म, क़ज़्वीनी और इब्ने अ़साकिर ने रिवायत किया है।

7/15-14. **وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ:** قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ : **أَفْضَلُ الْجِهَادِ أَنْ يُجَاهِدَ الرَّجُلَ نَفْسَهُ فِي اللهِ وَهَوَاهُ.**

رَوَاهُ ابْنُ النَّجَّارِ كَمَا قَالَ السُّيُوْطِيُّ وَالْهِنْدِيُّ وَالْمُنَاوِيُّ.

और हज़रत अबू ज़र्र ग़िफ़ारी ﵁ से ही मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: बेहतरीन जिहाद येह है कि इन्सान राहे ख़ुदा में अपने नफ़्स और उस की शॅहवात के ख़िलाफ़ रियाज़त व मुज़ाहदा करे।

इसे इब्ने नज्जार ने रिवायत किया है जैसा कि इमाम सुयूत़ी, हिन्दी और मुनावी ने कहा है।

الجامع الكبير، ١/ ٧٤٥، الرقم /١٣٧ /٣٨٠٧، والهندي في كنز العمال في سنن الأقوال والأفعال، ٤ /١٨٥، الرقم /١١٢٦٥، وصححه الألباني في سلسلة الأحاديث الصحيحة، ٣/ ٤٨٣، الرقم /١٤٩٦.

14: أخرجه ابن النجار كما قال السيوطي في جامع الأحاديث، ٢/ ١٣-١٤، الرقم /٣٥٠١، والمناوي في فيض القدير، ٢/ ٣١، وصححه الألباني في سلسلة الأحاديث الصحيحة، ٣/ ٤٨٣، الرقم /١٤٩٦.

(15) قَالَ الْمُلَّا عَلِيُّ الْقَارِيُّ الْحَنَفِيُّ فِي شَرْحِ هٰذَا الْحَدِيْثِ:

وَهُوَ الْجِهَادُ الأَكْبَرُ، الَّذِي يَتَرَتَّبُ عَلَيْهِ الْجِهَادُ الأَصْغَرُ، وَمِنْهُ كَلِمَةُ الْحَقِّ عِنْدَ ظَالِمٍ لِلْخَلْقِ.

मुल्ला अ़ली क़ारी ह़नफ़ी इस ह़दीष की शरह़ में फ़रमाते हैं:

और (हवाए नफ़्सानी के ख़िलाफ़) येह (मुजाहदा) ही जिहादे अक्बर है जिस पर जिहादे अस़्ग़र (जिहाद बिस्सैफ़) के नताइज व षमरात का इन्ह़ेसार है। मख़्लूक़ पर ज़ुल्म ढाने वाले ह़ुक्मरान के सामने कलिमए ह़क़ कॅहना भी इसी जिहाद में से है।

8/23-16. عَنِ ابْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ: أَفْضَلُ الْجِهَادِ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ فِي ذَاتِ اللهِ عزوجل.

رَوَاهُ الْحَكِيْمُ التِّرْمِذِيُّ وَالْمَرْوَزِيُّ وَرَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ كَمَا قَالَ الْهِنْدِيُّ وَذَكَرَهُ الْمُنَاوِيُّ.

ह़ज़रत इब्ने अ़म्र رضي الله عنه **बयान करते हैं:** कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: बेहतरीन जिहाद उस शख़्स का है जिस ने अल्लाह तआ़ला की राह में अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ मुजाहदा किया।

15: الملا علي القاري في شرح مسند أبي حنيفة، ب أفضل الجهاد /٣٧١.

16: أخرجه الحكيم الترمذي في نوادر الأصول في أحاديث الرسول صَلَّى ُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ، ٢ /٢٣٤، والمروزي في تعظيم قدر الصلاة، ٢ /٥٩٦، الرقم /٦٣٤، والطبراني كما قال الهندي في كنز العمال، ١٥ /٣٦٣، الرقم /٤٣٤٢٧، وذكره المناوي في فيض القدير، ٢ /٤٩، وأيضا في التيسير بشرح الجامع الصغير، ١ /١٨٨.

इसे ह़कीम तिरमिज़ी और मरवज़ी ने और इमाम त़बरानी ने रिवायत किया है जैसा कि हिन्दी ने कहा है। जबकि इमाम मुनावी ने भी बयान किया है।

(17) قَالَ الْحَسَنُ: أَفْضَلُ الْجِهَادِ مُخَالَفَةُ الْهَوٰى.

ذَكَرَهُ الْبَغَوِيُّ فِي الْمَعَالِمِ وَأَبُو الْمُظَفَّرِ السَّمْعَانِيُّ فِي التَّفْسِيْرِ.

इमाम ह़सन बसरी رضي الله عنه फ़रमाते हैं: ख़्वाहिशाते नफ़्स की मुख़ालफ़त करना अफ़्ज़ल तरीन जिहाद है।

इसे इमाम बग़वी ने 'मआ़लिमुत्तन्ज़ील' में और अबू मुज़फ़्फ़र सम्आ़नी ने 'तफ़्सीरुल क़ुरआन' में बयान किया है।

(18) عَنْ أَبِي الْحَسَنِ الْمَدَائِنِيِّ، قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلْحَسَنِ: يَا أَبَا سَعِيْدٍ، أَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: جِهَادُكَ هَوَاكَ.

ذَكَرَهُ ابْنُ الْجَوْزِيِّ فِي الذَّمِّ.

अबुल ह़सन अल मदाइनी बयान करते हैं कि एक शख़्स ने इमाम ह़सन बसरी رضي الله عنه से अ़र्ज़ किया: ऐ अबू सई़द! कौन सा जिहाद बेहतरीन है? आप ने फ़रमाया: तुम्हारा अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद करना।

इसे अ़ल्लामा इब्नुल जौज़ी ने 'ज़म्मुल हवा' में बयान किया है।

17: البغوي في معالم التنزيل، ٣/ ٤٧٥، والسمعاني في تفسير القرآن، ٤/ ١٩٤.

18: ابن الجوزي في ذم الهوى /٤٨، الرقم /٥٠.

(19) عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ، قَالَ: قِيْلَ لِعُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيْزِ: أَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: جِهَادُ الْهَوٰى.

ذَكَرَهُ الدَّيْنَوَرِيُّ فِي الْمُجَالَسَةِ.

इमाम इब्नुल मुबारक बयान करते हैं कि ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رضي الله عنه से सवाल किया गया: कौन सा जिहाद बेहतरीन है? आप ने जवाब दिया: नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद करना।

इसे इमाम अबू बक्र दैनवरी मालिकी ने 'मुजालिसतु व जवाहिरुल उ़लूम' में बयान किया है।

(20) قَالَ أَحْمَدُ بْنُ عَاصِمٍ الأَنْطَاكِيُّ: أَفْضَلُ الْجِهَادِ مُجَاهَدَتُكَ نَفْسَكَ.

رَوَاهُ أَبُو نُعَيْمٍ فِي الْحِلْيَةِ وَابْنُ الْجَوْزِيِّ فِي صِفَةِ الصَّفْوَةِ.

इमाम अह़मद बिन आ़सिम अल अन्त़ाक़ी का क़ौल है: बेहतरीन जिहाद तुम्हारी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ तुम्हारा मुजाहदा है।

इसे इमाम अबू नुऐ़म ने **ह़िल्यतुल औलिया** में और इब्नुल जौज़ी ने **सिफ़तुस्सफ़वा** में बयान किया है।

19: الدينوري في مجالسة وجواهر العلوم /٣٣٥، الرقم /١٩٦٣.

20: أبو نعيم في حلية الأولياء وطبقات الأصفياء، ٩ /٢٨٣، وابن الجوزي في صفة الصفوة، ٤ /٢٧٨.

(21) **قَالَ بَعْضُهُمْ**: أَفْضَلُ الْجِهَادِ مُجَاهَدَةُ النَّفْسِ أَنْ تُجَاهِدَ نَفْسَکَ عَنِ الْحَرَامِ عَمَّا نَهَى اللهُ عزوجل وَعَنْ هَوَاکَ.

رَوَاهُ ابْنُ عَسَاكِرَ فِي التَّارِيْخِ.

बा'ज़ अइम्मा का क़ौल है: बेहतरीन जिहाद नफ़्स का मुजाहदा है कि तू नफ़्स को ह़राम से मॅह़फ़ूज़ रखे जिस से अल्लाह तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमाया है और अपनी ख़्वाहिशात से बाज़ रखे।

इसे इमाम इब्ने अ़साकिर ने 'तारीख़ु दिमश्क़ल कबीर' में बयान किया है।

(22) **أَقَرَّ الْعَلاَّمَةُ ابْنُ الْقَيِّمِ بِأَنَّ الْجِهَادَ ضِدَّ النَّفْسِ أَصْلٌ لِلْجِهَادِ ضِدَّ الْعَدُوِّ:**

لِمَا كَانَ جِهَادُ أَعْدَاءِ اللهِ فِي الْخَارِجِ فَرْعًا عَلَى جِهَادِ الْعَبْدِ نَفْسَهُ فِي ذَاتِ اللهِ، كَمَا قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ: اَلْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ فِي طَاعَةِ اللهِ، وَالْمُهَاجِرُ مَا هَجَرَ مَا نَهَى اللهُ عَنْهُ، كَانَ جِهَادُ النَّفْسِ مُقَدَّمًا عَلَى جِهَادِ الْعَدُوِّ فِي الْخَارِجِ وَأَصْلاً لَهُ.

अ़ल्लामा इब्नुल क़य्यिम (691-751 हिजरी) नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद को दुश्मन के ख़िलाफ़ जिहाद की अस्ल क़रार देते हुवे कॅहते हैं:

21: ابن عساكر في ريخ مدينة دمشق، ٤٨ /٤٢٩.

22: ابن القيم في زاد المعاد، ٣ /٦.

ख़ारिज में दुश्मन के ख़िलाफ़ जिहाद, बन्दे का अल्लाह तआला की इताअत व बन्दगी में अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद ही की एक शाख़ है, जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया: 'मुजाहदा वोह है जो इताअते ख़ुदावन्दी में अपने नफ़्स से जिहाद करे और मुहाजिर वोह है जो अल्लाह की मन्अ़ की हुई चीज़ों को छोड़ दे।' लेहाज़ा नफ़्स से जिहाद ख़ारिज में दुश्मन से जिहाद पर मुक़द्दम है और येही उस की अस्ल है।

(23) قَالَ مَحْمُوْدٌ الآلُوْسِيُّ الْبَغْدَادِيُّ فِي صَدَدِ الْجِهَادِ بِالنَّفْسِ:

مُجَاهَدَةُ النَّفْسِ وَهِيَ أَكْبَرُ مِنْ مُجَاهَدَةِ الْعَدُوِّ الظَّاهِرَةِ كَمَا يُشْعِرُ بِهِ مَا أَخْرَجَ الْبَيْهَقِيُّ وَغَيْرُهُ عَنْ جَابِرٍ، قَالَ: قَدِمَ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ قَوْمٌ غُزَاةٌ، فَقَالَ: قَدِمْتُمْ خَيْرَ مَقْدَمٍ مِنَ الْجِهَادِ الْأَصْغَرِ إِلَى الْجِهَادِ الْأَكْبَرِ. قِيْلَ: وَمَا الْجِهَادُ الْأَكْبَرُ؟ قَالَ: مُجَاهَدَةُ الْعَبْدِ هَوَاهُ.

अ़ल्लामा महमूद आलूसी अल बग़दादी (मुतवफ़्फ़ा 1270 हिजरी) जिहाद बिन्नफ़्स के हवाले से फ़रमाते हैं:

जिहाद बिन्नफ़्स दुश्मन से ज़ाहिरी जिहाद करने से बड़ा जिहाद है, जिस तरह कि उस हदीष से मा'लूम होता है जिसे इमाम बैहक़ी और दीगर मुहद्दीषीन ने हज़रत जाबिर رضي الله عنه से रिवायत किया है। उन्हों ने फ़रमाया: 'एक गुरोह जिहाद की किसी मुहिम से वापस आया तो आप ﷺ ने उन के लिये इरशाद फ़रमाया: तुम्हारा जिहादे अस्ग़र से जिहादे अक्बर की

23: الآلوسي في روح المعاني في تفسير القرآن العظيم والسبع المثاني، ١٧/ ٢٠٩

तरफ़ लौटना बाइ़षे ख़ैर व बरकत हो। अ़र्ज़ किया गया: जिहादे अक्बर क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: बन्दे का अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद करना।

अल बाबुर्राबिअ

اَلْجِهَادُ بِالْعِلْمِ

﴿जिहाद बिल.इल्म﴾

1/1. **عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ:** سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: مَنْ جَاءَ مَسْجِدِي هٰذَا لَمْ يَأْتِهِ إِلَّا لِخَيْرٍ يَتَعَلَّمُهُ أَوْ يُعَلِّمُهُ فَهُوَ بِمَنْزِلَةِ الْمُجَاهِدِ فِي سَبِيْلِ اللهِ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَةَ وَاللَّفْظُ لَهُ وَابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَأَبُوْ يَعْلٰى وَالْبَيْهَقِيُّ.

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ बयान करते हैं: मैं ने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم को फ़रमाते हुवे सुना: जो मेरी इस मस्जिद में सिर्फ़ ख़ैर के लिये इल्म सीखने या उसे सिखाने के लिये आया तो वोह अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले मुजाहिद के मक़ाम व मरतबा पर है।

इसे इमाम अहमद ने, इब्ने माजा ने मज़कूरा अल्फ़ाज़ में और इब्ने अबी शैबा, अबू या'ला और बैहक़ी ने रिवायत किया है।

2/2. **عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ:** قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ

1: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٢ /٤١٨، الرقم /٩٤٠٩، وابن ماجة في السنن، المقدمة، ب فضل العلماء والحث على طلب العلم، ١ /٨٢، الرقم /٢٢٧، وابن أبي شيبة في المصنف عن أبي الدرداء رضى عنه مثله، ٧ /١١٥، الرقم /٣٤٦١٦، وأبو يعلى في المسند، ١١ /٣٥٩، الرقم /٦٤٧٢، والبيهقي في شعب الإيمان، ٢ /٢٦٣، الرقم /١٦٩٨، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ١ /٥٩، الرقم /١٤٦، والكناني في مصباح الزجاجة، ١ /٣١، الرقم /٨٣.

2: أخرجه ابن عبد البر في جامع بيان العلم وفضله، ١ /١١٥، الرقم /٢٠٢، والديلمي في مسند الفردوس، ٢ /٤١، الرقم /٢٢٣٧، والربيع في المسند، ١/ ٣٠، الرقم /٢٢، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ١ /٥٢، الرقم /١٠٧، والحاجي خليفة في كشف الظنون، ١ /١٨، والقنوجي في أبجد العلوم، ١ /٩٢، وابن رجب الحنبلي في جامع العلوم والحكم /٢٣٥.

وَسَلَّمَ: تَعَلَّمُوا الْعِلْمَ، فَإِنَّ تَعَلُّمَهُ لِلّٰهِ خَشْيَةٌ، وَطَلَبَهُ عِبَادَةٌ، وَمُذَاكَرَتَهُ تَسْبِيْحٌ، وَالْبَحْثَ عَنْهُ جِهَادٌ، وَتَعْلِيْمَهُ لِمَنْ لَا يَعْلَمُهُ صَدَقَةٌ، وَبَذْلَهُ لِأَهْلِهِ قُرْبَةٌ، لِأَنَّهُ مَعَالِمُ الْحَلَالِ وَالْحَرَامِ.

رَوَاهُ ابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ وَالدَّيْلَمِيُّ وَالرَّبِيْعُ وَذَكَرَهُ الْمُنْذِرِيُّ.

हज़रत मुआज़ बिन जबल رضي الله عنه बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: इल्म ह़ासिल करो, क्यूँकि इस का सीखना अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा करता है, इस का त़लब करना इ़बादत है, इस का मुज़ाकरा तस्बीह़ है, इस की जुस्तजू में लगे रॅहना जिहाद है, बे इ़ल्म को इ़ल्म सिखाना सदक़ा है और जो इस का अहल हो उस पर माल ख़र्च करना (अल्लाह के) क़ुर्ब का बाइ़ष है, क्यूँकि इ़ल्म ह़लाल व ह़राम (में इम्तियाज़) के लिये निशाने राह है।

इसे इमाम इब्ने अ़ब्दुल बर्र, दैलमी और रबीअ़ ने रिवायत किया है और मुन्ज़िरी ने बयान किया है।

3/29-1. **عَنْ قُرَيْشٍ، عَنْ عَامِرٍ، قَالَ:** كَانَ فِدَاءُ أَهْلِ بَدْرٍ أَرْبَعِيْنَ أُوْقِيَةً أَرْبَعِيْنَ أُوْقِيَةً. فَمَنْ لَمْ يَكُنْ عِنْدَهُ عَلَّمَ عَشَرَةً مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ الْكِتَابَةَ؛ فَكَانَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ مِمَّنْ عَلَّمَ.

رَوَاهُ ابْنُ سَعْدٍ فِي الطَّبَقَاتِ.

हज़रत क़ुरैश, आ़मिर से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने फ़रमाया: बद्र के क़ैदियों का फ़िदया चालीस चालीस ऊक़िय्या था। जो फ़िदया अदा

1: ابن سعد في الطبقات الكبرى، ٢ /٢٢.

नहीं कर सकता था उस ने (ह़स्बे फ़ैसला) दस मुसलमानों को लिखना सिखा दिया। ह़ज़रत ज़ैद बिन षाबित अन्सारी رضی اللہ عنہ उन्ही (सह़ाबा) में से थे जिन्हें (बत़ौरे फ़िदया) लिखना सिखाया गया।

इसे इमाम इब्ने सा'द ने 'अत़्त़बक़ातुल कुबरा' में रिवायत किया है।

इस्लाम में जिहाद बिल इ़ल्म की अहिम्मय्यत का अन्दाज़ा यहाँ से लगाया जा सकता है कि ग़ज़्वए बद्र में क़ैद होने वाले सत्तर (70) क़ैदियों के साथ सुलूक के बारे में आप صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم के सामने कई options थें मगर आप صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم ने ए'लान किया कि जो फ़िदया अदा नहीं कर सकता वोह दस मुसलमानों को लिखना सिखा दे तो येही उस का फ़िदया ransom money तसव्वुर होगा।

(2) **قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: أَفْضَلُ الْجِهَادِ مَنْ بَنٰى مَسْجِدًا، يُعَلِّمُ فِيْهِ الْقُرْآنَ وَالْفِقْهَ وَالسُّنَّةَ.**

ذَكَرَهُ الْقُرْطُبِيُّ فِي التَّفْسِيْرِ وَابْنُ أَبِي يَعْلٰى فِي الطَّبَقَاتِ.

ह़ज़रत (अ़ब्दुल्लाह) बिन अ़ब्बास رضی اللہ عنہما फ़रमाते हैं: बेहतरीन जिहाद उस शख़्स का है जिस ने मस्जिद ता'मीर की ताकि उस में क़ुरआन मजीद और फ़िक़्ह व सुन्नत की ता'लीम दी जाए (या'नी इ़ल्मे सह़ीह़ को फ़ुरोग़ दिया जाए)।

2: القرطبي في الجامع لأحكام القرآن، ٨/ ٢٩٦، وابن أبي يعلى في طبقات الحنابلة، ٢/ ٢٢٥.

इसे इमाम क़ुरतुबी ने तफ़्सीर 'अल जामिउ़ लिल अह़कामिल क़ुरआन' में और इब्ने अबी या'ला ने 'त़बक़ातुल ह़नाबिला' में बयान किया है।

(3) **قَالَ الْفُضَيْلُ بْنُ عِيَاضٍ فِي تَفْسِيْرِ الآيَةِ:** ﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا﴾ [العنكبوت، 29/ 69]: وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِي طَلَبِ الْعِلْمِ لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَ الْعَمَلِ بِهِ.

ذَكَرَهُ الْبَغَوِيُّ فِي الْمَعَالِمِ.

इमाम फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ इस आयते मुबारका - ﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا﴾ 'और जो लोग हमारे ह़क़ में जिहाद (या'नी मुजाहदा) करते हैं तो हम यक़ीनन उन्हें अपनी (त़रफ़ से सैर और वुसूल की) राहें दिखा देते हैं' - की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं: इस से मुराद है कि ह़ुसूले इ़ल्म में मुजाहदा करते हैं, हम उन्हें उस पर अ़मल की राहें दिखा देते हैं।

इसे इमाम बग़वी ने 'मआ़लिमुत्तन्ज़ील' में बयान किया है।

(4) **سُئِلَ الإِمَامُ سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ:** أَيُّهُمَا أَفْضَلُ: اَلْجِهَادُ أَمْ تَعْلِيْمُ الْقُرْآنِ؟ فَرَجَّحَ تَعْلِيْمَ الْقُرْآنِ فِي الثَّوَابِ وَالْفَضْلِ عَلَى الْجِهَادِ فِي سَبِيْلِ اللهِ.

3: البغوي في معالم التنزيل، ٣/ ٤٧٥.

4: محمد أحمد إسماعيل المقدم في تفسير القران الكريم، ١/ ٢.

ذَكَرَهُ مُحَمَّدٌ أَحْمَدُ إِسْمَاعِيْلُ الْمُقَدَّمُ فِي التَّفْسِيْرِ.

इमाम सुफ़्यान षौरी से एक बार सवाल किया गया: दोनों में से अफ़्ज़ल क्या है: जिहाद या क़ुरआन की ता'लीम देना। तो इमाम सुफ़्यान षौरी ने षवाब और फ़ज़ीलत के ए'तेबार से ता'लीमे क़ुरआन को जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह पर तरजीह़ दी।

इसे मुह़म्मद अह़मद इस्माईल अल मुक़द्दम ने 'तफ़्सीरुल क़ुरआनिल करीम' में बयान किया है।

अल बाबु ख़ामिस

اَلْجِهَادُ بِالْعَمَلِ

﴾जिहाद बिल अ़मल﴿

اَلْجُهْدُ ضِدَّ الظُّلْمِ وَالتَّعَدِّي هُوَ الْجِهَادُ بِالْعَمَلِ (1)

﴾ज़ुल्म व जब्र के ख़िलाफ़ जिद्दो जॅहद जिहाद बिल अ़मल है﴿

1/1. **عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ** رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ قَالَ: مَا مِنْ نَبِيٍّ بَعَثَهُ اللهُ فِي أُمَّةٍ قَبْلِي إِلاَّ كَانَ لَهُ مِنْ أُمَّتِهِ حَوَارِيُّوْنَ وَأَصْحَابٌ. يَأْخُذُوْنَ بِسُنَّتِهِ وَيَقْتَدُوْنَ بِأَمْرِهِ. ثُمَّ إِنَّهَا تَخْلُفُ مِنْ بَعْدِهِمْ خُلُوْفٌ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ وَيَفْعَلُوْنَ مَا لَا يُؤْمَرُوْنَ. فَمَنْ جَاهَدَهُمْ بِيَدِهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَمَنْ جَاهَدَهُمْ بِلِسَانِهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَمَنْ جَاهَدَهُمْ بِقَلْبِهِ فَهُوَ مُؤْمِنٌ. وَلَيْسَ وَرَاءَ ذٰلِكَ مِنَ الْإِيْمَانِ حَبَّةُ خَرْدَلٍ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَابْنُ حِبَّانَ.

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رضی اللہ عنہ **से मरवी है** कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला ने मुझ से पॅहले जिस उम्मत में जो भी नबी भेजा उस नबी के लिये उस की उम्मत में से कुछ मददगार और रुफ़क़ा होते थे जो अपने नबी के त़रीक़ पर कारबन्द होते और उस के उमरा की इक़्तेदा करते थे। फिर उन सह़ाबा के बा'द कुछ ना ख़लफ़ और ना फ़रमान

1: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب الإيمان، ب بيان كون النهي عن المنكر من الإيمان، ١ /٦٩، الرقم /٥٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ١ /٤٥٨، الرقم /٤٣٧٩، وابن حبان في الصحيح، ١٤ /٧١، الرقم /٦١٩٣، وأبو عوانة في المسند، ١ /٣٦، والطبراني في المعجم الكبير، ١٠ /١٣، الرقم /٩٧٨٤، والبيهقي في السنن الكبرى، ١٠ /٩٠، الرقم /١٩٩٦٥، وأيضًا في شعب الإيمان، ٦ /٨٦، الرقم /٧٥٦٠.

लोग पैदा हुए जिन्हों ने अपने फ़े'ल के ख़िलाफ़ क़ौल और क़ौल के ख़िलाफ़ फ़े'ल किया (या'नी दूसरों पर ज़ुल्म व सितम किया)। लेहाज़ा जिस शख़्स ने अपने हाथ के साथ (ज़ुल्म के ख़िलाफ़) उन से जिहाद किया वोह भी मोमिन है, जिस ने अपनी ज़बान से उन के ज़ुल्म के ख़िलाफ़ जिहाद किया वोह भी मोमिन है और जिस ने अपने दिल से उन के ज़ुल्म के ख़िलाफ़ जिहाद किया वोह भी मोमिन है। इस के बा'द राई के दाने बराबर भी ईमान का कोई दरजा नहीं है।

इसे इमाम मुस्लिम, अह़मद और इब्ने ह़िब्बान ने रिवायत किया है।

2/1. عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، **قَالَ**: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ: **أَفْضَلُ الْجِهَادِ كَلِمَةُ عَدْلٍ عِنْدَ سُلْطَانٍ جَائِرٍ أَوْ أَمِيرٍ جَائِرٍ**.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَة.[1]

ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुदरी رضي الله عنه **से मरवी है** कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وعلى آله وسلم ने फ़रमाया: ज़ालिम बादशाह या ज़ालिम ह़ुक्मरान के सामने इन्साफ़ की बात कॅहना अफ़ज़ल जिहाद है।

इसे इमाम इब्ने अह़म बिन ह़न्बल, अबू दावूद, तिरमिज़ी, नसाई और इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

1: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٤ /٣١٥، الرقم /١٨٨٥٠، وأبو داود في السنن، كتاب الملاحم، ب الأمر والنهي، ٤ /١٢٣، الرقم /٤٣٤٤، والترمذي في السنن، كتاب الفتن، ب ما جاء أفضل الجهاد كلمة عدل عند سلطان جائر، ٤ /٤٧١، الرقم /٢١٧٤، والنسائي في السنن، كتاب البيعة، ب فضل من تكلم لحق عند إمام جائر، ٧ /١٦١، الرقم /٤٢٠٩، وابن ماجة في السنن، كتاب الفتن، ب الأمر لمعروف والنهي عن المنكر، ٢ /١٣٢٩، الرقم /٤٠١١.

3/2. **وَفِي رِوَايَةِ طَارِقٍ** رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ: أَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: أَفْضَلُ الْجِهَادِ كَلِمَةُ حَقٍّ عِنْدَ إِمَامٍ جَائِرٍ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ الْجَعْدِ.

और हज़रत तारिक़ (बिन शिहाब) رضي الله عنه से मरवी है कि एक शख़्स हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلى الله عليه وآله وسلم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा: कौन सा जिहाद अफ़्ज़ल है? आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: ज़ालिम हाकिम के सामने कलिमए हक़ कॅहना अफ़्ज़ल तरीन जिहाद है।

इसे इमाम अहमद, नसाई और इब्नुल जा'द ने रिवायत किया है।

4/3. **عَنْ أَبِي أُمَامَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ:** عَرَضَ لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ عِنْدَ الْجَمْرَةِ الْأُولَى، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ، أَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ؟ فَسَكَتَ عَنْهُ، فَلَمَّا رَأَى الْجَمْرَةَ الثَّانِيَةَ سَأَلَهُ، فَسَكَتَ عَنْهُ. فَلَمَّا رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ وَضَعَ رِجْلَهُ فِي الْغَرْزِ لِيَرْكَبَ. قَالَ: أَيْنَ السَّائِلُ؟ قَالَ: أَنَا، يَا رَسُولَ اللهِ. قَالَ: كَلِمَةُ حَقٍّ عِنْدَ ذِي سُلْطَانٍ جَائِرٍ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالرُّوْيَانِي وَالْقُضَاعِيُّ.

:2 أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٤ /٣١٤، الرقم /١٨٨٤٨، النسائي في السنن، كتاب البيعة، ب فضل من تكلم لحق عند إمام جائر، ٧ /١٦١، الرقم /٤٢٠٩، وأيضا في السنن الكبرى، ٤ /٤٣٥، الرقم /٧٨٣٤، وابن الجعد في المسند /٤٨٠، الرقم /٣٣٢٦.

:3 أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب الفتن، ب الأمر لمعروف والنهي عن المنكر، ٢ /١٣٣٠، الرقم /٤٠١٢، والرو ني في المسند، ٢ /٢٧١، الرقم /١١٧٩، والقضاعي في مسند الشهاب، ٢ /٢٤٨، الرقم /١٢٨٨.

हज़रत अबू उमामा ؓ से मरवी है, वोह बयान करते हैं: रसूलुल्लाह ﷺ जमरए ऊला के क़रीब खड़े थे कि एक शख़्स आया और उस ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! कौन सा जिहाद अफ़्ज़ल है? आप ﷺ ख़ामोश रहे। जब उस शख़्स ने आप ﷺ को दूसरे जमरा के पास देखा तो दोबारा वोही सवाल किया। आप ﷺ फिर ख़ामोश रहे। जब तीसरे जमरा के क़रीब पहौंचे और उस की रमी फ़रमा चुके तो अपनी सवारी की रिकाब में पाओं रखते हुवे दर्याफ़्त फ़रमाया: सवाल करने वाला कहाँ है? उस ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मैं ह़ाज़िर हूँ। आप ﷺ ने फ़रमाया: ज़ालिम बादशाह के सामने कलिमए ह़क़ कॅहना (अफ़्ज़ल तरीन जिहाद) है।

इसे इमाम इब्ने माजा, रूयानी और क़ुज़ाई ने रिवायत किया है।

5/4. وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَجُلًا قَالَ عِنْدَ الْجَمْرَةِ: يَا رَسُولُ اللهِ، أَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: أَفْضَلُ الْجِهَادِ كَلِمَةُ حَقٍّ عِنْدَ سُلْطَانٍ جَائِرٍ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ فِي الْمُعْجَمَيْنِ.

हज़रत अबू उमामा ؓ से ही मरवी है कि जमरात के नज़्दीक एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! कौन सा जिहाद अफ़्ज़ल है? आप ﷺ नर फ़रमाया: ज़ालिम बादशाह के सामने कलिमए ह़क़ कॅहना अफ़्ज़ल तरीन जिहाद है।

इसे इमाम त़बरानी ने 'अल मु'जमुल कबीर' और 'अल मु'जमुल औसत़' में रिवायत किया है।

4: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٨/ ٢٨٢، الرقم/ ٨٠٨١، وأيضا في المعجم الأوسط، ٧/ ٥٢، الرقم/ ٦٨٢٤.

6/36-5. عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ: أَفْضَلُ الْجِهَادِ مَنْ أَصْبَحَ لَا يَهُمُّ بِظُلْمِ أَحَدٍ.

رَوَاهُ الدَّيْلَمِيُّ وَالْخَطِيبُ الْبَغْدَادِيُّ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا. وَذَكَرَهُ السُّيُوطِيُّ.

हज़रत अली رضي الله عنه से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: बेहतरीन जिहाद उस शख़्स का है जिस ने इस हाल में सुब्ह़ की कि वोह किसी पर ना रवा ज़ुल्म करने का इरादा न रखता हो।

इसे इमाम दैलमी ने और ख़त़ीब बग़दादी ने सय्यिदा आ़इशा رضي الله عنها से रिवायत किया है और इमाम सुयूत़ी ने बयान किया है।

(6) قَالَ الْحَكَمُ بْنُ عُتَيْبَةَ: أَفْضَلُ الْجِهَادِ وَالْهِجْرَةِ كَلِمَةُ عَدْلٍ عِنْدَ إِمَامٍ جَائِرٍ.

ذَكَرَهُ ابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ فِي التَّمْهِيدِ.

ह़कम बिन उ़तैबा का क़ौल है: बेहतरीन जिहाद और हिजरत ज़ालिम हुक्मरान के सामने इन्साफ़ की बात कॅहना है।

इसे इमाम इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने 'अत्तम्ह़ीद' में बयान किया है।

5: أخرجه الديلمي في مسند الفردوس، ١/ ٣٥٧، الرقم/ ١٤٣٨، والخطيب البغدادي في المتفق والمفترق، ٣/ ١٦٥٣، الرقم/ ١١٣٩، وذكره السيوطي في جامع الأحاديث، ٢/ ١٤، الرقم/ ٣٥٠٤.

6: ابن عبد البر في التمهيد لما في الموطأ من المعاني والأسانيد، ٨/ ٣٩٠.

اَلْجُهْدُ لِلصَّلَاحِ هُوَ الْجِهَادُ بِالْعَمَلِ (2)

(अख़्लाक़ी इस्लाह के लिये जिद्दो ज़ॅहद जिहाद बिल अ़मल है)

7/38-7. **عَنْ جَرِيْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ:** سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: مَا مِنْ رَجُلٍ يَكُوْنُ فِي قَوْمٍ يُعْمَلُ فِيْهِمْ بِالْمَعَاصِي يَقْدِرُوْنَ عَلٰى أَنْ يُغَيِّرُوْا عَلَيْهِ فَلَا يُغَيِّرُوْا إِلاَّ أَصَابَهُمُ اللهُ بِعَذَابٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَمُوْتُوا.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُوْ دَاوُدَ وَاللَّفْظُ لَهُ وَابْنُ مَاجَة وَابْنُ حِبَّانَ.

ह़ज़रत जरीर رضي الله عنه बयान करते हैं: मैं ने रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم को फ़रमाते हुवे सुना: जो शख़्स ऐसी क़ौम में रॅहता हो जिस में बुरे काम किये जाते हों और लोग उन को रोकने की क़ुदरत रखने के बा वुजूद न रोकते हों तो अल्लाह तआ़ला उन्हें उन की मौत से क़ब्ल अ़ज़ाब में मुब्तला कर देगा।

इस ह़दीष को इमाम अह़मद, अबू दावूद ने मज़्कूरा अल्फ़ाज़ के साथ, इब्न माजा और इब्ने ह़िब्बान ने रिवायत किया है।

7: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٤ /٣٦٤، الرقم /١٩٢٥٠، وأبو داود في السنن، كتاب الملاحم، ب الأمر والنهي، ٤ /١٢٢، الرقم /٤٣٣٩، وابن ماجه في السنن، كتاب الفتن، ب الأمر لمعروف والنهي عن المنكر، ٢ /١٣٢٩، الرقم /٤٠٠٩، وابن حبان في الصحيح، ١ /٥٣٦، الرقم /٣٠٠، والطبراني في المعجم الكبير، ٢ /٣٣٢، الرقم /٢٣٨٢.

(8) عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَفْضَلُ الْجِهَادِ الأَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ.

ذَكَرَهُ الثَّعْلَبِيُّ فِي الْكَشْفِ وَالرَّازِيُّ فِي التَّفْسِيْرِ وَأَبُو سَعُودٍ فِي إِرْشَادِ الْعَقْلِ السَّلِيْمِ وَالنَّسَفِيُّ فِي الْمَدَارِكِ وَالزَّمَخْشَرِيُّ فِي الْكَشَّافِ وَالرِّفَاعِيُّ فِي الْبُرْهَانِ الْمُؤَيِّدِ.

सय्यिदुना अ़ली رضي الله عنه से मरवी है: बेहतरीन जिहाद अमरु बिल मा'रूफ़ और नह्‌यु अ़निल मुन्कर का फ़रीज़ा अदा करना है।

इसे इमाम षा'लबी ने 'अल कश्फ़ु वल बयान' में, राज़ी ने 'अत्तफ़्सीरुल कबीर' में, अबू सऊ़द ने 'इरशादुल अ़क़्लिस्सलीम' में, नसफ़ी ने 'मदारिकुत्तन्ज़ील' में, ज़मख़शरी ने 'अल कश्शाफ़' में और रिफ़ाई ने 'अल बुरहानुल मुअय्यद' में बयान किया है।

(3) خِدْمَةُ الْوَالِدَيْنِ جِهَادٌ

﴾वालिदैन की ख़िदमत जिहाद है﴿

8: الثعلبي في الكشف والبيان عن تفسير القرآن، ٣ /١٢٣، والرازي في التفسير الكبير، ٨ /١٤٧، وأبو سعود في إرشاد العقل السليم إلى مزا القرآن الكريم، ٢/ ٦٨، والنسفي في مدارک التنزيل وحقائق التأويل، ١ /١٧١، والزمخشري في الكشاف عن حقائق غوامض التنزيل، ١ /٤٢٥، والرفاعي في البرهان المؤيد، ١ /١٠٣.

8/9. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: أَقْبَلَ رَجُلٌ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أُبَايِعُكَ عَلَى الْهِجْرَةِ وَالْجِهَادِ أَبْتَغِي الْأَجْرَ مِنَ اللهِ. قَالَ: فَهَلْ مِنْ وَالِدَيْكَ أَحَدٌ حَيٌّ؟ قَالَ: نَعَمْ، بَلْ كِلَاهُمَا حَيٌّ. قَالَ: فَتَبْتَغِي الْأَجْرَ مِنَ اللهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَارْجِعْ إِلَى وَالِدَيْكَ فَأَحْسِنْ صُحْبَتَهُمَا.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.

وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا: جَاءَ رَجُلٌ فَاسْتَأْذَنَهُ فِي الْجِهَادِ، فَقَالَ: أَحَيٌّ وَالِدَاكَ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: فَفِيْهِمَا فَجَاهِدْ.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र से मरवी है कि एख शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया: (या रसूलल्लाह!) मैं अज्र व षवाब के लिये आप से जिहाद और हिजरत की बैअत करना चाहता हूँ। आप ﷺ ने फ़रमाया: क्या तुम्हारे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है? उस ने अर्ज़ किया: जी हाँ, बल्कि दोनों ज़िन्दा हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया: क्या तू (वाक़ेई़) अल्लाह तआला से अज्र व षवाब चाहता है? उस ने अर्ज़ किया: जी हाँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: अपने वालिदैन के पास जा और हुस्ने ख़िदमत के साथ उन दोनों की सॉहबत इख़्तियार कर।

येह हदीष मुत्तफ़क़ अलैह है।

9: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب الأدب، ب لا يجاهد إلا ذن الأبوين، ٥ /٢٢٢٧، الرقم /٥٦٢٧، ومسلم في الصحيح، كتاب البر والصلة والآداب، ب بر الوالدين وأنهما أحق به، ٤ /١٩٧٥، الرقم /٢٥٤٩.

और बुख़ारी व मुस्लिम ही की रिवायत में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर जिहाद पर जाने की इजाज़त चाही। आप ﷺ ने फ़रमाया: तुम्हारे माँ बाप ज़िन्दा हैं? उस ने अ़र्ज़ किया: जी हाँ। आप ﷺ ने फ़रमाया: तू उन की ख़िदमत में (रॅह कर ही) जिहाद कर।

9/10. عَنْ جَاهِمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ أَسْتَشِيْرُهُ فِي الْجِهَادِ. **فَقَالَ** النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ: أَلَکَ وَالِدَانِ؟ **قُلْتُ**: نَعَمْ. **قَالَ**: إِلْزَمْهُمَا فَإِنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ أَرْجُلِهِمَا.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالطَّبَرَانِيُّ وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

ह़ज़रत जाहिमा رضي الله عنه **बयान करते हैं** कि मैं जिहाद के लिये रॅहनुमाई लेने की ख़ातिर ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने फ़रमाया: क्या तुम्हारे माँ बाप ज़िन्दा हैं? मैं ने अ़र्ज़ किया: जी हाँ (ज़िन्दा हैं)। आप ﷺ ने फ़रमाया: उन ही के साथ रहो कि जन्नत उन के पाओं तले है।

इसे इमाम नसाई और त़बरानी ने रिवायत किया है। इमाम हैषमी ने कहा है: इस के रिजाल षिक़ह हैं।

10: أخرجه النسائي في السنن، كتاب الجهاد، ب الرخصة في التخلف لمن له والدة، ٦ /١١، الرقم /٣١٠٤، والطبراني في المعجم الكبير، ٢ /٢٨٩، الرقم /٢٢٠٢، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ٣ /٢١٦، الرقم /٣٧٥٠، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٨/ ١٣٨ .وَ قَالَ: وَرِجَالُهُ الثِّقَاتُ.

بَذْلُ الْجُهْدِ فِي عِبَادَةِ اللهِ وَذِكْرِهِ جِهَادٌ (4)

﴾इबादत और ज़िक्रे इलाही में सई करना जिहाद है﴿

10/11. عَنْ أُمِّ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَتْ: أَتَيْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ، فَقُلْتُ: جَعَلَکَ اللهُ فِي الرَّفِيْقِ الأَعْلٰى مِنَ الْجَنَّةِ وَأَنَا مَعَکَ. وَقُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، عَلِّمْنِي عَمَلاً صَالِحًا أَعْمَلُهُ. فَقَالَ: أَقِيْمِي الصَّلَاةَ فَإِنَّهَا أَفْضَلُ الْجِهَادِ، وَاهْجُرِي الْمَعَاصِيَ فَإِنَّهَا أَفْضَلُ الْهِجْرَةِ، وَاذْكُرِي اللهَ کَثِيْرًا، فَإِنَّهُ أَحَبُّ الْأَعْمَالِ إِلَى اللهِ أَنْ تَلْقِيْنَهُ بِهِ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَابْنُ أَبِي الدُّنْيَا وَذَکَرَهُ الْمُنْذِرِيُّ وَالْهَيْثَمِيُّ.

ह़ज़रत उम्मे अनस رضي الله عنها बयान करती हैं: मैं ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صلى الله عليه وآله وسلم की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया: (मेरी तमन्ना है कि जब) अल्लाह तआ़ला आप को जन्नत में रफ़ीक़े आ'ला के मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाए तो मैं भी आप के साथ हूँ। फिर मैं ने अ़र्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे कोई नेक अ़मल बताएँ जो मैं करूँ ताकि जन्नत में आप के हमराह रहूँ। आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: नमाज़ क़ाइम करो कि येह बेहतरीन जिहाद है, और गुनाहों को तर्क कर दो कि येह सब से बेहतरीन हिजरत है, और अल्लाह का ज़िक्र कषरत से किया करो क्यूँकि अल्लाह की

11: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٢٥/ ١٤٩-١٥٠، الرقم/ ٣٥٩، وابن أبي الدنيا في الورع/ ٥٨، الرقم/ ٤٨، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٢٥٧، الرقم/ ٢٣١١، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١٠/ ٧٥، وابن حجر العسقلاني في المطالب العالية، ٣/ ٦١، الرقم/ ٢٢٣.

बारगाह में आप जितने भी आ'माले सालेह़ा पेश करती हैं उन में से ज़िक्र उसे सब से ज़ियादा पसन्द है।

इस ह़दीष को इमाम त़बरानी और इब्ने अबी अद्दुन्या ने रिवायत किया और मुन्ज़िरी व हैषमी ने बयान किया है।

11/44-12. وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهَا أَيْضًا: أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، أَوْصِنِي. قَالَ: اهْجُرِي الْمَعَاصِيَ فَإِنَّهَا أَفْضَلُ الْهِجْرَةِ، وَحَافِظِي عَلَى الْفَرَائِضِ فَإِنَّهَا أَفْضَلُ الْجِهَادِ، وَأَكْثِرِي مِنْ ذِكْرِ اللهِ فَإِنَّكِ لَا تَأْتِي اللهَ بِشَيْئٍ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ كَثْرَةِ ذِكْرِهِ.

رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ وَابْنُ شَاهِيْنٍ وَذَكَرَهُ الْهَيْثَمِيُّ.

ह़ज़रत अनस رضي الله عنه की वालिदा से मन्क़ूल एक और रिवायत में है: उन्हों ने रसूलुल्लाह صلى الله عليه وعلى آله وسلم की बारगाह में अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मुझे नसीह़त फ़रमाइये। आप صلى الله عليه وعلى آله وسلم ने फ़रमाया: गुनाहों (की वादी) से हिजरत कर क्यूँकि येह बेहतरीन हिजरत है, फ़राइज़ की ह़िफ़ाज़त कर क्यूँकि येह बेहतरीन जिहाद है और अल्लाह का ज़िक्र कषरत से कर क्यूँकि आप अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में कोई ऐसा अ़मल पेश नहीं कर सकतीं जो उसे अपने ज़िक्र की कषरत से ज़ियादा मह़बूब हो।

इसे इमाम त़बरानी और इब्ने शाहीन ने रिवायत किया है और हैषमी ने बयान किया है।

12: أخرجه الطبراني في المعجم الكبير، ٢٥/ ١٢٩، الرقم/ ٣١٣، والطبراني في المعجم الأوسط، ٧/ ٢١، الرقم/ ٦٧٣٥، وابن شاهين في الترغيب في فضائل الأعمال وثواب ذلک، ١/ ١٩٤، الرقم/ ١٦٣، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٢٥٧، الرقم/ ٢٣١١ والهيثمي في مجمع الزوائد، ٤/ ٢١٧-٢١٨، وأيضًا، ١٠/ ٧٥.

(13) رُوِيَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي تَفْسِيْرِ الآيَةِ: ﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا﴾ [العنكبوت، 29 /69]: وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِي طَاعَتِنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَ ثَوَابِنَا.

ذَكَرَهُ الْبَغَوِيُّ فِي الْمَعَالِمِ.

हज़रत (अ़ब्दुल्लाह) बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما से इस आयते मुबारका - ﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا﴾ "और जो लोग हमारे ह़क़ में जिहाद (या'नी मुजाहदा) करते हैं तो हम यक़ीनन उन्हें अपनी (त़रफ़ से सैर और वुसूल की) राहें दिखा देते हैं' - की तफ़्सीर में मरवी है: इस से मुराद है कि जो हमारी इत़ाअ़त में जिहाद और मुजाहदा करते हैं, हम उन्हें अज्र व षवाब की राहें दिखा देते हैं।

इसे इमाम बग़वी ने 'मआ़लिमुत्तन्ज़ील' में बयान किया है।

(14) قَالَ الْفُضَيْلُ بْنُ عِيَاضٍ: أَفْضَلُ الْجِهَادُ الْمُوَاظَبَةُ عَلَى الصَّلَوَاتِ.

ذَكَرَهُ ابْنُ عَسَاكِرَ فِي التَّارِيْخِ.

इमाम फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ बयान करते हैं: बेहतरीन जिहाद अदाएगिये नमाज़ पर मुदावमत इख़्तियार करना है।

इसे इब्ने अ़साकिर ने 'तारीख़ दिमश्क़' में बयान किया है।

13: البغوي في معالم التنزيل، ٣ /٤٧٥.

14: ابن عساكر في ريخ مدينة دمشق، ٤٨ /٤٢٩.

अल बाबुस्सादिस

اَلْجِهَادُ بِالْمَالِ

﴾जिहाद बिल माल﴿

अल क़ुरआन

(1) اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یُکَذِّبُ بِالدِّیْنِ ۝ فَذٰلِکَ الَّذِیْ یَدُعُّ الْیَتِیْمَ ۝ وَلَا یَحُضُّ عَلٰی طَعَامِ الْمِسْکِیْنِ ۝

(الماعون، ۱۰۷/۱-۳)

क्या आप ने उस शख़्स को देखा जो दीन को झुटलाता है? तो येह वोह शख़्स है जो यतीम को धक्के देता है (या'नी यतीमों की ह़ाजात को रद करता और उन्हें ह़क़ से मॅह़रूम रखता है)। और मॉह़ताज को खाना खिलाने की तरग़ीब नहीं देता (या'नी मुआ़शरे से ग़रीबों और मॉह़ताजों के मुआ़शी इस्तेह़साल के ख़ातिमे की कोशिश नहीं करता)।

(2) وَاَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰی ۝ وَکَذَّبَ بِالْحُسْنٰی ۝ فَسَنُیَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰی ۝

(اللیل، ۹۲/۸-۱۰)

और जिस शख़्स ने बुख़्ल किया और (राहे ह़क़ में माल ख़र्च करने से) बे परवाह रहा। और उस ने यूँ अच्छाई (या'नी दीने ह़क़ और आख़िरत) को झुटलाया। तो हम अ़न क़रीब उसे सख़्ती (या'नी अ़ज़ाब की त़रफ़ बढ़ने) के लिये सुहूलत फ़राहम कर देंगे (ताकि वोह तेज़ी से मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब ठॅहरे)।

(3) فَکُّ رَقَبَةٍ ۝ اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ یَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ۝ یَتِیْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝ اَوْ مِسْکِیْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝

(البلد، ۹۰/۱۳)

वोह (ग़ुलामी व मॅह्कूमी की ज़िन्दगी से) किसी गर्दन का आज़ाद कराना है। या भूक वाले दिन (या'नी क़ॅह्त व इफ़्लास के दौर में ग़रीबों और मॅह्रूमुल मईशत लोगों को) खाना खिलाना है (या'नी उन के मआशी तअत्तुल और इब्तेला को ख़त्म करने की जिद्दो जॅह्द करना है। क़राबत दार यतीम को। या शदीद ग़ुर्बत के मारे हुवे मॉह्ताज को जो मॅह्ज़ ख़ाक निशीन (और बे घर) है।

اَلْجِهَادُ بِالْمَالِ مُقَدَّمٌ عَلَى الْجِهَادِ بِالسَّيْفِ (1)

﴾जिहाद बिल माल, जिहाद बिस्सैफ़ से मुक़द्दम है﴿

अल क़ुरआन

(1) فَضَّلَ اللهُ الْمُجَاهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً.

(النساء،٤/٩٥)

अल्लाह ने अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करने वालों को बैठ रॅहने वालों पर मरतबे में फ़ज़ीलत बख़्सी है।

(2) اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللهِ.

(التوبة،٩/٢٠)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने अम्वाल और अपनी जानों से जिहाद करते रहे वोह अल्लाह की बारगाह में दरजे के लेहाज़ से बॉहत बड़े हैं।

(3) وَجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ط ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۝

(التوبة، ٤١/٩)

और अपने माल व जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम (ह़क़ीक़त) आश्ना हो।

(4) اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ط اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ۝

(الحجرات، ١٥/٤٩)

ईमान वाले तो सिर्फ़ वोह लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल (صلى الله عليه وعلى آله وسلم) पर ईमान लाए, फिर शक नें न पड़े और अल्लाह की राह में अपने अम्वाल और अपनी जानों से जिहाद करते रहे, येही वोह लोग हैं जो (दा'वाए ईमान में) सच्चे हैं।

(5) تُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۝

(الصف، ١١/٦١)

(वोह येह है कि) तुम अल्लाह पर और उस के रसूल (صلى الله عليه وعلى آله وسلم) पर (कामिल) ईमान रखो और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो, येही तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है अगर तुम जानते हो।

अल हदीष

1/1. عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَيُّ النَّاسِ أَفْضَلُ؟ فَقَالَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ : رَجُلٌ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللهِ بِمَالِهِ وَنَفْسِهِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ.

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ **बयान करते हैं** कि एक शख़्स ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم की ख़िदमत में आ कर अ़र्ज़ किया: लोगों में से कौन सा शख़्स अफ़्ज़ल है? आप صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ने फ़रमाया: (सब से बेहतरीन वोह है) जो शख़्स अल्लाह की राह में अपने माल और जान के साथ जिहाद करता है।

इस ह़दीस़ को इमाम मुस्लिम और अह़मद बिन ह़न्बल ने रिवायत किया है।

(2) رَفَاهِيَةُ النَّاسِ الْاِجْتِمَاعِيَةُ وَالْأُمُوْرُ الْخَيْرِيَةُ جِهَادٌ

﴿समाजी फ़लाह व बेहबूद और ख़ैराती उमूर जिहाद हैं﴾

अल क़ुरआन

1: أخرجه مسلم في الصحيح، كتاب الإمارة، ب فضل الجهاد والر ط، ٣/ ١٥٠٣، الرقم /١٨٨٨، وأحمد بن حنبل في المسند، ٣ /١٦، الرقم /١١١٤١، وابن حبان في الصحيح، ٢ /٣٦٩، الرقم /٦٠٦، والطبراني في مسند الشاميين، ٣ /٥٤، الرقم /١٧٩٣.

يَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ط قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ط وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝

(البقرة،٢/٢١٥)

आप से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें, फ़रमा दें जिस क़द्र भी माल ख़र्च करो (दुरुस्त है), मगर उस के ह़क़दार तुम्हारे माँ बाप हैं और क़रीबी रिश्तेदार हैं और यतीम हैं और मॉह़ताज हैं और मुसाफ़िर हैं, और जो नेकी भी तुम करते हो बेशक अल्लाह उसे ख़ूब जानने वाला है।

अल ह़दीष

2/2. عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ، **قَالَ:** اَلسَّاعِي عَلَى الْأَرْمَلَةِ وَالْمِسْكِيْنِ كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيْلِ اللهِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَاللَّفْظُ لِمُسْلِمٍ.

ह़ज़रत अ़बू हुरैरा رضي الله عنه **से मरवी है**कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: बेवा औ़रत और मिस्कीन के (कामों) के लिये कोशिश करने वाला राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाले की त़रह़ है।

2: أخرجه البخاري في الصحيح،كتاب النفقات، ب فضل النفقة على الأهل، ٥ /٢٠٤٧، الرقم /٥٠٣٨، وأيضًا فيكتاب الأدب، ب الساعي على الأرملة، ٥/ ٢٢٣٧، الرقم /٥٦٦٠، ومسلم في الصحيح، كتاب الزهد والرقائق، ب الإحسان إلى الأرملة والمسكين واليتيم، ٤ /٢٢٨٦، الرقم /٢٩٨٢، وأحمد بن حنبل فى المسند، ٢ /٣٦١، الرقم /٨٧١٧، والترمذي في السنن، كتاب البر والصلة، ب ما جاء في السعي على الأرملة واليتيم، ٤ /٣٤٦، الرقم /١٩٦٩، والنسائي في السنن، كتاب الزكاة، ب فضل الساعي على الأرملة، ٥ /٨٦، الرقم /٢٥٧٧، وابن ماجه في السنن، كتاب التجارة، ب الحث على المكاسب، ٢ /٧٢٤.

येह ह़दीष मुत्तफ़क़ अ़लैह है, मज़्कूरा अल्फ़ाज़ मुस्लिम के हैं।

3/3. عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ: مَنْ عَالَ ثَلَاثَةً مِنَ الْأَيْتَامِ كَانَ كَمَنْ قَامَ لَيْلَهُ، وَصَامَ نَهَارَهُ، وَغَدَا وَرَاحَ شَاهِرًا سَيْفَهُ فِي سَبِيْلِ اللهِ، وَكُنْتُ أَنَا وَهُوَ فِي الْجَنَّةِ أَخَوَيْنِ، كَهَاتَيْنِ أُخْتَانِ، وَأَلْصَقَ إِصْبَعَيْهِ السَّبَّابَةَ وَالْوُسْطَى.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه.

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضي الله عنهما बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: जिस शख़्स ने तीन यतीम बच्चों की कफ़ालत की वोह उस शख़्स जैसा है जो रात भर इ़बादत करता रहा, दिन में रोज़े रखता रहा और सुब्ह़ो शाम तल्वार ले कर अल्लाह की राह में जंग करता रहा। मैं और वोह शख़्स जन्नत में इस त़रह़ होंगे जैसे येह दो उँगलियाँ। फिर आप صلى الله عليه وآله وسلم ने दरमियानी उँगली और शहादत की उँगली को मिला कर दिखाया।

इस ह़दीष को इमाम इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

4/4. عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ: تَبَسُّمُكَ فِي وَجْهِ أَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ، وَأَمْرُكَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْيُكَ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ،

3: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب الأدب، ب حق اليتيم، ٢ /١٢١٣، الرقم /٣٦٨٠، والديلمي في مسند الفردوس، ٣ /٤٨٩، الرقم /٥٥٢٠، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ٣ /٢٣٥، الرقم /٣٨٣٤.

4: أخرجه الترمذي في السنن، كتاب البر والصلة، ب ما جاء في صنائع المعروف، ٤ /٣٣٩، الرقم /١٩٥٦، والبزار في المسند، ٩ /٤٥٧، الرقم /٤٠٧٠، وابن حبان في الصحيح، ٢ /٢٨٦، الرقم /٥٢٩، والبخاري

وَإِرْشَادُکَ الرَّجُلَ فِي أَرْضِ الضَّلَالِ لَکَ صَدَقَةٌ، وَبَصَرُکَ لِلرَّجُلِ الرَّدِيئِ الْبَصَرِ لَکَ صَدَقَةٌ، وَإِمَاطَتُکَ الْحَجَرَ وَالشَّوْکَةَ وَالْعَظْمَ عَنِ الطَّرِيْقِ لَکَ صَدَقَةٌ، وَإِفْرَاغُکَ مِنْ دَلْوِکَ فِي دَلْوِ أَخِيْکَ لَکَ صَدَقَةٌ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَزَّارُ وَابْنُ حِبَّانَ وَالْبُخَارِيُّ فِي الأَدَبِ.

हज़रत अबू ज़र्र رضي الله عنه **से मरवी है** कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وعلى آله وسلم ने फ़रमाया: तुम्हारा अपने मुसलमान भाई के सामने मुस्कुराना सदक़ा है, नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना सदक़ा है, भटके हुवे को सीधा रास्ता बताना सदक़ा है। रास्ते से पत्थर, काँटा और हड्डी (वग़ैरा) हटाना सदक़ा है। अपने डोल से दूसरे भाई के डोल में पानी डालना (भी) सदक़ा है।

इस ह़दीष को इमाम तिरमिज़ी, बज़्ज़ार, इब्ने ह़िब्बान और बुख़ारी ने 'अल अदबुल मुफ़रद' में रिवायत किया है।

5/5. وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ قَالَ: لَيْسَ مِنْ نَفْسِ ابْنِ آدَمَ إِلاَّ عَلَيْهَا صَدَقَةٌ فِي كُلِّ يَوْمٍ طَلَعَتْ فِيْهِ الشَّمْسُ. قِيْلَ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَمِنْ أَيْنَ لَنَا صَدَقَةٌ نَتَصَدَّقُ بِهَا؟ فَقَالَ: إِنَّ أَبْوَابَ الْخَيْرِ لَكَثِيْرَةٌ: التَّسْبِيْحُ وَالتَّحْمِيْدُ وَالتَّكْبِيْرُ وَالتَّهْلِيْلُ، وَالْأَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ،

في الأدب المفرد، ١/ ٣٠٧، الرقم/ ٨٩١، والطبراني في المعجم الأوسط، ٨/ ١٨٣، الرقم/ ٨٣٤٢، وابن رجب الحنبلي في جامع العلوم والحكم، ١/ ٢٣٥.

5: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٥/ ١٦٨، الرقم/ ٢١٥٢٢، والنسائي في السنن الكبرى، ٥/ ٣٢٥، الرقم/ ٩٠٢٧، وابن حبان في الصحيح، ٨/ ١٧١، الرقم/ ٣٣٧٧، والبيهقي في شعب الإيمان، ٦/ ١٠٦، الرقم/ ٧٦١٨، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ٣/ ٣٧٧، الرقم/ ٤٥٠٣، والهيثمي فى موارد الظمآن، ١/ ٢١٩، الرقم/ ٨٦٢.

وَتُمِيْطُ الْأَذٰى عَنِ الطَّرِيْقِ، وَتُسْمِعُ الْأَصَمَّ، وَتَهْدِي الْأَعْمٰى، وَتَدُلُّ الْمُسْتَدِلَّ عَلٰى حَاجَتِهٖ، وَتَسْعٰى بِشِدَّةِ سَاقَيْكَ مَعَ اللَّهْفَانِ الْمُسْتَغِيْثِ، وَتَحْمِلُ بِشِدَّةِ ذِرَاعَيْكَ مَعَ الضَّعِيْفِ. فَهٰذَا كُلُّهٗ صَدَقَةٌ مِنْكَ عَلٰى نَفْسِكَ.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ حِبَّانَ وَاللَّفْظُ لَهٗ.

हज़रत अबू ज़र्र رضي الله عنه **से ही मरवी है** कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: हर रोज़, जिस में सूरज निकलता है, हर इन्सान पर सदक़ा लाज़िम है। अ़र्ज़ किया गया: या रसूलल्लाह! हम सदक़े के लिये सामान कहाँ से लाएँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: नेकी के दरवाज़े कषीर हैं। سُبْحَانَ اللهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اللهُ أَكْبَرُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ कॅहना, नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना, रास्ते से किसी तक्लीफ़ देह ज़ीज़ को हटा देना, बॅहरे को बात सुनवाना, नाबीना को रास्ता बताना, राहनुमाई चाहने वाले को राहनुमाई देना, अपनी टाँगों से चल कर मज़्लूम फ़र्यादी की मदद करना और अपनी क़ुव्वते बाज़ू से ज़ईफ़ की मदद करना। येह सब तुम्हारी त़रफ़ से तुम्हारी जान का सदक़ा हैं।

इसे इमाम अह़मद और नसाई ने और इब्ने ह़िब्बान ने मज़्कूरा अल्फ़ाज़ के साथ रिवायत किया है।

6/51-6. عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ: اَلْجُلُوْسُ مَعَ الْفُقَرَاءِ مِنَ التَّوَاضُعِ وَهُوَ مِنْ أَفْضَلِ الْجِهَادِ.

6: أخرجه الديلمي في مسند الفردوس، ٢/ ١٢٤، الرقم/ ٢٦٤٦، وذكره السيوطي في جمع الجوامع المعروف بـ: الجامع الكبير، ٣/ ٦١٥، الرقم/ ٢١/ ١٠٤٢٤، والهندي في كنز العمال في سنن الأقوال والأفعال، ٦/ ٢٠٠، الرقم/ ١٦٥٨٥.

رَوَاهُ الدَّيْلَمِيُّ فِي الْمُسْنَدِ كَمَا قَالَ السُّيُوطِيُّ وَالْهِنْدِيُّ.

हज़रत अनस رضي الله عنه बयान करते हैं: रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: फ़ुक़रा और मसाकीन के हमराह बैठना अज्ज़ो इन्केसारी की अ़लामत है और येह अफ़्ज़ल तरीन जिहाद है।

इसे इमाम दैलमी ने 'मुस्नदुल फ़िरदौस' में रिवायत किया है जैसा कि इमाम सुयूत़ी और हिन्दी ने बयान किया है।

(7) **قَالَ إِسْمَاعِيْلُ الْحَقِّيُّ:** وَكَانَ طَاوُوْسٌ يَرَى السَّعْيَ عَلَى الْأَخَوَاتِ أَفْضَلَ مِنَ الْجِهَادِ فِي سَبِيْلِ اللهِ.

शैख़ इस्माईल अल ह़क़्क़ी फ़रमाते हैं: ह़ज़रत त़ावूस (मुस्तह़िक़) बॅहनों के लिये दौड़ धूप करने को जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह से भी अफ़्ज़ल क़रार देते थे।

7: إسماعيل الحقي في تفسير روح البيان، ١ /١٧٣.

اَجْرُ مُحْيِي السُّنَّةِ يَكُوْنُ مُسَاوِيًا لِاَجْرِ مِائَةٍ مِنَ الشُّهَدَاءِ

﴾इह़याए सुन्नत करने वाले का अज्र सौ शुहदा के अज्र के बराबर है﴿

1/1. **عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ:** قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ: **اَلْمُتَمَسِّكُ بِسُنَّتِي عِنْدَ فَسَادِ أُمَّتِي لَهُ أَجْرُ شَهِيْدٍ.**

رَوَهُ الطَّبَرَانِيُّ وَأَبُو نُعَيْمٍ. وَقَالَ الْمُنْذِرِيُّ: رَوَهُ الطَّبَرَانِيُّ بِإِسْنَادٍ لَا بَأْسَ بِهِ، وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رِجَالُهُ ثِقَاتٌ.

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم ने फ़रमाया: दौरे फ़ितन में जब उम्मत फ़साद का शिकार हो, मेरी सुन्नत को थामे रखने (या'नी मेरे तरीक़े कार और तर्ज़े ज़िन्दगी को षाबित क़दमी से अपनाए रखने) वाले के लिये शहीद के बराबर अज्र है।

इसे इमाम तबरानी और अबू नुऐम ने रिवायत किया है। इमाम मुन्ज़िरी ने फ़रमाया: इसे इमाम तबरानी ने सनदे सहीह के साथ रिवायत किया है। इमाम हैषमी ने फ़रमाया: इस के रावी षिक़ह हैं।

2/2. **وَفِي رِوَايَةٍ لِأَبِي نُعَيْمٍ:** عَنِ ابْنِ فَارِسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ، **وَقَالَ:** لَهُ أَجْرُ مِائَةِ شَهِيْدٍ.

इमाम अबू नुऐम की बयान कर्दा रिवायत में है कि हज़रत इब्ने फ़ारिस رضی اللہ عنہ ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم से इसी तरह रिवायत

1: اخرجه الطبراني في المعجم الاوسط، ٥ /٣١٥، الرقم: ٥٤١٤ .وابو نعيم في حلية الاولياء، ٨ /٢٠٠. والديلمي عن ابن عباس رضى تعالىٰ عنه في مسند الفردوس، ٤ /١٩٨، الرقم: ٦٦٠٨. وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ١ /٤١، الرقم :٦٥ .والهيثمي في مجمع الزوائد، ١ /١٧٢. والذهبي في ميزان الاعتدال، ٢ /٢٧٠. والعسقلاني في لسان الميزان، ٢ /٢٤٦، الرقم: ١٠٣٣.

2: اخرجه أبو نعيم في حلية الاولياء ، ٨ /٢٠٠. وذكره السيوطي في مفتاح الجنة، ١ /١٣.

किया है। (उस में है कि) आप ﷺ ने फ़रमाया: ऐसे षाबित क़दम रॅहने वाले शख़्स के लिये एक सौ शहीदों के बराबर षवाब है।

3/55-1. وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ: مَنْ تَمَسَّکَ بِسُنَّتِي عِنْدَ فَسَادِ أُمَّتِي فَلَهُ أَجْرُ مِائَةِ شَهِيْدٍ.

رَوَاهُ أَبُوْ نُعَيْمٍ وَالْبَيْهَقِيُّ وَالدَّيْلَمِيُّ. وَقَالَ ابْنُ عَدِيٍّ: وَأَرْجُو أَنَّهُ لَا بَأْسَ بِهِ.

एक रिवायत में हज़रत (अ़ब्दुल्लाह) बिन अ़ब्बास ؓ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जिस ने फ़ित्नों के दौर में मेरी सुन्नत को मज़्बूती से थामे रखा जबकि मेरी उम्मत फ़साद में मुब्तला हो चुकी होगी, उस के लिये एक सौ शहीद का षवाब है।

इसे इमाम अबू नुऐ़म, बैहक़ी और दैलमी ने रिवायत किया है। इमाम इब्ने अ़दी ने फ़रमाया: मुझे उम्मीद है कि इस की इस्नाद में कोई सक़म नहीं।

1: اخرجه أبو نعيم في حلية الاولياء، ٨ /٢٠٠، والبيهقي في كتاب الزهد الكبير، ٢ /١١٨، الرقم: ٢٠٧، والديلمي في مسند الفردوس، ٤ /١٩٨، الرقم :٦٦٠٨، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ١ /٤١، الرقم: ٦٥، والمزي في تهذيب الكمال، ٢٤/ ٣٦٤، وابن عدي عن ابن عباس رضى تعالىٰ عنه في الكامل، ٢ /٣٢٧، الرقم: ٤٦٠، والذهبي في ميزان الاعتدال، ٢ /٢٧٠.

(2) قَالَ الإِمَامُ سَهْلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ فِي تَفْسِيرِ الْيَةِ: ﴿وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا﴾ [العنكبوت، 29/ 69]: **وَالَّذِيْنَ جَهَدُوْا فِي إِقَامَةِ السُّنَّةِ لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَ الْجَنَّةِ.**

ذَكَرَهُ الْبَغَوِيُّ فِي الْمَعَالِمِ.

इमाम सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी भी इसी आयते मुबारका - ﴿وَالَّذِيْنَ جٰهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا﴾ 'और जो लोग हमारे ह़क़ में जिहाद (या'नी मुजाहदा) करते हैं तो हम यक़ीनन उन्हें अपनी (त़रफ़ से सैर और वुसूल की) राहें दिखा देते हैं' - की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं: इस से मुराद है कि जो सुन्नते नबवी को क़ाइम करने में जिद्दो ज़ॅहद और मुजाहदा करते हैं, हम उन्हें जन्नत की राहें दिखा देते हैं।

इसे इमाम बग़वी ने 'मुआ़लिमुत्तन्ज़ील' में बयान किया है।

2: البغوي في معالم التنزيل، ٣/ ٤٧٥.

अल   बाबुष्षामिन

حَجُّ بَيْتِ اللهِ تَعَالىٰ جِهَادٌ

﴿हज्जे बैतुल्लाह भी जिहाद है﴾

1/1. **عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، قَالَتْ**: اسْتَأْذَنْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ فِي الْجِهَادِ، **فَقَالَ**: جِهَادُكُنَّ الْحَجُّ. وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ الْوَلِيدِ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بِهٰذَا.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَأَحْمَدُ.

उम्मुल मुअ्मिनीन आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها **फ़रमाती हैं** कि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلى الله عليه وعلى آله وسلم से जिहाद की इजाज़त त़लब की तो आप صلى الله عليه وعلى آله وسلم ने फ़रमाया: तुम्हारा जिहाद ह़ज है। अ़ब्दुल्लाह बिन अल वलीद ने कहा: हमें सुफ़्यान ने ह़ज़रत मुआ़विया رضي الله عنه से भी इस त़रह़ रिवायत किया है।

इसे इमाम बुख़ारी और अह़मद ने रिवायत किया है।

2/2. **عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، أَنَّهَا قَالَتْ**: يَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ، نَرَى الْجِهَادَ أَفْضَلَ الْعَمَلِ، أَفَلَا نُجَاهِدُ؟ قَالَ: لَا، لٰكِنَّ أَفْضَلَ الْجِهَادِ حَجٌّ مَبْرُورٌ.

1: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب الجهاد والسير، ب جهاد النساء، ٣ /١٠٥٤، الرقم /٢٧٢٠، وأحمد بن حنبل في المسند، ٦ /١٦٥، الرقم /٢٥٣٦٤، وعبد الرزاق في المصنف، ٥ /٨، الرقم /٨٨١١، وإسحاق بن راهويه في المسند، ٢ /٤٤٧، الرقم /١٠١٥.

2: أخرجه البخاري في الصحيح، كتاب الحج، ب فضل الحج المبرور، ٢/ ٥٥٣، الرقم /١٤٤٨، وايضا في كتاب الجهاد والسير، ب فضل الجهاد والسير، ٣ /١٠٢٦، الرقم /٢٦٣٢، وابو يعلى في المسند، ٨ /١٦٦، الرقم /٤٧١٧، والبيهقي في السنن الكبرى، ٩/ ٢١، الرقم /١٧٥٨٣.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَاَبُو يَعْلٰى وَالْبَيْهَقِيُّ.

उम्मुल मुअ्मिनीन आइशा सिद्दीक़ा رضي الله عنها बयान करती हैं कि एक बार वोह अ़र्ज़ गुज़ार हुईं: या रसूलल्लाह! हम जिहाद को अफ़्ज़ल अ़मल समझते हैं तो क्या हम भी जिहाद किया करें? आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: अफ़्ज़ल जिहाद मक़्बूल ह़ज है (जो बुराइयों से पाक हो)।

इसे इमाम बुख़ारी, अबू या'ला और बैहक़ी ने रिवायत किया है।

3/1. **عَنْ اُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَتْ:** قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ: اَلْحَجُّ جِهَادُ كُلِّ ضَعِيْفٍ.

رَوَاهُ اَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَه وَابْنُ اَبِي شَيْبَةَ وَاَبُو يَعْلٰى وَابْنُ الْجَعْدِ وَالطَّبَرَانِيُّ.

ह़ज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: ह़ज हर कमज़ोर शख़्स का जिहाद है।

इसे इमाम अह़मद, इब्ने माजा, इब्ने अबी शैबा, अबू या'ला, इब्नुल जा'द और त़बरानी ने रिवायत किया है।

1: أخرجه احمد في المسند، ٦ /٢٩٤، ٣٠٣، ٣١٤، الرقم /٢٦٥٦٣، ٢٦٦٢٧، ٢٦٧١٦، وابن ماجه في السنن، كتاب المناسک، ب الحج جهاد النساء، ٢ /٩٦٨، الرقم /٢٩٠٢، وابن ابي شيبة في المصنف، ٣ /١٢٢، الرقم /١٢٦٥٦، وابو يعلى في المسند، ١٢ /٣٤٧، ٤٥٨، الرقم /٦٩١٦، ٧٠٢٩، وابن الجعد في المسند /٤٨٦، الرقم /٣٣٨٠، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٣ /٢٩٢، الرقم /٦٤٧.

4/2. **عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ** رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: اَلْحَجُّ جِهَادٌ وَالْعُمْرَةُ تَطَوُّعٌ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه وَالطَّبَرَانِيُّ.

हज़रत त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رضي الله عنهما **का बयान है** कि उन्हों ने रसूलुल्लाह صلى الله عليه وعلى آله وسلم को फ़रमाते हुवे सुना: ह़ज (मशक़्क़त में मिष्ले) जिहाद है और उ़मरा (षवाब में मिष्ले) नफ़्ल है।

इसे इमाम इब्ने माजा और त़बरानी ने रिवायत किया है।

5/3. **عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ** رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: جِهَادُ الْكَبِيْرِ وَالصَّغِيْرِ وَالضَّعِيْفِ وَالْمَرْأَةِ: اَلْحَجُّ وَالْعُمْرَةُ.

رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَذَكَرَهُ الْمَقْدِسِيُّ وَالْمَغْرِبِيُّ وَالْهَيْثَمِيُّ وَالسُّيُوطِيُّ وَالْهِنْدِيُّ.

وَقَالَ الْهَيْثَمِيُّ: رَوَاهُ أَحْمَدُ وَرِجَالُهُ رِجَالُ الصَّحِيْحِ.

हज़रत अबू हैरेरा رضي الله عنه **से मरवी है** कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلى الله عليه وعلى آله وسلم ने फ़रमाया: बड़े, छोटे, कमज़ोर और औ़रत का जिहाद 'ह़ज' और 'उ़मरा' है।

2: أخرجه ابن ماجه في السنن، كتاب المناسک، ب العمره، ٢ /٩٩٥، الرقم /٢٩٨٩، والطبراني في المعجم الأوسط، ٧ /١٧١، الرقم /٦٧٢٣.

3: اخرجه النسائي في السنن، كتاب مناسک الحج، ب فضل الحج، ٥/ ١١٣، الرقم /٢٦٢٦، وذكره المقدسي في الفروع، ١ /٤١٧، وابو عبد ا المغربي في مواهب الجليل، ٢ /٤٨٠، والهيثمي في مجمع الزوائد، ٣ /٢٠٦، والعيني في عمدة القاري، ٩ /١٣٤، والسيوطي في جامع الاحاديث، ٤ /٢٠٠، الرقم /١١٠٦٩، والهندي في كنز العمال في سنن الاقوال والافعال، ٥ /٧، الرقم /١١٨٤٥.

इसे इमाम नसाई ने रिवायत किया है जबकि मक़्दिसी, मग़रिबी, हैषमी, सुयूत़ी और हिन्दी ने भी बयान किया है। हैषमी ने फ़रमाया: इसे इमाम अह़मद ने रिवायत किया है और इस के रिजाल सह़ीह़ (मुस्लिम) के रिजाल हैं।

अल   बाबुत्तासिअ

ذِكْرُ اللهِ تَعَالٰى اَفْضَلُ مِنَ الْقِتَالِ فِي سَبِيْلِهٖ تَعَالٰى

﴾अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र क़िताल फ़ी सबीलिल्लाह से भी अफ़्ज़ल जिहाद है﴿

1/1. **عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ** رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ: أَيُّ الْعِبَادِ أَفْضَلُ دَرَجَةً عِنْدَ اللهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: اَلذَّاكِرُوْنَ اللهَ كَثِيْرًا وَالذَّاكِرَاتُ. قُلْتُ: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَمِنَ الْغَازِي فِي سَبِيْلِ اللهِ؟ قَالَ: لَو ضَرَبَ بِسَيْفِهِ فِي الْكُفَّارِ وَالْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يَنْكَسِرَ وَيَخْتَضِبَ دَمًا، لَكَانَ الذَّاكِرُوْنَ اللهَ أَفْضَلَ مِنْهُ دَرَجَةً.

رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ وَالْبَيْهَقِيُّ مُخْتَصَرًا.

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ رضي الله عنه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ से पूछा गया: (या रसूलल्लाह!) कौन से लोग क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के हाँ दरजे में अफ़ज़ल होंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: कषरत से अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले मर्द और कषरत से ज़िक्रे इलाही करने वाली औरतें। मैं ने अर्ज़ किा: या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले से भी (ज़ियादा)? आप ﷺ ने फ़रमाया: अगर कोई शख़्स अपनी तल्वार काफ़िरों और मुशरिकों पर इस क़द्र चलाए कि वोह टूट जाए और ख़ून आलूद हो जाए फिर भी अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले लोग उस से एक दरजा अफ़ज़ल हैं।

1: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣ /٧٥، الرقم /١١٧٣٨، والترمذي في السنن، كتاب الدعوات، ب منه (٥)، ٥ /٤٥٨، الرقم /٣٣٧٦، وأبو يعلى في المسند، ٢/ ٥٣٠، الرقم /١٤٠١، والبيهقي في شعب الإيمان، ١ /٤١٩، الرقم /٥٨٩، وذكره ابن رجب الحنبلي في جامع العلوم والحكم، ١ /٢٣٨، ٤٤٤، والمنذري في الترغيب والترهيب، ٢ /٢٥٤، الرقم /٢٢٩٦.

इसे इमाम अह़मद ने, तिरमिज़ी ने मज़्कूरा अल्फ़ाज़ के साथ और बैहक़ी ने मुख़्तसरन रिवायत किया है।

2/1. **عَنْ مُعَاذٍ** رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ: اَنَّ رَجُلًا سَاَلَهُ، فَقَالَ: اَيُّ الْجِهَادِ اَعْظَمُ اَجْرًا؟ قَالَ: اَكْثَرُهُمْ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى ذِكْرًا. قَالَ: فَاَيُّ الصَّائِمِيْنَ اَعْظَمُ اَجْرًا؟ قَالَ: اَكْثَرُهُمْ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى ذِكْرًا. ثُمَّ ذَكَرَ لَنَا الصَّلَاةَ وَالزَّكَاةَ وَالْحَجَّ وَالصَّدَقَةَ، كُلُّ ذٰلِكَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: اَكْثَرُهُمْ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى ذِكْرًا. فَقَالَ: اَبُوْ بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لِعُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: يَا اَبَا حَفْصٍ، ذَهَبَ الذَّاكِرُوْنَ بِكُلِّ خَيْرٍ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ: اَجَلْ.

رَوَاهُ اَحْمَدُ وَالطَّبَرَانِيُّ.

ह़ज़रत मुआ़ज़ رضي الله عنه ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صلى الله عليه وعلى آله وسلم से रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने आप صلى الله عليه وعلى آله وسلم से सवाल किया: कौन से जिहाद का सब से ज़ियादा अज्र है? आप صلى الله عليه وعلى آله وسلم नर फ़रमाया: उस बन्दे का जिहाद जो सब से ज़ियादा अल्लाह् तआ़ला का ज़िक्र करने वाला है, उस ने सवाल किया: किस रोज़ेदार का अज्र सब से ज़ियादा है? आप صلى الله عليه وعلى آله وسلم ने फ़रमाया: उन में से सब से ज़ियादा अल्लाह् तआ़ला का ज़िक्र करने वाले का। फिर ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صلى الله عليه وعلى آله وسلم ने हमारे लिये नमाज़, ज़कात, ह़ज और सदक़े का ज़िक्र किया और आप صلى الله عليه وعلى آله وسلم ने फ़रमाया: इन इ़बादात वालों में उस का अज्र सब से ज़ियादा होगा जो

1: أخرجه أحمد بن حنبل في المسند، ٣/ ٤٣٨، الرقم/ ١٥٦٩٩، والطبراني في المعجم الكبير، ٢٠/ ١٨٦، الرقم/ ٤٠٧، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٢٥٧، الرقم/ ٢٣٠٩، والهيثمي في مجمع الزوائد، ١/ ٧٤.

अल्लाह तआ़ला का सब से ज़ियादा ज़िक्र करने वाला होगा। फिर ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने ह़ज़रत उ़मर رضی اللہ عنہ से कहा: ऐ अबू ह़फ़्स! ज़िक्र करने वाले तमाम भलाई ले गए? तो ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم ने फ़रमाया: हाँ (या'नी येह सच है)।

इसे इमाम अह़मद और त़बरानी ने रिवायत किया है।

3/2. **وَفِي رِوَايَةِ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ:** قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ: مَا عَمِلَ ابْنُ آدَمَ عَمَلًا أَنْجٰى لَهُ مِنَ النَّارِ مِنْ ذِكْرِ اللهِ. قَالُوْا: يَا رَسُوْلَ اللهِ، وَلَا الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ؟ قَالَ: وَلَا الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ تَضْرِبُ بِسَيْفِكَ حَتّٰى يَنْقَطِعَ، ثُمَّ تَضْرِبُ بِسَيْفِكَ حَتّٰى يَنْقَطِعَ، ثُمَّ تَضْرِبُ بِهِ حَتّٰى يَنْقَطِعَ.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ وَعَبْدُ بْنُ حُمَيْدٍ.

एक रिवायत में ह़ज़रत मुआ़ज़ رضی اللہ عنہ ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم ने फ़रमाया: अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से ज़ियादा इब्ने आदम का कोई अ़मल उसे आग से नजात देने वाला नहीं। लोगों ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी नहीं? आप صلی اللہ علیہ وعلی آلہ وسلم ने फ़रमाया: नहीं, जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी नहीं, अगर्चे तू अपनी तल्वार से इस ह़द तक क़िताल करे कि वोह टूट जाए, तू दोबारा अपनी तल्वार के साथ क़िताल करे यहाँ तक कि वोह टूट जाए, तू इस के बा'द फिर अपनी तल्वार के साथ क़िताल करे यहाँ तक कि वोह टूट जाए (फिर भी नहीं, ज़िक्रे इलाही इस से कहीं ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श है)।

2: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٦/ ٥٧، الرقم/ ٢٩٤٥٢، وأيضًا في ٧/ ١٦٩، الرقم/ ٣٥٠٤٦، وعبد بن حميد في المسند، ١/ ٧٣، الرقم/ ١٢٧، وابن عبد البر في التمهيد، ٦/ ٥٧.

इसे इमाम इब्ने अबी शैबा और अ़ब्द बिन हुमैद ने रिवायत किया है।

4/3. **عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ** رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ كَانَ يَقُوْلُ: إِنَّ لِكُلِّ شَيْئٍ صِقَالَةً، وَإِنَّ صِقَالَةَ الْقُلُوبِ ذِكْرُ اللهِ، وَمَا مِنْ شَيْئٍ أَنْجٰى مِنْ عَذَابِ اللهِ مِنْ ذِكْرِ اللهِ. قَالُوْا: وَلَا الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ؟ قَالَ: وَلَوْ أَنْ تَضْرِبَ بِسَيْفِكَ حَتّٰى يَنْقَطِعَ.

رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ وَذَكَرَهُ الْمُنْذِرِيُّ وَاللَّفْظُ لَهُ.

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضي الله عنهما **से रिवायत है** कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلى الله عليه وآله وسلم फ़रमाया करते थे: हर चीज़ को चमकाने वाली कोई न कोई चीज़ होती है और दिलों को चमकाने वाली शै अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र है। अल्लाह तआ़ला के ज़ुक्र से बढ़ कर कोई चीज़ अ़ज़ाबे इलाही से नजात नहीं दिला सकती। सहाबए किराम رضي الله عنهم ने अ़र्ज़ किया: जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी नहीं? आप صلى الله عليه وآله وسلم ने फ़रमाया: (नहीं) अगर्चे तुम अपनी तल्वार चलाते रहो यहाँ तक कि वोह टूट जाए (या'नी ज़िक्र अ़ज़ाबे इलाही से जिहाद से भी बढ़ कर नजात दिलाने वाला है)।

इसे इमाम बैहक़ी ने रिवायत किया है। जबकि इमाम मुन्ज़िरी ने भी बयान किया है और मज़्कूरा अल्फ़ाज़ उन्ही के हैं।

3: أخرجه البيهقي في شعب الإيمان، ١/ ٣٩٦، الرقم/ ٥٢٢، وذكره المنذري في الترغيب والترهيب، ٢/ ٢٥٤، الرقم/ ٢٢٩٥، وابن القيم في الوابل الصيب، ١/ ٦٠، والمناوي في فيض القدير، ٢/ ٥١١.

5/70-4. عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ: اَكْثِرُوْا ذِكْرَ اللهِ، فَإِنَّهُ لَيْسَ شَيْئٌ اَحَبَّ إِلَى اللهِ وَلَا اَنْجَى لِلْعَبْدِ مِنْ حَسَنَةٍ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ مِنْ ذِكْرِ اللهِ، وَلَوْ اَنَّ النَّاسَ اجْتَمَعُوْا عَلَى مَا اَمَرُوْا بِهِ مِنْ ذِكْرِ اللهِ لَمْ نَكُنْ نُجَهِدُ فِي سَبِيْلِ اللهِ.

رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي الشُّعَبِ.

हज़रत मुआज़ बिन जबल رضي الله عنه से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلى الله عليه وعلى آله وسلم ने फ़रमाया: तुम कषरत से ज़िक्रे इलाही करो क्यूँकि अल्लाह तआला की बारगाह में कोई शै इस (या'नी ज़िक्रे इलाही) से ज़ियादा महबूब व मक़्बूल नहीं है और न ही कोई शै बन्दे को दुन्या व आख़िरत में अल्लाह तआला के ज़िक्र से बढ़ कर नजात दिलाने वाली है। अगर सारे लोग उस ज़िक्रे इलाही के लिये जम्अ़ हो जाएँ जिस का उन्हें हुक्म दिया गया है तो हम अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले न होते।

इसे बैहक़ी ने 'शुअ़बुल ईमान' में रिवायत किया है।

(5) عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: ذِكْرُ اللهِ الْغَدَاةَ وَالْعَشِيَّ اَعْظَمُ مِنْ حَطْمِ السُّيُوْفِ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَإِعْطَاءِ الْمَالِ سَحًّا.

رَوَاهُ ابْنُ اَبِي شَيْبَةَ وَابْنُ الْمُبَارَكِ.

4: أخرجه البيهقي في شعب الإيمان، ١ /٣٩٥، الرقم /٥٢١.

5: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٦ / ٥٨، الرقم /٢٩٤٥٦، وأيضًا، ٧ /١٧٠، الرقم /٣٥٠٤٧، وابن المبارک في الزهد، ١ /٣٩٤، الرقم /١١١٦، وابن عبد البر في التمهيد، ٦ /٥٩.

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ﷺ से मरवी है, उन्हों ने कहा: सुब्ह़ व शाम अल्लाह का ज़िक्र करना अल्लाह की राह में तल्वारों के तोड़ने और माल के बे दरेग़ ख़र्च करने से ज़ियादा अ़ज़ीम है।

इसे इमाम इब्ने अबी शैबा और इब्ने मुबारक ने रिवायत किया है।

(6) عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: لَذِكْرُ اللهِ فِي الْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ خَيْرٌ مِنْ حَطْمِ السُّيُوْفِ فِي سَبِيْلِ اللهِ.

رَوَاهُ الدَّيْلَمِيُّ.

हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते हैं: सुब्ह़ व शाम अल्लाह का ज़िक्र करना अल्लाह की राह में तल्वारें तोड़ने से ज़ियादा बेहतर है।

इसे इमाम दैलमी ने रिवायत किया है।

(7) عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ: لَوْ أَنَّ رَجُلَيْنِ يَحْمِلُ أَحَدُهُمَا عَلَى الْجِيَادِ فِي سَبِيلِ اللهِ وَالْآخَرُ يَذْكُرُ اللهَ. لَكَانَ أَفْضَلَ أَوْ أَعْظَمَ أَجْرًا الذَّاكِرُ.

6: أخرجه الديلمى في مسند الفردوس، ٣ /٤٥٤، الرقم /٥٤٠٢.

7: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٦ /٥٨، الرقم /٢٩٤٦٢، وأيضًا، ٧/ ١٧٠، الرقم /٣٥٠٥٦، وذكره السيوطي في الدر المنثور في التفسير بالمأثور، ١ /١٥٠.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

हज़रत मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से मरवी है, वोह फ़रमाते हैं: अगर दो शख़्स हों और उन में से एक शख़्स घोड़े पर सवार हो कर अल्लाह की राह में निकले और दूसरा अल्लाह का ज़िक्र करे, तो ज़ाकिर अज्र में दूसरे से अफ़्ज़ल या (फ़रमाया:) आ'ज़म है।

इसे इमाम इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया है।

(8) **عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، قَالَ:** مَا عَمِلَ آدَمِيٌّ عَمَلًا أَنْجٰى لَهُ مِنْ عَذَابِ اللهِ مِنْ ذِكْرِ اللهِ. قَالُوْا: يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمٰنِ، وَلَا الْجِهَادُ فِي سَبِيْلِ اللهِ؟ قَالَ: وَلَا إِلٰى أَنْ يَضْرِبَ بِسَيْفِهِ حَتّٰى يَنْقَطِعَ لِأَنَّ اللهَ يَقُوْلُ فِي كِتَابِهِ: ﴿وَلَذِكْرُ اللهِ أَكْبَرُ﴾ [العنكبوت، 45/29].

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي عَاصِمٍ وَابْنُ عَبْدِ الْبَرِّ.

हज़रत मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि आदमी का कोई अ़मल अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से ज़ियादा अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से नजात देने वाला नहीं। लोगों ने कहा: ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान! क्या अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद भी नहीं? उन्हों ने फ़रमाया: नहीं, अगर्चे वोह अपनी तल्वार इस क़द्र चलाए कि वोह टूट जाए; क्यूँकि अल्लाह तआ़ला अपनी किताब में

8: أخرجه ابن أبي عاصم في الزهد، ١/ ١٨٤، وأبونعيم في حلية الأولياء وطبقات الأصفياء، ١/ ٢٣٥، وابن عبد البر في التمهيد، ٦/ ٥٧، وذكره الذهبي في سير أعلام النبلاء، ١/ ٤٥٥.

इरशाद फ़रमाता है: ﴿وَلَذِكْرُ اللهِ اَكْبَرُ﴾ 'और वाक़ेई अल्लाह का ज़िक्र सब से बड़ा है'।

इसे इमाम इब्ने अबी आ़सिम और इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने रिवायत किया है।

(9) قَالَ عَبْدُ اللهِ: لَوْ اَنَّ رَجُلًا بَاتَ يَحْمِلُ عَلَى الْجِيَادِ فِي سَبِيْلِ اللهِ وَبَاتَ رَجُلٌ يَتْلُوْ كِتَابَ اللهِ لَكَانَ ذَاكِرُ اللهِ اَفْضَلَهُمَا.

رَوَاهُ ابْنُ أَبِي شَيْبَةَ.

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया: अगर (दो अश्ख़ास में से) एक शख़्स अल्लाह की राह में घोड़े पर रात गुज़ारता है, और दूसरा किताबुल्लाह की तिलावत करता है तो दोनों में से अल्लाह का ज़िक्र (या'नी क़ुरआन मजीद की तिलावत) करने वाला अफ़्ज़ल होगा।

इसे इमाम इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया है।

9: أخرجه ابن أبي شيبة في المصنف، ٦/ ١٣٤، الرقم/ ٣٠٠٨٩.

अल मसादिर वल मराजिअ़

1. **القرآن الحكيم**

(٢) تفسير القرآن

2. **اسماعيل حقی**، بروسوی اسکوداری (١٠٦٣-١١٣٧ ه /١٦٥٢-١٧٢٤ء). **روح البيان**. بيروت، لبنان: دار الفكر.
3. **آلوسی**، ابو الفضل شهاب الدين السيد محمود (م١٢٧٠ ه /١٨٥٤ء). **روح المعاني في تفسير القرآن العظيم والسبع المثاني**. بيروت، لبنان: دار الاحياء التراث.
4. **بغوی**، ابو محمد حسين بن مسعود بن محمد الفراء (٤٣٦-٥١٦ ه /١٠٤٤-١١٢٢ء). **معالم التنزيل**. بيروت، لبنان: دارالمعرفه، ١٤٠٧ ه /١٩٨٧ء.
5. **ثعلبی**، ابو اسحاق احمد بن محمد بن ابرهيم (م ٤٢٧ ه). **الكشف والبيان عن تفسير القرآن**. بيروت، لبنان: دار الاحياء التراث العربی، ١٤٢٢ ه /٢٠٠٢ء.
6. **ابن جوزی**، ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد بن علی بن عبيد (٥١٠-٥٧٩ ه / ١١١٦-١٢٠١ء). **زاد المسير فی علم التفسير**. بيروت، لبنان: المكتب الاسلامی، ١٤٠٤ ه /١٩٨٤ء.
7. **رازی**، محمد بن عمر بن حسن بن حسين بن علی تيمی (٥٤٣-٦٠٦ ه / ١١٤٩-١٢١٠ء). **التفسير الكبير**. تهران، ايران: دار الكتب العلميه.
8. **زمخشری**، جار ابو القاسم محمود بن عمر بن محمد خوارزمی (٤٦٧-٥٣٨ ه). **الكشاف عن حقائق غوامض التنزيل**. قهره، مصر، ١٣٧٣ ه /١٩٥٣ء.
9. —. **الكشاف عن حقائق غوامض التنزيل**. بيروت، لبنان: دار إحياء التراث.
10. **ابو سعود**، محمد بن عمادی (٨٩٨-٩٨٢ ه /١٤٩٣-١٥٧٥ء). **إرشاد العقل السليم إلى مزايا القرآن الكريم (تفسير ابي السعود)**. بيروت، لبنان: دار احياء التراث العربی.

11. **سمعانی**، ابو المظفر منصور بن محمد بن عبدالجبار السمعانی (٤٢٦-٤٨٩ ه). **التفسير القرآن**. ر ض، سعودی عرب: دار الوطن، ١٤١٨ ه /١٩٩٧ء.
12. **سيوطی**، جلال الدين ابو الفضل عبد الرحمن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (٨٤٩-٩١١ ه /١٤٤٥-١٥٠٥ء). **الدر المنثور في التفسير بالماثور**. بيروت، لبنان: دار المعرفة.
13. —. **الدر المنثور في التفسير بالماثور**. بيروت، لبنان: دار الفکر، ١٩٩٣ء.
14. **طبری**، ابو جعفر محمد بن جرير بن يزيد بن خالد (٢٢٤-٣١٠ ه /٨٣٩-٩٢٣ء). **جامع البيان في تفسير القرآن**. بيروت، لبنان: دار الفکر، ١٤٠٥ ه.
15. **قرطبی**، ابو عبد محمد بن احمد بن محمد بن يحيیٰ بن مفرج أُموی (م٦٧١ ه). **الجامع لأحكام القرآن**. بيروت، لبنان: دار احياء التراث العربی.
16. —. **الجامع لأحكام القرآن**. قهره، مصر: دار الشعب، ١٣٧٢ ه.
17. **محمد احمد اسماعيل المقدم. تفسير القرآن الکريم.**
18. **نسفی**، عبد بن محمود بن احمد نسفی (م٧١٠ ه). **مدارک التنزيل وحقائق التاويل**. بيروت، لبنان، دار احياء التراث العربی.
19. **واحدی**، ابو الحسن علی بن احمد الواحدی النيشاپوری (م٤٦٨ ه). **الوجيز فی تفسير الکتاب العزيز**. بيروت، لبنان+ دمشق، شام: دار القلم، ١٤١٥ ه.

(٣) الحديث

20. **احمد بن حنبل**، ابو عبد بن محمد (١٦٤-٢٤١ ه /٧٨٠-٨٥٥ء). **المسند**. بيروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ١٣٩٨ ه /١٩٧٨ء.
21. —. **المسند**. بيروت، لبنان: دار الکتب العلميه، ١٩٨٦ء.
22. **ازدی**، ربيع بن حبيب بن عمر بصری. **الجامع الصحيح مسند الامام الربيع بن حبيب**. بيروت، لبنان: دارالحکمة، ١٤١٥ ه.

23. **البانی**، محمد صر الدین (۱۳۳۳-۱۴۲۰ھ /۱۹۱۴-۱۹۹۹ء). **سلسلة الأحاديث الصحيحة**. ر ض، سعودی عرب: مكتبة المعارف للنشر والتوزيع.

24. **بخاری**، ابو عبد محمد بن اسماعیل بن ابرهیم بن مغیره (۱۹۴-۲۵۶ھ /۸۱۰-۸۷۰ء). **الادب المفرد**. بیروت، لبنان: دار البشائر الاسلامیه، ۱۴۰۹ھ /۱۹۸۹ء.

25. —. **الصحيح**. بیروت، لبنان + دمشق، شام: دار القلم، ۱۴۰۱ھ /۱۹۸۱ء.

26. **بزار**، ابو بکر احمد بن عمرو بن عبد الخالق بصری (۲۱۰-۲۹۲ھ /۸۲۵-۹۰۵ء). **المسند**. بیروت، لبنان: ۱۴۰۹ھ.

27. **بغوی**، ابو محمد بن فراء حسین بن مسعود بن محمد (۴۳۶-۵۱۶ھ /۱۰۴۴-۱۱۲۲ء). **شرح السنة**. بیروت، لبنان: المکتب الاسلامی، ۱۴۰۳ھ /۱۹۸۳ء.

28. **بیہقی**، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد بن موسیٰ (۳۸۴-۴۵۸ھ / ۹۹۴-۱۰۶۶ء). **السنن الكبرى**. مدینه منوره، سعودی عرب: مكتبة الدار، ۱۴۱۰ھ / ۱۹۸۹ء.

29. —. **السنن الكبرى**. مدینه منوره، سعودی عرب: مكتبة الدار، ۱۴۱۴ھ / ۱۹۹۴ء.

30. —. **شعب الإيمان**. بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیه، ۱۴۱۰ھ / ۱۹۹۰ء.

31. **ترمذی**، ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ بن سوره بن موسیٰ بن ضحاک سلمی (۲۱۰-۲۷۹ھ / ۸۲۵-۸۹۲ء) . **السنن**. بیروت، لبنان: دار الغرب الاسلامی، ۱۹۹۸ء.

32. —. **السنن**. بیروت، لبنان: دار الاحیاء التراث العربی.

33. **ابن جعد**، ابو الحسن علی بن جعد بن عبید هاشمي (۱۳۳-۲۳۰ھ /۷۵۰-۸۴۵ء). **المسند**. بیروت، لبنان: موسسه در، ۱۴۱۰ھ /۱۹۹۰ء.

34. **حاکم**، ابو عبد محمد بن عبد بن محمد (۳۲۱-۴۰۵ھ /۹۳۳-۱۰۱۴ء). **المستدرک علی الصحیحین**. بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیه، ۱۴۱۱ھ / ۱۹۹۰ء.

35. —. **المستدرک علی الصحیحین**. مکه مکرمه، سعودی عرب: دار الباز.

36. **ابن حبان**، ابو حاتم محمد بن حبان بن احمد بن حبان (۲۷۰-۳۵۴ھ /۸۸۴- ۹۶۵ء). **الصحيح**. بیروت، لبنان: موسسة الرساله، ۱۴۱۴ھ /۱۹۹۳ء.

37. **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (۷۷۳-۸۵۲ ه / ۱۳۷۲-۱۴۴۹ء). **تلخيص الحبير في احاديث الرافعي الكبير**. مدينه منوره، سعودی عرب، ۱۳۸۴ ه /۱۹۶۴ء.

38. —. **الدراية في تخريج احاديث الهداية**. بيروت، لبنان: دار المعرفة.

39. —. **المطالب العالية**. بيروت، لبنان: دار المعرفة، ۱۴۰۷ ه /۱۹۷۸ء.

40. **حسام الدين هندى**، علاء الدين علی متقی (م۹۷۵ ه). **كنز العمال في سنن الاقوال والافعال**. بيروت، لبنان: موسسة الرساله، ۱۳۹۹ ه /۱۹۷۹ء.

41. **حكيم ترمذى**، ابو عبد محمد بن علی بن حسن بن بشير (م۳۲۰ ه). **نوادر الاصول في احاديث الرسول صلىٰ الله عليه وآله وسلم**. بيروت، لبنان: دار الجيل، ۱۹۹۲ء.

42. **ابو داود**، سليمان بن اشعث بن اسحاق بن بشير بن شداد ازدی سبحستانی (۲۰۲-۲۷۵ ه / ۸۱۷-۸۸۹ء). **السنن**. بيروت، لبنان: دار الفكر، ۱۴۱۴ ه /۱۹۹۴ء.

43. **ديلمى**، ابو شجاع شيرويه بن شهردار بن شيرويه بن فناخسرو همذانی (۴۴۵-۵۰۹ ه / ۱۰۵۳-۱۱۱۵ء). **مسند الفردوس**. بيروت، لبنان: دار الكتب العلميه، ۱۹۸۶ء.

44. **ابن رهويه**، ابو يعقوب إسحاق بن إبرهيم بن مخلد بن إبرهيم بن عبد (۱۶۱- ۲۳۷ ه /۷۷۸-۸۵۱ء). **المسند**. مدينه منوره، سعودي عرب: مكتبة الايمان، ۱۴۱۲ ه /۱۹۹۱ء.

45. **رويانى**، ابو بكر محمد بن هارون (م ۳۰۷ ه). **المسند**. قهره، مصر: موسسه قرطبه، ۱۴۱۶ ه.

46. **سيوطى**، جلال الدين ابو الفضل عبد الرحمن بن ابی بكر بن محمد بن ابی بكر بن عثمان (۸۴۹-۹۱۱ ه /۱۴۴۵-۱۵۰۵ء). **جمع الجوامع (المعروف الجامع الكبير)**.

47. —. **جامع الاحاديث**.

48. **ابن ابی شيبه**، ابو بكر عبد بن محمد بن إبرهيم بن عثمان كوفي (۱۵۹-۲۳۵ ه / ۷۷۶-۸۴۹ء). **المصنف**. ر ض، سعودي عرب: مكتبة الرشد، ۱۴۰۹ ه.

49. —. **المصنف**. كراچی، كستان: اداره القرآن والعلوم الاسلاميه.

50. **طبرانی**، ابو القاسم سليمان بن احمد بن ايوب بن مطير اللخمى (٢٦٠-٣٦٠ ه / ٨٧٣-٩٧١ء). **مسند الشاميين**. بيروت، لبنان: موسسة الرساله، ١٤٠٥ ه /١٩٨٤ء.

51. —. **المعجم الأوسط**. ر ض، سعودي عرب: مكتبة المعارف، ١٤٠٥ ه /١٩٨٥ء.

52. —. **المعجم الاوسط**. قهره، مصر: دارالحرمين، ١٤١٥ ه.

53. —. **المعجم الكبير**. قهره، مصر: مكتبه ابن تيميه.

54. —. **المعجم الكبير**. موصل، عراق: مكتبه العلوم والحكم، ١٩٨٣ء.

55. —. **المعجم الكبير**. موصل، عراق: مطبعة الزهراء الحديثه.

56. **طيالسی**، ابوداود سليمان بن داود جارود (١٣٣-٢٠٤ ه /٧٥١-٨١٩ء). **المسند**. بيروت، لبنان: دار المعرفه.

57. **ابن ابی عاصم**، ابوبكر بن عمرو بن ضحّاكبن مخلد شيبانی (٢٠٦-٢٨٧ ه / ٨٢٢-٩٠٠ء). **السنة**. بيروت، لبنان: المكتب الاسلامي، ١٤٠٠ ه.

58. **عبد الرزاق صنعاني**، ابو بكر عبد الرزاق بن همام بن فع صنعاني (١٢٦- ٢١١ ه /٧٤٤-٨٢٦ء). **المصنف**. بيروت، لبنان: المكتب الاسلامى، ١٤٠٣ ه.

59. **ابو عوانه**، يعقوب بن اسحاق بن إبرهيم بن زيد نيشاپوری (٢٣٠-٣١٦ ه / ٨٤٥-٩٢٨ء). **المسند**. بيروت، لبنان: دار المعرفه، ١٩٩٨ء.

60. **قضاعی**، ابو عبد محمد بن سلامه بن جعفر بن علی بن حكمون بن ابرهيم بن محمد بن مسلم (م٤٥٤ ه /١٠٦٢ء). **مسند الشهاب**. بيروت، لبنان: موسسة الرساله، ١٤٠٧ ه / ١٩٨٦ء.

61. **كنانی**، احمد بن ابی بكر بن إسماعيل (٧٦٢-٨٤٠ ه). **مصباح الزجاجة في زوائد ابن ماجه**. بيروت، لبنان، دارالعربية، ١٤٠٣ ه.

62. **ابن ماجه**، ابو عبد ا محمد بن يزيد قزوينی (٢٠٩-٢٧٣ ه /٨٢٤-٨٨٧ء). **السنن**. بيروت، لبنان: دار الكتب العلميه، ١٤١٩ ه /١٩٩٨ء.

63. —. **السنن**. بيروت، لبنان: دار احياء التراث العربی، ١٣٩٥ ه /١٩٧٥ء.

64. **مالک**، ابن انس بن مالک بن ابی عامر بن عمرو بن حارث اصبحی (٩٣-١٧٩ ه / ٧١٢-٧٩٥ء). **الموطا**. بيروت، لبنان: دار احياء التراث العربی، ١٤٠٦ ه /١٩٨٥ء.

65. **ابن مبارک**، ابو عبد الرحمن عبد   بن واضح مروزی (١١٨-١٨١ ه / ٧٣٦-٧٩٨ء). **المسند.** ر ض، سعودي عرب: مكتبة المعارف، ١٤٠٧ ه.

66. **مسلم**، ابو الحسين ابن الحجاج بن مسلم قشيري نيشاپوری (٢٠٦-٢٦١ ه / ٨٢١-٨٧٥ء). **الصحيح.** بيروت، لبنان: دار احياء التراث العربی.

67. **منذری**، ابو محمد عبد العظيم بن عبد القوي بن عبد   بن سلامه بن سعد (٥٨١-٦٥٦ ه / ١١٨٥-١٢٥٨ء). **الترغيب والترهيب.** بيروت، لبنان: دار الكتب العلميه، ١٤١٧ ه.

68. **نسائی**، ابو عبد الرحمن احمد بن شعيب بن علی بن سنان بن بحر بن دينار (٢١٥-٣٠٣ ه / ٨٣٠-٩١٥ء). **السنن.** بيروت، لبنان: دار الكتب العلميه، ١٤١٦ ه /١٩٩٥ء.

69. ـــــ. **السنن.** کراچی،   کستان: قديمی کتب خانه.

70. ـــــ. **السنن الكبرى.** بيروت، لبنان: دار الكتب العلميه، ١٤١١ ه /١٩٩١ء.

71. **ابو نعيم**، احمد بن عبد ا   بن احمد بن اسحاق بن موسیٰ بن مهران اصبهانی (٣٣٦-٤٣٠ ه /٩٤٨-١٠٣٨ء). **مسند الإمام أبي حنيفة.** ر ض، سعودی عرب، مكتبة الكوثر، ١٤١٥ ه.

72. **هيثمی**، نور الدين ابو الحسن علی بن ابی بکر بن سليمان (٧٣٥-٨٠٧ ه / ١٣٣٥-١٤٠٥ء). **مجمع الزوائد ومنبع الفوئد.** قهره، مصر: دار الر ن للتراث + بيروت، لبنان: دار الكتاب العربی، ١٤٠٧ ه /١٩٨٧ء.

73. ـــــ. **موارد الظمآن الی زوائد ابن حبان.** بيروت، لبنان+ دمشق، شام: دارالثقافة العربيه، ١٤١١ ه /١٩٩٠ء.

74. **ابو يعلی**، احمد بن علی بن مثنی بن يحيیٰ بن عيسیٰ بن هلال موصلی تميمی (٢١٠-٣٠٧ ه / ٨٢٥-٩١٩ء). **المسند.** دمشق، شام: دار المامون للتراث، ١٤٠٤ ه / ١٩٨٤ء.

75. ـــــ. **المعجم.** فيصل آ د،   کستان: إدارة العلوم الاثرية، ١٤٠٧ ه.

(۴) شروحات الحديث

76. **ابن بطال**، ابو الحسن علی بن خلف بن عبد الملک القرطبی (م٤٤٩ ھ). **شرح صحیح البخاري**. ر ض، سعودي عرب: مکتبة الرشد، ١٤٢٣ ھ /٢٠٠٣ء.

77. **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (٧٧٣-٨٥٢ ھ / ١٣٧٢-١٤٤٩ء). **فتح الباري شرح صحیح البخاري**. بیروت، لبنان: دار المعرفة + لھور، کستان: دار نشر الکتب الاسلامیه، ١٤٠١ ھ /١٩٨١ء.

78. **ابن رجب حنبلی**، ابو الفرج عبد الرحمن بن احمد (٧٣٦-٧٩٥ ھ). **شرح حدیث لبیک**. مکه مکرمه، سعودی عرب: دار عالم الفوائد، ١٤١٧ ھ.

79. **ابن عبد البر**، ابو عمر یوسف بن عبد بن محمد (٣٦٨-٤٦٣ ھ /٩٧٩-١٠٧١ء). **التمهید**. مغرب (مراکش): وزارت عموم الاوقاف و الشوون الاسلامیه، ١٣٨٧ ھ.

80. **عینی**، بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد بن موسیٰ بن احمد بن حسین بن یوسف بن محمود (٧٦٢-٨٥٥ ھ /١٣٦١-١٤٥١ء). **عمدة القاري شرح علی صحیح البخاري**. بیروت، لبنان: دار الفکر، ١٣٩٩ ھ /١٩٧٩ء + بیروت، لبنان: دار احیاء التراث العربی.

81. **ملا علی قاری**، نور الدین بن سلطان محمد هروی حنفی (م ١٠١٤ ھ /١٦٠٦ء). **مرقة المفاتیح**. بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیه، ١٤٢٢ ھ /٢٠٠١ء.

82. **مناوی**، عبد الروف بن ج العارفین بن علی بن زین العابدین (٩٥٢-١٠٣١ ھ / ١٥٤٥-١٦٢١ء). **التیسیر بشرح الجامع الصغیر**. الر ض، سعودي عرب: مکتبه الامام الشافعی، ١٤٠٨ ھ /١٩٨٨ء.

83. ـــــ. **فیض القدیر شرح الجامع الصغیر**. مصر: مکتبه تجاریه کبریٰ، ١٣٥٦ ھ.

(۵) اسماء الرجال والتراجم

84. **ابن حبان**، ابو حاتم محمد بن حبان بن احمد بن حبان (٢٧٠-٣٥٤ ھ / ٨٨٤-٩٦٥ء). **الثقات**. بیروت، لبنان: دار الفکر، ١٣٩٥ ھ /١٩٧٥ء.

85. **ابن حجر عسقلانی**، احمد بن علی بن محمد بن محمد بن علی بن احمد کنانی (٧٧٣-٨٥٢ ھ / ١٣٧٢-١٤٤٩ء). **لسان المیزان**. بیروت، لبنان: مؤسسة الأعلمی المطبوعات ١٤٠٦ ھ /١٩٨٦ء.

86. **خطیب بغدادی**، ابو بکر احمد بن علی بن بت بن احمد بن مهدی بن بت (٣٩٢-٤٦٣ ھ /١٠٠٢-١٠٧١ء). **المتفق والمفترق**. دمشق، شام: دار القادری للطباعه والنشر والتوزیع، ١٤١٧ ھ /١٩٩٧ء.

87. **ذهبی**، شمس الدین محمد بن احمد بن عثمان (٦٧٣-٧٤٨ ھ /١٢٧٤-١٣٤٨ء). **تاریخ الإسلام ووفیات المشهیر والاعلام**. بیروت، لبنان: دار الکتاب العربی، ١٤٠٧ ھ /١٩٨٧ء.

88. ـــــ. **سیر اعلام النبلاء**. بیروت، لبنان: موسسة الرساله، ١٤١٣ ھ.

89. **ابن عدی**، عبد بن عدی بن عبد بن محمد ابو احمد جرجانی (٢٧٧-٣٦٥ ھ). **الکامل فی ضعفاء الرجال**. بیروت، لبنان: دار الفکر، ١٤٠٩ ھ /١٩٨٨ء.

90. **مزی**، ابو الحجاج یوسف بن زکی عبد الرحمن بن یوسف بن عبد الملک بن یوسف بن علی (٦٥٤-٧٤٢ ھ /١٢٥٦-١٣٤١ء). **تهذیب الکمال**. بیروت، لبنان: موسسة الرساله، ١٤٠٠ ھ /١٩٨٠ء.

91. **ابن ابی یعلی**، ابو الحسین محمد بن محمد بن الحسین بن محمد ابن الفراء حنبلی (م٥٢١ ھ). **طبقات الحنابلة**. بیروت، لبنان: دار المعرفه.

(٢) علوم الحدیث

92. **سیوطی**، جلال الدین ابوالفضل عبد الرحمن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (٨٤٩- ٩١١ ھ /١٤٤٥-١٥٠٥ء). **تدریب الراوی فی شرح تقریب النواوی**. ر ض، سعودی عرب: مکتبه الر ض الحدیثه.

93. ـــ. **مفتاح الجنة**. المدينه المنوره، سعودی عرب: الجامعة الاسلامية، ١٣٩٩ ه.

(L) الفقه

94. **بهوتی**، منصور بن یونس بن ادریس (م١٠٥١ ه). **كشاف القناع عن متن الإقناع**. بيروت، لبنان: دار الفكر، ١٤٠٢ ه.

95. ـــ. **كشاف القناع عن متن الإقناع**. قهره، مصر.

96. **ابن تيميه**، ابو العباس احمد بن عبد الحليم حرانى (٦٦١-٧٢٨ ه /١٢٦٣-١٣٢٨ء). **مجموع الفتاوى**. مكتبه ابن تيميه. بيروت، لبنان: دار الفكر، ١٤٠٥ ه.

97. ـــ. **مجموع الفتاوى**. بيروت، لبنان: دار الفكر، ١٤٠٦ ه.

98. **دسوقی**، محمد بن احمد بن عرفه مالكى (م١٢٣٠ ه /١٨١٥ء). **حاشية الدسوقي على الشرح الكبير**. بيروت، لبنان: دار الفكر.

99. **ابن عابدين شامی**، محمد بن محمد امين بن عمر بن عبدالعزيز دمشقى (١٢٤٤-١٣٠٦ ه). **رد المختار على الدرالمختار**. كوئٹہ ، كستان: مكتبه ماجديه، ١٣٩٩ ه.

100. **على احمد الجرجاوى**. **حكمة التشريع وفلسفته**.

101. **مروزى**، ابو عبد ا محمد بن نصر بن الحجاج (٢٠٢-٢٩٤ ه). **تعظيم قدر الصلة**. مدينه منوره، سعودى عرب: مكتبة الدار، ١٤٠٦ ه.

102. **نفراوى**، احمد بن غنيم بن سالم (م ١١٢٦ ه). **الفواكه الدوانى**. بيروت، لبنان: دار الفكر، ١٤١٥ ه.

103. **ابن نجيم**، زين بن ابرهيم بن محمد بن محمد بن محمد بن بكر حنفى (٩٢٦-٩٧٠ ه). **البحر الرائق شرح كنز الدقائق**. بيروت، لبنان: دار المعرفه.

104. **ابن همام**، كمال الدين محمد بن عبد الواحد سيواسى سكندري (٧٩٠-٨٦١ ه) . **فتح القدير شرح الهداية**. كوئته، كستان: مكتبه رشيديه.

105. **عینی**، بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد بن موسیٰ بن احمد بن حسین بن یوسف بن محمود (٧٦٢-٨٥٥ ھ /١٣٦١-١٤٥١ء). **البنایة شرح الهدایة**. بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیة، ١٤٢٠ ھ /٢٠٠٠ء.

(٨) السیرة

106. **ابن سعد**، ابو عبد محمد (١٦٨-٢٣٠ ھ /٧٨٤-٨٤٥ء). **الطبقات الکبری**. بیروت، لبنان: دار بیروت للطباعه و النشر، ١٣٩٨ ھ /١٩٧٨ء.

107. **سیوطی**، جلال الدین ابو الفضل عبد الرحمن بن ابی بکر بن محمد بن ابی بکر بن عثمان (٨٤٩-٩١١ ھ /١٤٤٥-١٥٠٥ء). **الشمائل الشریفة**. دار طائر العلم للنشر والتوزیع.

(٩) العقائد

108. **ابن تیمیه**، ابو العباس احمد بن عبد الحلیم حرانی (٦٦١-٧٢٨ ھ /١٢٦٣-١٣٢٨ء). **منهاج السنة النبویة**. قهره، مصر: موسسه قرطبه، ١٤٠٦ ھ.

109. **ذهبی**، ابو عبد ا شمس الدین محمد بن احمد بن عثمان (٦٧٣-٧٤٨ ھ /١٢٧٤-١٣٤٨ء). **المنتقی من منهاج الإعتدال**.

(١٠) التصوف والزهد

110. **بیهقي**، ابو بکر احمد بن حسین بن علی بن عبد بن موسیٰ (٣٨٤-٤٥٨ ھ /٩٩٤-١٠٦٦ء). **الزهد الکبیر**. بیروت، لبنان: موسسة الکتب الثقافیة، ١٩٩٦ء.

111. **ابن جوزی**، ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد بن علی بن عبید (۵۱۰-۵۷۹ ھ / ۱۱۱۶-۱۲۰۱ء). **صفة الصفوة**. بیروت، لبنان، دارالکتب العلمیه، ۱۴۰۹ ھ /۱۹۸۹ء.

112. —. **ذم الهوى**.

113. **ابن ابي دنيا**، ابو بکر عبد بن محمد القرشی (۲۰۸-۲۸۱ ھ). **الإشراف في منازل الاشراف**. ر ض، سعودی عرب: مکتبه الرشید، ۱۴۱۱ ھ /۱۹۹۰ء.

114. **ذهبی**، شمس الدین محمد بن احمد بن عثمان (۶۷۳-۷۴۸ ھ /۱۲۷۴-۱۳۴۸ء). **الکبائر**. بیروت، لبنان: دار الندوة الجدیدة.

115. **رفاعی**، احمد الرفاعی الحسینی (۵۱۲-۵۷۸ ھ). **البرهان المويد**. لبنان: دار الکتاب النفیس، ۱۴۰۸ ھ.

116. **طبراني**، ابو القاسم سلیمان بن احمد بن ایوب بن مطیر اللخمی (۲۶۰-۳۶۰ ھ / ۸۷۳-۹۷۱ء). **کتاب الدعاء**. بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیة، ۱۴۲۱ ھ /۲۰۰۱ء.

117. **ابن القيم**، ابو عبد ا محمد بن ابی بکر ایوب زرعی (۶۹۱-۷۵۱ ھ). **مفتاح دار السعادة**. بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیه.

118. **ابو نعيم**، احمد بن عبد ا بن احمد بن اسحاق بن موسیٰ بن مهران اصبهانی (۳۳۶-۴۳۰ ھ / ۹۴۸-۱۰۳۸ء). **حلية الأولياء وطبقات الأصفيائ**. بیروت، لبنان: دار الکتاب العربي، ۱۴۰۰ ھ /۱۹۸۰ء.

119. —. **حلية الأولياء وطبقات الأصفياء**. بیروت، لبنان: دار الکتب العلمیه، ۱۴۲۳ ھ /۲۰۰۲ء.

(۱۱) الآداب والاخلاق

120. **ابن حاج**، ابو عبد محمد بن محمد بن محمد عبدری فاسی مالکی (م۷۳۷ ھ). **المدخل**. بیروت، لبنان: دار الفکر، ۱۴۰۱ ھ /۱۹۸۱ء.

121. **ابن رجب حنبلی**، ابو الفرج عبد الرحمن بن احمد (٧٣٦-٧٩٥ ه). **جامع العلوم والحكم في شرح خمسين حديثا من جوامع الكلم**. بيروت، لبنان: دارالمعرفه، ١٤٠٨ ه.

122. **ابن شهين**، ابو حفص عمر بن احمد بن عثمان (٢٩٧-٣٨٥ ه). **الترغيب فى فضائل الأعمال وثواب ذلک**. بيروت، لبنان: دار الكتب العلميه، ١٤٢٤ ه /٢٠٠٤ء.

123. **ابن عبد البر**، ابو عمر يوسف بن عبد بن محمد (٣٦٨-٤٦٣ ه /٩٧٩-١٠٧١ء). **جامع بيان العلم وفضله**. بيروت، لبنان: دار الكتب العلميه، ١٣٩٨ ه /١٩٧٨ء.

124. **غزالی**، ابو حامد محمد بن محمد (٤٥٠-٥٠٥ ه). **إحياء علوم الدين**. بيروت، لبنان: دار المعرفة.

125. **ابن قيم**، ابوعبدا محمد بن ابى بكر ايوب جوزيه (٦٩١-٧٥١ ه / ١٢٩٢-١٣٥٠ء). **الوابل الصيب**. بيروت، لبنان: دار الكتاب العربى، ١٤٠٥ ه /١٩٨٥ء.

126. **مقدسي**، شمس الدين، ابو عبد ا محمد بن مفلح بن محمد بن مفرج دمشقى (٧٦٣ ه). **الآداب الشرعية**. بيروت، لبنان: موسسة الرسالة، ١٤١٧ ه /١٩٩٦ء.

(١٢) التاريخ والملل

127. **ابن حزم**، على بن احمد بن سعيد اندلسى (٣٨٤-٤٥٦ ه /٩٩٤-١٠٦٤ء). **الفصل في الملل والنحل**. قهره، مصر: مكتبة الخانجى.

128. **خطيب بغدادي**، ابو بكر احمد بن على بن بت بن احمد بن مهدى بن بت (٣٩٢-٤٦٣ ه /١٠٠٢-١٠٧١ء). **تاريخ بغداد**. بيروت، لبنان: دار الكتب العلميه.

129. **ابن عساكر**، ابو قاسم على بن حسن بن هبة بن عبد بن حسين دمشقى (٤٩٩-٥٧١ ه /١١٠٥-١١٧٦ء). **تاريخ مدينة دمشق**. بيروت، لبنان: دار الفكر، ١٩٩٥ء.

130. ـــــ. **تاريخ دمشق الكبير**. بيروت، لبنان: دار الفكر، ١٩٩٥ء.

131. **قزوينى**، عبدالكريم بن محمد الرافعى. **التدوين في اخبار قزوين**. بيروت، لبنان: دار الكتب العلميه، ١٩٨٧ء.

(١٣) الادب واللغة

132. **ازهري**، ابو منصور محمد بن احمد (٢٨٢-٣٧٠ ه). **تهذيب اللغة**. الدار المصرية للتاليف والترجمة.

133. **حاجي خليفه**، مصطفى بن عبد ا حنفى (١٠١٧-١٠٦٧ ه). **كشف الظنون**. بغداد، عراق: المكتبة المثنى، ١٩٧٤ء.

134. **جرجاني**، على بن محمد بن على، سيد شريف (٧٤٠-٨١٦ ه). **التعريفات**. بيروت، لبنان: عالم الكتب، ١٤١٦ ه /١٩٩٦ء.

135. **الدينورى**، ابو بكر احمد بن مروان بن محمد القاضى المالكى (م٣٣٣ ه). **المجالسة وجوهر العلم**. بيروت، لبنان: دار ابن حزم، ١٤١٩ ه.

136. **راغب اصفهانى**، ابو قاسم حسين بن محمد بن مفضل (م٥٠٢ ه /١١٠٨ء). **محاضرات الادباء ومحاورات الشعراء والبلغاء**. بيروت، لبنان: دار القلم، ١٤٢٠ ه / ١٩٩٩ء.

137. ــــ. **المفردات في غريب القرآن**. بيروت، لبنان: دار المعرفه.

138. **ابن فارس**، ابو الحسين احمد بن فارس بن زكر قزوينى رازى (م٣٩٥ ه). **معجم مقاييس اللغة**. دمشق، شام: اتحاد الكتاب العرب، ١٤٢٣ ه /٢٠٠٢ء.

139. **قنوجى**، ابو طيب صديق بن حسن القنوجى (١٢٤٨-١٣٠٧ ه). **ابجد العلوم الوشي المرقوم في بيان احوال العلوم**. بيروت، لبنان: دار الكتب العلمية، ١٩٧٨ء.

140. **ابن منظور**، محمد بن مكرم بن على بن احمد بن ابى قاسم بن حبقه افريقي (٦٣٠-٧١١ ه / ١٢٣٢-١٣١١ء). **لسان العرب**. بيروت، لبنان: دار صادر.

(۱۴) انگریزی کتب

141. John Laffin, Holy War: Islam Fights (London, Graffton Books, 1988).

142. Karen Armstrong, Holy War: The Crusades and Their Impact on Today's World (New York: Anchor Books, 2001).
143. Reuven Firestone, Jihad: The Origin of Holy War in Islam (New York :Oxford University Press, 1999).
144. Suhas Majumdar, JIHAD: The Islamic Doctrine of Permanent War (New Delhi: The Voice of India, 1994).